॥ श्री हरिः ॥

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

तिथि-पर्व-निर्णय

विक्रम संवत् २०३९, श्री शालिवाहन शाके १९०४, ईसवीय सन् १९८२-८३

राजा
शुक्र

मंत्री
भौम

॥ युवानाम संवत्सर ॥

गत कलि ५०८३, बंगला सन् १३८८-८९, हिजरी सन् १४०२-१४०३, फसली सन् १३८९-९०

गुरु (तारा) कार्तिक कृष्ण १ मंगलवार २-११-८२ को पश्चिम में अस्त होंगे।
कार्तिक शुक्ल ८ बुधवार २४-११-८२ को पूर्व में उदय होंगे।

शुक्र (तारा) अधिक आश्विन कृष्ण ८ रविवार १०-१०-८२ को पूर्व में अस्त होंगे।
मार्गशीर्ष कृष्ण २ वृहस्पतिवार २-१२-८२ को पश्चिम में उदय होंगे।

शनि— इस वर्ष अधिक आश्विन शुक्ल ४ मंगलवार २१-९-८२ तक कन्या राशि पर रहेंगे, पश्चात् तुला राशि के हो जायेंगे।

विवाह मुहूर्त— वैशाख कृष्ण, वैशाख शुक्ल, जेष्ठ कृष्ण, ज्येष्ठ शुक्ल, आषाढ़ कृष्ण, आषाढ़ शुक्ल, मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष में निर्णीत लग्न है।

संपादक :

पं० श्री लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, एडवोकेट

प्रकाशक :

श्री सारस्वत सभा, काशी

१८६० की २१वीं धारा के अन्तर्गत पंजीकृत संख्या २५८/१९४९-५०

कार्यालय :

श्री सारस्वत सभा भवन, सी० के० ९/२,९/२२ मणिकर्णिका तीर्थ, वाराणसी-२२१००१

बाहर से पत्रिका मंगानेवाले महानुभावों को ५० पैसे का डाक टिकट भेजना आवश्यक है।

निःशुल्क

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

❀ प्राक्कथन ❀

बालार्कमण्डलाभासां शीतांशुकिरणोज्ज्वलाम् ।
श्वेत-हंस-समासीनां वन्दे नील सरस्वतीम् ॥

सर्वज्ञानदायिनी, सत्-पथ-निर्दर्शिनी, आद्याशक्ति, पराम्बा माँ सरस्वती की महान कृपामय प्रेरणा से हम पुनः इस वर्ष भी तिथि-पर्व-निर्णय रूपी विनयाञ्जलि, इसके प्रेमी महानुभावों के कर-कमलों में अर्पित कर रहे हैं। पत्रिका के अट्ठाइसवें अंक के प्रकाशन पर हम सत्-चित्-आनन्ददायिनी माँ वीणापाणि से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारी पत्रिका के स्नेहिल पाठकों को ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे मानवता, दैवी और शान्तिदायी तत्त्वों से आप्लावित हो उठे तथा नव-वर्ष का पल-प्रतिपल जन-जन के जीवन में सौख्य और समृद्धि बिखेर दे।

श्रद्धाञ्जलि—

महाकाल के कृपाशील हाथों ने विगत वर्ष में सारस्वत समाज के प्रतिष्ठित स्व० डा० रामजी जैतली, एम० ए० एस०, स्व० विनोद कुमार शर्मा (छिप्पी), स्व० पं० हरिहर नाथ शर्मा (लखनऊ), स्व० श्री सत्यपाल कालिया (इलाहाबाद), स्व० श्री रमेश कृष्ण शर्मा (प्रभारी अधिकारी हापुड़), एवम् सनातन धर्म मार्तण्ड, धर्म सम्राट, भारतीय संस्कृति के प्राण, पूज्यपाद अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मीभूत प्रातःस्मरणीय श्री १००८ स्वामी करपात्री जी महाराज, को हमसे अलग कर दिया, हम सब अनाथ हो गये। हम बाबा विश्वनाथ से इन दिवंगतों की आत्मा के लिये सायुज्य की कामना करते हैं तथा अपनी श्रद्धा के सुमन उनके श्रीचरणों में समर्पित करते हैं।

वस्तु-भण्डार—

जैसा कि हम अनेक बार निवेदन कर चुके हैं कि सभा का वस्तु-भंडार अत्यंत सीमित अवस्था में है। काशी जैसे विशाल नगर में एक पर्याप्त वस्तु-भंडार होना नितांत आवश्यक है। हम समाज की सेवा चाहकर भी इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं, क्योंकि इस कार्य में प्रचुर धनराशि तथा युवा पीढ़ी का सोत्साह सहयोग अपेक्षित है और इसके लिये हम समाज के सभी सदस्यों से सादर अनुरोध करते हैं कि इस क्षेत्र में किया हुआ छोटा-सा सहयोग भी हमें अपार प्रेरणा और संतोष देगा।

श्री भारती पुस्तकालय एवं वाचनालय—

सभा भवन में अपना एक पुस्तकालय तथा वाचनालय भी है जो जीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ है। बाढ़ के पानी के कारण पुस्तकें, बहुत-सी पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो गई हैं, उनका शीघ्र ही नवीनीकरण किया जायेगा।

सरस्वती वेद विद्यालय—

विद्यालय भी प्रगति पर नहीं है। हम वैदिक एवं याज्ञिक विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि समाज के बालकों को कर्मकाण्ड का अध्ययन करायें, नहीं तो कुछ दिनों के बाद समाज से कर्मकाण्ड लुप्त हो जायेगा और किसी के यहाँ एक भी बालक कर्मकाण्ड कराने लायक नहीं रहेगा। वृद्धों के जाने के बाद प्राचीन परम्परा नष्ट हो जायेगी।

व्यायामशाला—

सभा के भवन में हनुमान जी की अति प्राचीन मूर्ति स्थापित है जिसका कार्य बड़े ही सुचारु रूप से चल रहा है। व्यायामशाला प्रातः ५ बजे खुल जाता है। भगवान का पूजन-अर्चन नित्य विधिवत् होता है। व्यायामशाला में प्राचीन-

नवीन शैली की जोड़ी, गदा, मुद्‌गल, नाल-डम्मल आदि उपलब्ध है। चालीस-पचास व्यक्ति तथा बालकों का समूह नित्य कसरत करता है। गंगा किनारे व्यायामशालाओं का होना काशी की प्राचीन परम्परा रही है। स्नान-ध्यान के बाद थोड़ा शारीरिक व्यायाम सभी आयु के व्यक्तियों के लिये उपयोगी होता है। वर्ष में तीन बार श्री हनुमान जी का उत्सव–श्री हनुमत जन्म महोत्सव, मार्गशीर्ष एकादशी, नागपंचमी को होता है, जिसमें सैकड़ों व्यक्ति दर्शन के लिये उपस्थित होते हैं और प्रसाद वितरण होता है। हमारा अनुरोध है कि इस कार्य में समाज के सदस्य एवं युवा वर्ग आगे आकर व्यायामशाला में सहयोग प्रदान करें।

पत्रिका प्रकाशन :—

आज हम यह अट्ठाइसवां अंक आपके कर-कमलों में समर्पित कर गौरव का अनुभव कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास कितना संघर्षमय है और महर्घता के इस युग में हमें, कैसी आर्थिक कठिनाई का सामना कर इस लोकप्रिय पत्रिका को अपनी साज-सज्जा के साथ आप तक पहुँचाना पड़ता है, इसका आप स्वयम् अनुभव कर सकते हैं।

तिथि-पर्व-निर्णय पत्रिका, सभा का प्राण है। इसके द्वारा भारतवर्ष ही नहीं विदेश में भी जहाँ-जहाँ सारस्वत खत्री समाज के लोग निवास करते हैं, घर-घर में पत्रिका की मांग बढ़ती जा रही है। पत्रिका द्वारा सारा सारस्वत समाज का प्रचार हो रहा है। पत्रिका का विशेष महत्व इसलिए है कि जितने पञ्चाङ्ग भारतवर्ष से निकलते हैं, सबमें आपस में कुछ न कुछ मतभेद रहता है। मगर इस पत्रिका का निर्णय सर्वमान्य होता है और बड़े-बड़े विद्वान भी इसकी मांग करते हैं। पत्रिका की देखा-देखी अन्य नगरों में भी–दिल्ली, मेरठ, आगरा, कानपुर, कलकत्ता, वाराणसी आदि से पत्रिका निकाली जा रही है। पर उसमें पर्व-त्योहार ही छपता है, पूर्ण रूप से जैसा कि इस पत्रिका में अंग्रेजी तारीख, वार, तिथि, घ० मि०, नक्षत्र, घ० मि०, योग, घ० मि०, कर्ण, घ० मि०, चन्द्र राशि, घ० मि०, सूर्य उदय, सूर्य अस्त तक दिया जाता है, यह अभी तक किसी संस्था ने नहीं निकाला है। पत्रिका का प्रकाशन कई हजार में होता है। इसे विक्रय नहीं किया जाता। इसका वितरण सभी वर्गों के लोगों में निःशुल्क किया जाता है। यदि आपका हमें सहयोग प्राप्त होता रहा तो हम उत्तरोत्तर आपकी सेवा करने में अपने को सक्षम पावेंगे।

धन्यवाद प्रकाश—

हम पं० बालकृष्ण जी कपूरिया के विशेष आभारी हैं, जो सभा के माननीय सभापति होने के बावजूद सभा में हर छोटे-बड़े कार्य को सहर्ष निःस्वार्थ भाव से सर्वदा करने को कटिबद्ध रहते हैं। माँ इन्हें शतायु करें। वयोवृद्ध, डा० श्री शिवनारायण जी झिंगन ने अपने प्रधान मन्त्रित्व काल में चार वर्षों तक जो कार्य किया वह सराहनीय है। बाबा इनको आरोग्यता प्रदान करें। पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं डा० राम रंग शर्मा, एम० ए०, पं० अमरनाथ जैतली, याज्ञिक, पं० प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए०, पं० रेशम लाल झिंगन एवं श्री लक्ष्मण दास कपूर (बम्बई), श्री कार्त्तिक प्रसाद खन्ना (कलकत्ता), ज्योतिर्विद पं० विश्वनाथ बाजपेई श्री वृन्दावन कपूर (वाराणसी), के भी हम आभारी हैं।

हम अपने आजीवन सदस्यों एवं इस पत्रिका के विज्ञापनदाता बन्धुओं के भी आभारी हैं जिनके विशेष सहयोग से ही पत्रिका का सम्पादन होता है। हम सभा की ओर से इन्हें धन्यवाद देते हैं। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि नूतन वर्ष सभी के लिये मंगलमय हो। पत्रिका प्रकाशन में जिन आर्ष ग्रन्थों और पञ्चाङ्गों से हमने कुछ ग्रहण किया है, उनके प्रति भी आभार प्रकट करते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥

लक्ष्मी नारायण भारद्वाज एडवोकेट
प्रधानमंत्री
श्री सारस्वत सभा, काशी

श्री सारस्वत सभा, काशी

के

३५वें वार्षिक अधिवेशन का विवरण

श्री सारस्वत सभा, काशी, का पैंतीसवां वार्षिकोत्सव 'आज' के वरिष्ठ सम्पादक, माननीय, "सारस्वत रत्न" श्री चन्द्र कुमार जी त्रिक्खा की अध्यक्षता में सभा भवन में सम्पन्न हुआ। इस समारोह पर मुख्य अतिथि का पद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सहायक रजिस्ट्रार, माननीय, 'जातिरत्न' पं० जगत नारायण जी शर्मा मोहले, एम० ए०, बी० काम०, आई० सी० डब्लू० ए० (आई० एन० टी०), ज्योतिष रत्नाकर, विशारद, ने सुशोभित किया। कार्यक्रम का आरंभ "याज्ञिक मार्तण्ड" पं० श्रीनाथ जी शास्त्री 'शारद' के निर्देशन में वैदिक विद्वानों के मंत्रोच्चारण के साथ आद्याशक्ति, पराम्बा मां भारती का पूजन-अर्चन, सभा के प्रधान मंत्री, डा० पं० शिवनारायण जी झिंगन के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सत्संग परिवार के बालकों एवं श्री नन्दन जी गायनाचार्य द्वारा प्रस्तुत संगीतात्मक मंगलाचरण हुआ, जो बड़ा ही आकर्षक था। स्वागताध्यक्ष, "जातिरत्न" डा० श्री रजनीकान्त जी दत्ता ने सभापति एवं मुख्य अतिथि तथा सभा के भूतपूर्व सभापतियों को सभा का कर्णधार बताया जिनके आशीर्वाद से ही सभा का संचालन हो रहा है।

आपने इन लोगों के जीवन-काल पर वृहत् प्रकाश डाला, सारस्वत समाज के संगठन पर विशेष जोर दिया तथा नवयुवकों को वृद्धों का आदर करने को कहा तथा सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर राष्ट्रकर्मी पं० श्री मदन लाल मिश्र कालिया एवं पं० श्री राम मोहन जी शास्त्री, बी० ए०, का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दनीय विद्वानों को मान-पत्र श्री पं० चन्द्र कुमार जी त्रिक्खा ने दिया। अभिनन्दन के लिये सभा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री कालिया जी ने कहा कि जब मैं सभापति था, उस वक्त सभा का भवन एवं सभा में कोष नहीं था। पत्रिका भी बहुत छोटी निकलती थी। आज सभा ने बहुत कुछ प्रगति की है। सभा के पास सभा भवन है एवं कोष की व्यवस्था है तथा पत्रिका भी वृहत रूप से निकल रही है, जिसका वितरण देश-विदेश में निःशुल्क किया जा रहा है। सभा का कार्य अत्यन्त सराहनीय है। हमारा पूर्ण आशीर्वाद है कि यह सभा पुष्पित और पल्लवित होती रहे। श्री शास्त्री चरण ने भी सारस्वत सभा के नवयुवकों द्वारा वेद-शास्त्र का पठन एवं सन्ध्या-वन्दन पर विशेष जोर दिया और कहा कि जब तक बालक माता-पिता-गुरु, बड़ों का समादर नहीं करेंगे, आगे उन्नति नहीं कर सकते। यह उपनिषद की शिक्षा है, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव, प्रातः उठकर बालकों को अपने माता-पिता, गुरु, अतिथि, सबका चरण-स्पर्श कर नित्य नमस्कार करना चाहिये। इससे उनको नित्य आशीर्वाद मिलता रहेगा और वह बालक, नवयुवक आगे बढ़ता जायगा। बड़ों को नमस्कार करने से ४ अमूल्य रत्न प्राप्त होते हैं—आयु, विद्या, यश, बल-ऐसा मनुस्मृति का वचन है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेबिनः।
चत्वारिस्तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥ मनु० ॥

श्री सारस्वत सभा काशी का ३५वाँ वार्षिकोत्सव
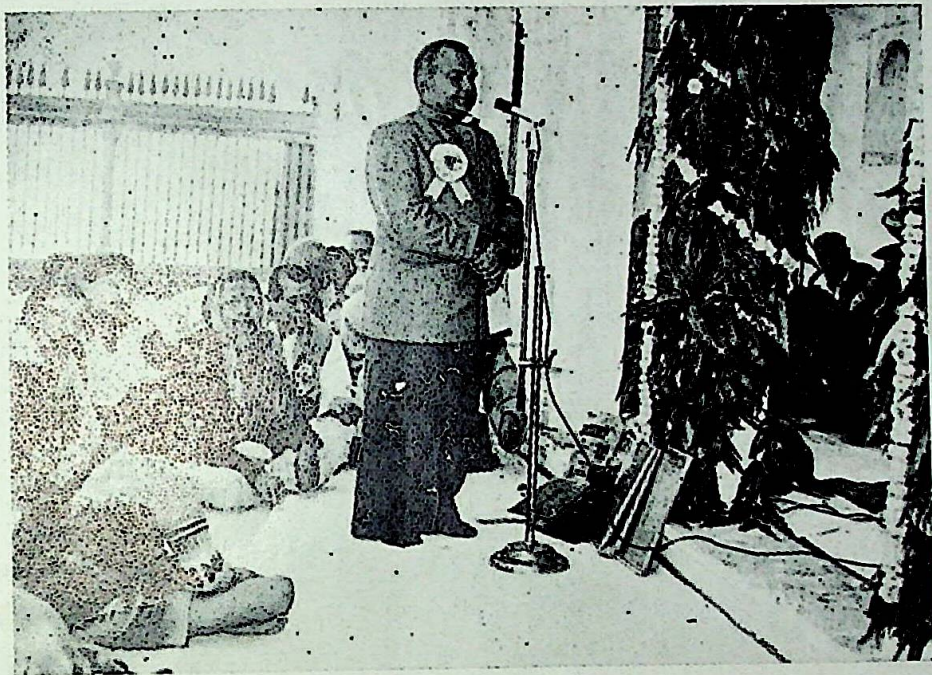
"जातिरत्न' नगर के कुशल चिकित्सक स्वागताध्यक्ष डा० राजनी कान्त दत्ता स्वागत भाषण करते हुए।
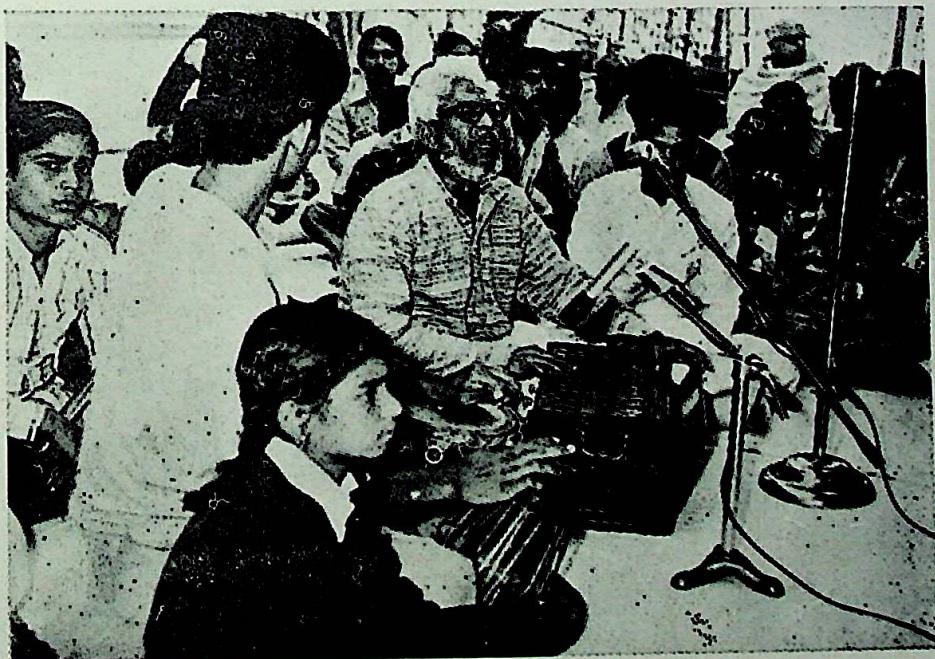
सत्संग परिवार के बालकों के साथ काशी के विशिष्ट कलाकार श्री नन्दनजी गायनाचार्य मंगलाचरण करते हुए।
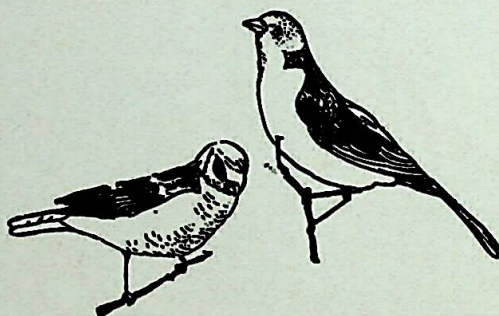
इसलिये हमारा अनुरोध है कि आप बड़ों का आदर करना सीखें और सन्ध्या-वन्दन नित्य करें। आपने मेरा जो अभिनन्दन किया है, उसके लिये आभार प्रकट करता हूँ, और बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सभी बालक वेदाध्ययन में अग्रसर हों। इसके बाद सभा के प्रधान मंत्री, डा० पं० शिवनारायण झिंगन ने सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और उसके कार्यों व लक्ष्यों पर प्रकाश डाला। इसके अलावा डा० श्री राम रंग शर्मा, डा० श्री रजनी कान्त दत्ता, सभा के संरक्षक, पं० रामलाल शास्त्री, श्री कैलाश नाथ जैतली, वैद्य, श्री प्रेमनाथ डोगरा, श्री पुरुषोत्तम दास उवेराव एवं श्री लक्ष्मीनारामण भारद्वाज, एडवोकेट, ने भी विचार व्यक्त किये और सारगर्भित भाषण किये। सभा के संरक्षक, संत शिरोमणि छोटे जी महाराज ने सभा के कार्यों की सराहना की और सबको प्रेम से कार्य करने की सलाह दी। समाज के युवकों द्वारा वेद तथा संस्कृति की उपेक्षा पर खेद व्यक्त किया।

सभा के सभापति, पं० बालकृष्ण कपूरिया ने कहा कि सभा, सारस्वत समाज के सर्वांगीण विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील है और अपने समाज की प्रगति में युवकों के सहयोग की अपेक्षा करती है। सभा-भवन में पुस्तकालय, वाचनालय, पाठशाला, व्यायामशाला आदि है। इस वर्ष चुनाव में सभी समितियों के संयोजक, नवयुवक निर्वाचित हुए हैं। इनके साथ आप लोग कन्धा से कन्धा लगाकर अगर खड़े हो जायं, तो सभा और समाज आगे बढ़ सकता है। केवल दुराग्रह, असत्य-भाषण, बड़ों को अपमानित करना, आपस में निंदा-स्तुति, भाई-भाई में राग-द्वेष, गृहकलह कर कोई भी किसी संस्था को नहीं चला सकता। अतः हमारा सबसे अनुरोध है कि आप सब एक होकर सारस्वत समाज का उत्थान करें। श्री सारस्वत सभा, काशी, की स्थापना हुए ३५ वर्ष हो रहे हैं। आप लोगों के ही सहयोग से आज यह सभा काशी में ही नहीं, भारतवर्ष में सर्वमान्य होती जा रही है।

वयोवृद्ध डा० श्री शिवनारायण जी झिंगन के कार्य की सराहना करते हैं जिन्होंने चार वर्ष के प्रधान मंत्रित्वकाल में अथक परिश्रम किया है। इसके लिये धन्यवाद देते हैं। सभा के कर्मठ सदस्य, पं० श्री प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए०, को भी धन्यवाद देते हैं जिन्होंने अभिनन्दन पत्र का कार्य सुचारु रूप से किया।

आप सबने सभा के वार्षिकोत्सव में पधार कर जो अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया है, इसके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं और धन्यवाद देते हैं। आशा करते हैं कि आप सबका सहयोग ऐसे ही प्राप्त होता रहेगा।

कार्यक्रम का संचालन श्री लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, एडवोकेट, ने किया। श्री हनुमत् दर्शन एवं प्रसाद वितरण के साथ अधिवेशन का कार्य समाप्त हुआ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

●

महामान्य, राष्ट्रकर्मी, वृद्धमत, गांधीवादी

श्री मान्य पं० मदनलाल जी मिश्र कालिया

के करकमलों में

श्री सारस्वत सभा, काशी

का

श्रद्धोपहार

राष्ट्र-सेवक !

संसार में ऐसे पुरुषरत्न बिरले होते हैं जो निःस्वार्थ और निरपेक्ष हो राष्ट्र को अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दें। आपका ऐसा ही तपा हुआ जीवन रहा है। महात्मा गांधी का पूर्ण निष्ठा से सहयोग तथा गांधीवाद पर आप की परम आस्था आपके जीवन की विशेषता रही है। ऐसे समय में गांधीजी का साथ निष्ठापूर्वक देना जब कि बंगाल में उनका पलड़ा उन्नीस था, आपके जीवन का ही कार्य था। आपने अनेक कष्टों को झेलते हुए, बंगाल के सुदूर गाँवों से खादी का संग्रह कर, उसे कलकत्ते में बेचने की उचित व्यवस्था कर, गांधीजी के स्वदेशी आन्दोलन की नींव को अंग्रेजी माल के गढ़, कलकत्ता में सुदृढ़ किया।

कर्मठ दृढ़ पुरुष !

आपकी कर्मठता से अनुप्राणित हो नेताजी ने सन् १९२८ की कलकत्ता कांग्रेस में आपको सभी अतिथियों की भोजन-व्यवस्था का भार सौंपा था। आपका सक्रिय सहयोग कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में रहा। नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना, विदेशी वस्त्रों की होली, मद्य की दुकानों पर धरना इत्यादि में अग्रगण्य रहकर आपने जिस दृढ़ता का परिचय दिया, वह अद्वितीय था। फलस्वरूप, सविनय अवज्ञा आन्दोलनों के दुर्गम पथ ने आपको तत्कालीन ब्रिटिश शासन का कोप-भाजन बना, अनेक बार जेल-यातनायें प्रदान की जिन्हें आपने सहर्ष झेला, पर राष्ट्रपथ से आप विरत न हुए।

समाज-सेवा के मूर्तिमन्त स्वरूप !

राष्ट्र की सेवा के साथ ही साथ आपने समाज की भी सेवा से अपने को विमुख नहीं किया। कलकत्ते की सारस्वत क्षत्री सभा के मंत्री के रूप में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आपका संघर्ष सारस्वत क्षत्री युवकों के लिए दीप-स्तम्भ बन गया और समाजगत अनेक कुरीतियाँ दूर होती रहीं। सन् १९६० में आप काशी आये। राष्ट्र की स्वातंत्र्योत्तर गतिविधियां गांधीजी के दिखाये मार्ग से दूर हट रही थीं। आपका सहज, निःस्वार्थ मन इस धारा में बहने को प्रस्तुत न था। यह आपकी दृढ़ता ही थी कि बहुत कुछ हो सकने की पूर्ण क्षमता होते हुये भी आपने, अपने सिद्धान्तों पर दृढ़निष्ठ रह, राजनीति से संन्यास ले, अपना समय समाज-सेवा को अर्पित कर दिया। आपके इन गुणों से अनुप्राणित इस सभा ने आपको अपना सभापति चुना जबकि वह बाल-तरु के समान थी। आपकी दृढ़ निष्ठा और कर्मठता से यत्नपूर्वक सींचा गया वह लघु-वृक्ष आज विशाल कल्पवृक्ष हो आपको अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित कर गौरवान्वित हो रहा है।
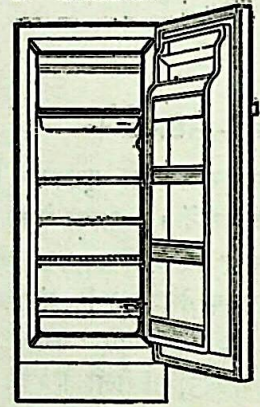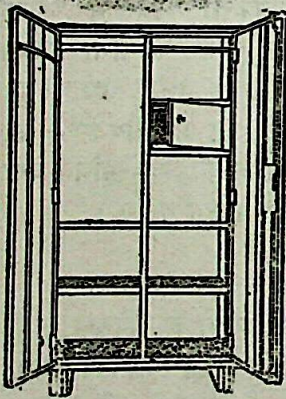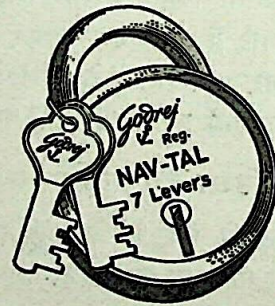
वयोवृद्ध समाज-रत्न !

बयासी वसन्त-दृष्ट आपकी यह काया हमें भीष्म पितामह की याद दिलाती है। इस उमर में भी आप स्नान-सन्ध्या आह्निक कृत्यों में संलग्न रहते हैं। आपका विशाल देदीप्यमान भाल शरदिन्दुवत् इसी तथ्य को घोषित करता है। आज भी भारत सरकार आपका समादर करती है। धन्य हैं आपके सद्गुण। आपके इन्हीं पुण्यों के परिणामस्वरूप आज भूतभावन, कृपाअनुग्रहमूर्ति श्री गौरी केदारेश्वर ने आपको अपने क्रोड़ में स्थापित कर लिया है। काशी की यह सारस्वत सभा आपका अभिनन्दन कर आपके आशीर्वाद की प्रार्थी है। आप अपने शुभाशीर्वाद द्वारा इसकी श्रीवृद्धि करें।

दिनांक : २४ - १ - १९८२
श्री सारस्वत सभा भवन
६/२ मणिकर्णिका तीर्थ, काशी

हम आपके अभिन्न-हृदय
श्री सारस्वत सभा, काशी
के सदस्यगण

★

भारतीय संस्कृति एवं शिष्टाचार के मूर्तिमान आदर्श, परमादरणीय आचार्य-प्रवर,

धर्मधुरीण पं० राममोहन जी शास्त्री, बी० ए०,

मन्त्री, श्री मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालय,

महोदय के कर-कमलों में

भाव प्रसूनों का शब्दहार

शुभाभिनन्दन
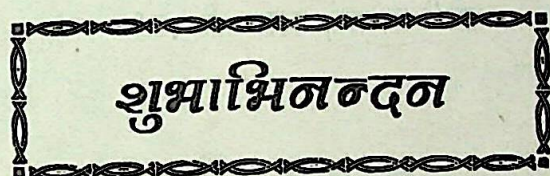
आनन्दवन के गन्धराज !

भूत-भावन विश्वेश्वर की परमानन्दमयी काशी के आनन्दवन में सनातन विद्वत् जंगम तरुओं की अविछिन्न परम्परा रही है। इनकी पुष्पित वैखरी से भूमण्डल का दिगदिगन्त सर्वदा से सुरभित होता रहा है। इसी पावनपुरी में माता भारती के सारस्वत कुल में तपः-पूत महर्षि के घर में आपका जन्म और आर्य परम्परा में जीवन का अभ्युदय, विद्या और धर्म के प्रति आपकी अक्षुण्ण आस्था एवं सेवाभाव, सहज नम्रता, सौशील्य आदि सद्‌गुणों का समादर कर यह सारस्वत सभा अपार हर्ष का अनुभव करती है।

शिक्षाशास्त्री !

ऋषिकल्प, पण्डितराज, भागवतोत्तम, विद्वन्मूर्द्धन्य, पिता स्व० पं० मदनमोहन जी शास्त्री के पादपद्मों का अनुसरण कर आपने अपने जीवन का पावन लक्ष्य, ब्राह्मण के सहज धर्म शिक्षादान को अपना लिया है। इस दिशा में ऋषि-कुल ब्रह्मचर्याश्रम, चुरु, जिसके आप आचार्य हैं, ज्वलंत उदाहरण है। यह आपकी ही सद्प्रेरणा का सुफल है कि इसमें आज भी ब्रह्मचारीगण त्रिकाल संध्योपासन, वेदादिशास्त्रों का सम्यक् अध्ययन करते हैं। यह ब्रह्मचर्याश्रम श्री जयदयाल जी गोयनका (गीता प्रेस के संस्थापक) की सुकीर्ति स्वरूप है। श्री मारवाड़ी महाविद्यालय, काशी, के अवैतनिक मंत्री, श्री गोयनका महाविद्यालय के भूतपूर्व मन्त्री, आर्य महिला महाविद्यालय के सदस्य, सनातन धर्म महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के सचिव के रूप में आपका सहयोग श्लाघ्य है।

आचार्य-प्रवर !

आपकी मनोमुग्धकारी, श्रीमद्भागवत की कर्णप्रिय, पुण्यसलिला वैखरी जब प्रवाहित होकर श्रोता-वर्ग को आह्लाद-सागर में निमग्न कर देती है, तब आप श्री शुक के मूर्तिमन्त-स्वरूप प्रतीत होते हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो ज्ञान-गंगा की तरंगों का मर्मर रव मुखरित हो श्रोताओं के मन और प्राणों को स्पंदित कर दिव्यातिदिव्य लोकों में श्रेष्ठतम गोलोक धाम में, प्रतिष्ठित कर रहा है।

श्री सारस्वत सभा काशी का ३५वाँ वार्षिकोत्सव

[सभ]ा के सभापति पण्डित बालकृष्ण कपूरिया 'राजपुरोहित'
अभिनन्दन-पत्र पढ़ते हुए।

सभा के भूतपूर्व प्रधान मंत्री डा० पं० शिव नारायण झिंगन
अभिनन्दन-पत्र पढ़ते हुए।

दया एवं करुणा के मूर्तिमान् स्वरूप !

आपका भावविह्वल सौजन्य और विनय मिलनेवाले के मन को मोहित कर लेता है। लोक-व्यवहार में अहंकाररहित होना आपका एक विशेष गुण है। यह सारस्वत सभा का परम सौभाग्य है कि वह विगत दशाब्दि पर्यन्त आपके सभापतित्व में पुष्पित और पल्लवित होती रही है।

ब्राह्मण-श्रेष्ठ !

यह काशी की सारस्वत सभा आपका सादर अभिनन्दन कर, श्रद्धा और भक्ति के ये शब्द-प्रसून आपके कर-कमलों में समर्पित कर स्वयं को गौरवान्वित कर रही है। आप इसे ग्रहण कर हमें अनुगृहीत करें।

दिनांक : २४ - १ - १९८२
श्री सारस्वत सभा भवन
६/२ मणिकर्णिका तीर्थ, काशी

हम आपके अभिन्न-हृदय
श्री सारस्वत सभा, काशी
के सदस्यगण

★

श्री सारस्वत सभा, काशी

के

पैंतीसवें वार्षिक समारोह के अवसर पर

"सारस्वत रत्न" पं० चन्द्र कुमार त्रिक्खा

वरिष्ठ सम्पादक, दैनिक "आज"

का

अध्यक्षीय भाषण

मानननीय सभापति, प्रियवर महोदय एवं बन्धुओं,

आज मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है कि श्री सारस्वत सभा, काशी, का ३५वाँ वार्षिक समारोह बड़े धूम-धाम से मनाया जा रहा है।

सारस्वत ब्राह्मण समाज की अत्यन्त गौरवपूर्ण परम्परा है भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आदि-भूमि, सारस्वत-प्रदेश में वैदिक ऋचाओं के उद्घोष द्वारा विश्व-जनगण के मंगल के विधान की व्यवस्था करनेवाले मन्त्र-द्रष्टा ऋषियों की सन्तान, ब्राह्मण वर्ग कालान्तर में दूर-दूर के क्षेत्रों में जा बसने के कारण उन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाने लगा लेकिन मूल क्षेत्र से सम्बद्ध रहने के कारण इनमें सारस्वत ब्राह्मणों का सदा विशिष्ट स्थान रहा।

वेद-शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन और त्याग-वृत्ति तथा तपोमय जीवन द्वारा भारतीय धर्म के श्रेष्ठ आदर्शों का उदाहरण उपस्थित करते हुए ब्राह्मणों ने भारतीय समाज को एकसूत्र में बांधे रखकर सही मार्ग पर चलते रहने का दिशा-निर्देश किया।

आज राजनीतिक प्रपंच में लिप्त लोग समाज की अधोगति के लिए ब्राह्मणों को दोषी ठहराते हुए 'ब्राह्मणवाद' चलाने का आरोप करते हैं। प्रश्न है कि जनता की अधोगति रोकने और सही मार्ग की ओर अग्रसर करने का कार्य कौन कर सकता है। कहें कुछ और करें कुछ, ऐसे नेता, सत्ता के लोभ में पड़े राजनीतिज्ञ? आडम्बर को महत्त्व देने वाले उपदेशक? भौतिक सुख-साधनों को जुटाने में ही लगा धनिक वर्ग? जनता-सत्ता से विमुख रहनेवाले, सांसारिक सुखोपभोग और आडम्बर एकत्र करने से विरत रहनेवाले, निःस्वार्थी, आचारवान व्यक्ति की बात ही सुनती है और कहा जाय कि अपने वेद-शास्त्रों के ज्ञान, तप और त्याग, उदारता और सहिष्णुता, क्षमा और परहित-साधन की वृत्ति के कारण समाज में ब्राह्मण आदर पाता रहा है और उसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त रहा है। तो यह ब्राह्मणवाद चलानेवाली बात नहीं है। किसी एक वर्ग के लिए नहीं, किसी एक समूह के लिए नहीं, पूरे समाज के लिए, समग्र मानवता के लिए मंगल-कामना और हित-चिन्तन ब्राह्मण के आचार-व्यवहार और कर्त्तव्य का मूलाधार रहा है।

ब्राह्मण को अपने इस कर्त्तव्य और दायित्व के प्रति सचेत होना चाहिए।

हमारे सारस्वत ब्राह्मण वर्ग में काल की गति और कुछ विशिष्ट कारणों से इस कर्त्तव्य-बोध और दायित्व के प्रति सजगता में ह्रास हुआ है। कुछ अपवादों को छोड़कर वेदशास्त्रों के अध्ययन-अनुशीलन और त्याग तथा

तपोमय जीवन-आचरण द्वारा भारतीय संस्कृति की उच्चतम मान्यताओं को अग्रसर करने की परम्परा का निर्वाह अधिकांश क्षेत्रों में नहीं रहा। अनेक सारस्वत-ब्राह्मण परिवार पारम्परिक यजमानी वृत्ति से चिपके रहने के कारण न केवल वेद-शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन और यजन-याजन जैसे ब्राह्मणोचित कर्त्तव्यों से विमुख हुए, प्रत्युत आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और विद्या का समुचित लाभ उठाने से वंचित रहकर समाज को मार्ग-प्रदर्शन करने की अपनी भूमिका निभाने में ओजस्विता का परिचय देने के वजाय अधिकांशतः परमुखापेक्षी और पराश्रयी हो गये हैं। सारस्वत-संतति की यह दुःखद स्थिति बदलनी होगी।

यह प्रसन्नता और सन्तोष की बात है कि काशी में त्याग, तप और साधना निरत अनेक सारस्वत मनीषियों ने वेद-शास्त्र के अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन और ब्राह्मणोचित आचार-व्यवहार की उज्ज्वल परम्परा को बनाये रखा है और जिनमें से राष्ट्रकर्मी पंडित मदनलाल मिश्र, और संस्कृत-विद्वान तथा शिक्षा-विशारद, पंडित राममोहन शास्त्री प्रभृति समाज की दो विभूतियों का अभिनन्दन कर 'काशी सारस्वत सभा' ने अपने उद्देश्यों के अनुकूल ही कार्य किया है। आवश्यकता इस परम्परा को नयी पीढ़ी में भी सुदृढ़ रूप से स्थापित करने की है। मुझे आशा है, काशी सारस्वत सभा के नेतृत्व में यह कार्य अवश्य किया जा सकेगा।

श्री सारस्वत सभा, काशी

के

३५वें वार्षिक समारोह के अवसर पर

"जातिरत्न" पं० श्री जगतनारायण शर्मा मोहले एम० ए०

सहायक रजिस्ट्रार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

मुख्य आतिथेयय भाषण

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उपस्थित महानुभावों तथा बहनों,

तिथि-पर्व-निर्णय पत्रिका से ज्ञात हुआ है कि "श्री सारस्वत सभा" विगत ३५ वर्षों से विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा सारस्वत समाज की सेवा करती चली आ रही है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है।

ब्राह्मणों में सारस्वत परिवार का अपना एक विशिष्ट स्थान आदिकाल से रहा है। इतिहास के पृष्ठों को उलटने से पता चलता है कि आर्य सभ्यता का वास्तविक विकास सरस्वती नदी, जो अब अन्तःसलिला है, के किनारे हुआ। उस समय के समाज का वह प्रबुद्ध वर्ग जिनका मुख्य कार्य मनन, चिन्तन और अध्यात्म की ओर रहा, सारस्वत ब्राह्मण कहलाये। कालान्तर में यह वर्ग अपने जीविकोपार्जन हेतु इधर-उधर फैल गया। फलस्वरूप सुदूर दक्षिण में भी सारस्वत परिवार के कुछ लोग बस गये। यह सोचकर आज भी रोमांच हो उठता है कि आदि शंकराचार्य सारस्वत ही थे। वह प्रतिमा वास्तव में कहाँ विलुप्त हो गई, यह विचार करने का विषय है। हो सकता है कि हम सारस्वतों का एक दूसरे से सम्पर्क नहीं है, इसलिये संभवतः हमें इसका ज्ञान न हो।

विश्वविद्यालय में आने पर मेरा सम्पर्क मैसूर-निवासी, पं० यू० रामचन्दर राव से हुआ। वे विश्वविद्यालय में वित्त अधिकारी के पद पर आसीन थे। बातों-बातों में पता चला कि वे भी सारस्वत ब्राह्मण हैं। यही नहीं, अपितु उन्होंने बतलाया कि मैसूर, गोआ, बम्बई और केरल इत्यादि में बहुत से सारस्वत परिवार हैं। यह बहुत ही दुःख का विषय है कि हमारा उनसे कोई विशेष सम्पर्क नहीं है। क्या यह हमारा धर्म नहीं है कि हम अपने भाईयों की खोज करें तथा उनसे सम्पर्क स्थापित करें। बहुतों को पता होगा कि यहाँ के कर्नाटक मठ के प्रधान पीठाधीश भी सारस्वत ही हैं। कितने लोगों ने उनसे सम्पर्क स्थापित किया, यह सोचने का विषय है। प्रान्तीय भाषा-भेद के कारण हम अपनों से अपनत्व न स्थापित कर सके। यह मेरा प्रथम आह्वान है कि हम लोग आगे बढ़ें और खासकर युवा पीढ़ी के लोग आगे बढ़कर उनसे सम्पर्क स्थापित कर भ्रातृत्व-भावना से उन्हें गले लगावें। उन्हें यह विश्वास दिलावें कि हमारे पूर्वज एक ही सूत्र की गांठ थे तथा समय-स्थान की दूरियों से जो अलगाव आ गया है, वह कृत्रिम है और उसे उखाड़ फेंकना हमारा कर्त्तव्य है। मानता हूँ कि हमारे दक्षिण के सारस्वत भाई वहाँ की सभ्यता, लौकिक रीतियों को अपनाकर हमसे थोड़े अलग हो गये हैं तथा रोटी-बेटी का सम्बन्ध प्रायः समाप्त-सा हो गया है। लेकिन क्या यह उचित है कि संस्कृति और सभ्यता से हमारे रक्त का सम्बन्ध ही समाप्त हो जाय? एक भाई दूसरे भाई को भूल जाय। आइये, हम सब लोग आज यह प्रतिज्ञा करें कि हम ऐसे भेद-भाव को उखाड़ फेंकेंगे तथा अपने भाइयों को खोजकर उस परम संदेश को उन तक पहुँचायेंगे कि "हम सारस्वत ब्राह्मण एक ही पूर्वजों की संतान है और एक हैं।"—संघ में शक्ति है।

श्री सारस्वत सभा काशी का ३५वाँ वार्षिकोत्सव

वार्षिकोत्सव के अवसर पर अध्यक्ष "सारस्वत रत्न" पं० चन्द्रकुमार जी त्रिक्खा, माननीय पं० राम मोहन जी शास्त्री को अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए श्री डा० दत्ता जी के साथ।
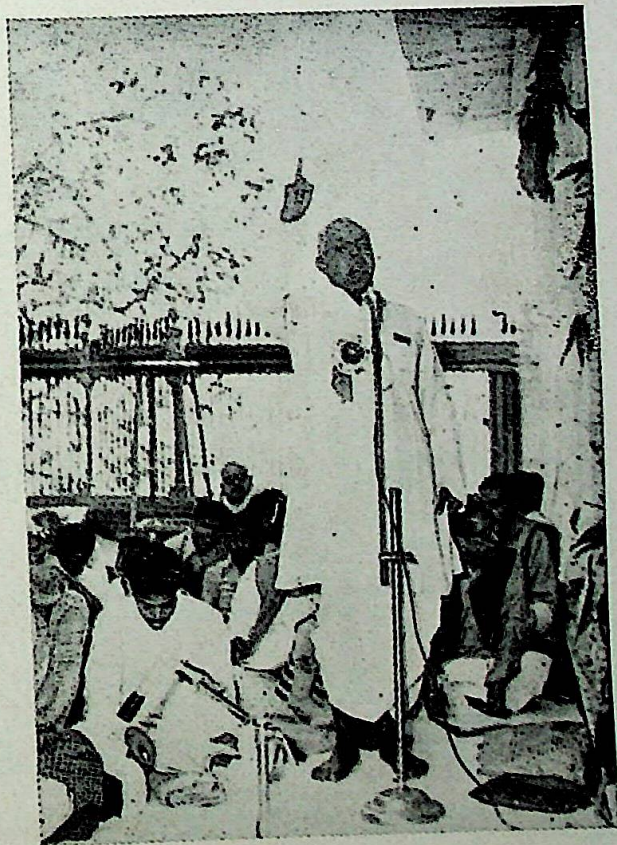
डॉ० श्री रामरंग शर्मा, एम० ए०, भाषण करते हुए
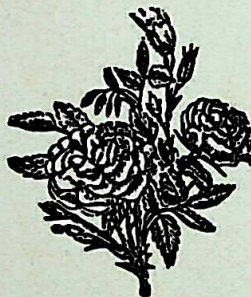
पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से पता चलता है कि सारस्वतों से संबंधित देश में बहुत-सी संस्थायें कार्यरत हैं। स्वंय वाराणसी में ही एक-दो संस्थायें हैं। समझ में नहीं आता है कि यह अलगाव क्यों है? हम उन संस्थाओं से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें भी एकसूत्र में बांधने का प्रयत्न करें तथा उनके अच्छे सुझावों को अपनाकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। इन शब्दों के साथ मेरे अपने कुछ सुझाव हैं, उन्हें भी मैं आप महानुभावों के समक्ष रखना चाहूँगा।

१– हमें अपनी सभा की सदस्यता में वृद्धि करनी चाहिए। इसके लिये युवा वर्ग से मेरा अनुरोध है कि वे आगे बढ़ें और जो भी सारस्वत हों, चाहे वे काश्मीरी हों, मराठी हों या कर्नाटकी हों, उन्हें सदस्य बनाया जाय।

२– प्रथमतः अर्धवार्षिक पत्रिका निकाली जाय। इसका खर्च विज्ञापन द्वारा प्राप्त किया जाय।

३– आगे चल कर इसे त्रैमासिक भी किया जा सकता है।

४– इसके लिये एक समिति वनायी जाय जिसकी देखरेख में यह कार्य सम्पादित हो।

५– कार्यकारिणी समिति की वैठक माह में एक बार अवश्य हो ताकि निर्धारित कार्यक्रम पर विचार-विमर्श किया जा सके।

६– महासभा का अधिवेशन षटमासिक हो।

७– विवाह-कार्य को सम्पादित करने के लिये एक समिति गठित की जाय जो लड़के-लड़कियों की अच्छी सूची तैयार कर सके। वह केवल सूची तक ही निर्धारित न रहकर संबंध कराने में सक्रिय भाग ले। इसमें वयोवृद्ध गुरुजनों की सहायता अपेक्षित है।

८– देखा जा रहा है कि सारस्वत वर्ग में भी लेन-देन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, अतः इस दहेज प्रथा को समाप्त किया जाय।

९– एक कोष स्थापित किया जाय जिसके द्वारा मेधावी तथा निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उन्हें उच्च शिक्षा दिलायी जा सके।

१०– देश की समस्त सारस्वत सभाओं से सम्पर्क स्थापित करके विचार-विनिमय किया जाय। यदि सम्भव हो, तो महासभा का अधिवेशन काशी में ही न होकर देश के अन्यत्र स्थानों में भी सम्पन्न कराया जाय ताकि हम एक दूसरे के विचारों को समझ सकें।

●

श्री सारस्वत सभा, काशी

का

संरक्षक मण्डल

माननीय सर्वश्री पं० सन्त छोटे जी महाराज "मानस राजहंस"
" विश्वनाथ प्रसाद तिक्खे, एम० ए०
" मदनलाल मिश्र कालिया, राष्ट्रकर्मी
" रामनाथ जी शारद वेदमूर्ति, याज्ञिक शिरोमणि
" राममोहन शास्त्री, बी० ए०
प्रधानाचार्य, मारवाड़ी संस्कृत कालेज, वाराणसी
" रामलाल शास्त्री, "साहित्य शिरोमणि"
" राधेकृष्ण मिश्र वग्गे
" शिवनाथ मोहले वैद्य, आयुर्वेदाचार्य
" डा० अमरनाथ शर्मा [नेत्र रोग विशेषज्ञ]
" रतनचन्द कालिया, कानपुर
" पूरनचन्द पाठक, भूतपूर्व नगर प्रमुख, वाराणसी
" अमरनाथ जैतली याज्ञिक, कुण्डमण्डप केशरी
" काशीनाथ झिंगरन, बी० काम०
" गणेशनाथ मोहले

कार्य-कारिणी समिति एवं उपसमितियों के पदाधिकारी

पं० सर्वश्री बालकृष्ण कपूरिया, कर्मकाण्डी, राजपुरोहित, कर्मकाण्ड-प्रवीण (सभापति)
" डा० रजनीकान्त दत्ता, एम. बी. बी. एस. (उपसभापति)
" बद्रीनाथ पाठक (उपसभापति)
" लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, एडवोकेट (प्रधान मंत्री)
" प्रेमनाथ शर्मा डोगरा, बी. ए. (मंत्री)
" ओमप्रकाश शर्मा भट्टूरिये (मंत्री)
" श्रीकृष्ण मिश्र कालिया (कोषाध्यक्ष)
" मोतीचन्द शर्मा, एम. ए., बी. टी.
(मंत्री, पुस्तकालय-वाचनालय समिति), भूतपूर्व शिक्षाध्यक्ष, नगर महापालिका, वाराणसी
" डा० शिवनारायण झिंगन, एच. एम. बी., बी. बी. एम.
[पंजीकृत होमियोपैथ] (अध्यक्ष, तिथि-पर्व निर्णय समिति)
" श्रीनाथ शास्त्री शारद, वेदाचार्य, याज्ञिक मार्तण्ड (संयोजक, तिथि-पर्व निर्णय समिति)
" कृष्णचन्द डोगरा, वैदिक (संयोजक, शिक्षा समिति)
" हरीश कुमार पाठक, एम. ए. (संयोजक, वस्तु भण्डार समिति)
" फणीन्द्रनाथ शर्मा (संयोजक, व्यायाम समिति)
" विजय कुमार जैतली (संयोजक, अर्थ समिति)
" मुरारीलाल कुल (संयोजक, जातीय विवरण पुस्तिका समिति)
" प्रकाश नारायन झिंगन (संयोजक, सेवा समिति)

सदस्यगण

पं० सर्वश्री चन्द्रकुमार तिक्खा, वरिष्ठ संपादक, 'आज' दैनिक, वाराणसी
,, विश्वनाथ वशिष्ठ [गुरुजी]
,, कैलाशनाथ जैतली, आयुर्वेदाचार्य, बी. आई. एम. एस., द्रुत नाड़ी विशेषज्ञ
,, किरन शर्मा, एडवोकेट
,, डा० रामरंग शर्मा, एम. ए., पी-एच. डी.
साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी.ए.बी. डिग्री कालेज, वाराणसी
,, चन्द्रमोहन पाठक
,, डा० विश्वनाथ भारद्वाज, एम. ए., पी-एच. डी.
,, राम किशोर मिश्र बग्गे, एम. ए.
,, प्रेमशंकर मिश्र, एम. ए.
,, लक्ष्मीनाथ सण्ड, बी. ए.
,, रेशमलाल झिंगन पुरोहित
,, रामकिशोर जैतली
,, मोहनलाल पाठक
,, रमेशचन्द कपूरिया

तिथि-पर्व - निर्णय - समिति

अध्यक्ष :
डॉ० पं० शिवनारायण झिंगन, एच० एम० बी०, बी० बी० एम० (पंजीकृत होमियोपैथ)

संयोजक :
पं० श्री श्रीनाथ शास्त्री शारद, वेदाचार्य, "याज्ञिक मार्तण्ड"

सभापति :
पं० श्री बाल कृष्ण कपूरिया, कर्मकाण्डी, कर्मकाण्ड-प्रवीण 'राजपुरोहित'

प्रधान मंत्री :
पं० श्री लक्ष्मी नारायण भारद्वाज, एडवोकेट

सदस्यगण :
पं० श्री रेशमलाल झिंगन, पुरोहित
,, ,, प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए० "साहित्यरत्न"
,, ,, शशिधर इस्सर, सम्पादक
,, ,, नन्दलाल मिश्र कालिया, बी० काम०
,, ,, कृष्णचन्द राज मैते
,, ,, सोमनाथ मोहले, एम० ए०
,, ,, गोपाल नारायण जैतली
,, ,, राकेश वशिष्ठ बी० काम०

बिना मूल्य की

'तिथि-पर्व-निर्णय' पत्रिका, काशी के अतिरिक्त निम्नलिखित नगरों में भी प्राप्त की जा सकती है।

लिखित स्थानों में किसी प्रकार का व्यय नहीं लगता है. केवल काशी से मँगानेवालें सज्जनों को ५० पैसे डाक व्यय भेजना आवश्यक है।

(वितरक बन्धुओं से निवेदन)

कृपया पत्रिका की प्राप्ति-स्वीकार एवं संलग्न कार्ड अवश्य भेजें, अन्यथा सभा के निर्णयानुसार अगले वर्ष से नाम पृथक कर दिया जायेगा एवं पत्रिका भेजने में सभा असमर्थ होगी।

अमृतसर— पं० श्री शम्भूनाथ जैतली काशीवाले, कटरा दुलों, गली वावेयां।

अमृतसर— ,, ,, बृजमोहन शर्मा, कुँचा भाई सन्तसिंह।

दिल्ली— ,, ,, मुन्नू लाल मिश्र, बड़ा मन्दिर, कटरा नील।

दिल्ली— ,, ,, किशन चंद जेतली, ५९६ कटरा नील।

दिल्ली— ,, ,, डा० किशन नारायण मोहले, बड़ा छीपीवाड़ा।

आगरा— ,, ,, बृजनाथ जैतली, माईथान।

आगरा— ,, ,, भगवत दयाल भट्टरिये (भगत), १८/२६७ भैरोगली-माईथान।

आगरा— ,, ,, उदयशंकर जी कुमड़िया, १८/१११ माईथान।

शाहजहाँपुर— ,, ,, विश्वनाथ कपूरिया, भीतरी गली, मोती चौक।

कानपुर— ,, ,, रतन चन्द कालिया, १९ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड।

कानपुर— ,, ,, इन्द्रनारायन झिंगन, ३१/७७, वेल्दारी मुहाल।

लखनऊ— ,, ,, पण्डित श्री प्रेमनारायण मोहले, देहली क्लाथ मिल्स स्टोर्स, हजरतगंज।

लखनऊ— ,, ,, प्रमोद कालिया, जी-१/३ पेपर मिल कालोनी।

लखनऊ— ,, ,, प्रभूनारायन झिंगन, ३५ नं० आफिसर्स हास्टल, मीराबाई मार्ग।

फैजाबाद— ,, ,, अभयचंद कालिया, रेलवे सिटी बुकिंग एजेन्सी, रकावगंज।

फैजाबाद— ,, ,, देवी नारायण शर्मा, इलाहाबाद बैंक।

इलाहाबाद— ,, ,, महाबीर प्रसाद सारस्वत, ६५, भारती भवन।

इलाहाबाद— ,, ,, रामगोपाल संड, एम० ए०, एम० एड०, कल्यानी देवी।

मुरादाबाद— ,, ,, श्री पन्नालाल पाठक, लोहागढ़।

मेरठ— ,, ,, मनोज जोशी, ३५ ए, न्यू मार्केट, बेगमपुल।

करनाल— ,, ,, हंसराज तिक्खा, डी ३२, माडल टाउन।

जौनपुर—	श्री अजय कुमार शर्मा, एम० ए०, स्टेशन रोड, सदर अस्पताल के सामने।
मिर्जापुर—	पण्डित श्री हरनाथ मोहले, वैद्य, बुन्देलखण्डी मोहाल।
विन्ध्याचल—	पण्डित श्री कन्हैया लाल झिंगन, व्यवस्थापक, श्री सारस्वत खत्री धर्मशाला।
गोरखपुर—	श्री राजेन्द्र प्रसाद भल्ला, भल्ला डीजल्स, सिनेमा रोड।
पटना सिटी—	पण्डित श्री गोवर्द्धन नाथ, कचौड़ी गली।
"	पण्डित श्री चुन्नीलाल जी एडवोकेट, कचौड़ी गली।
दरभंगा—	पण्डित श्री भोलानाथ जेतली, जेतली स्वीट्स एण्ड सोप इन्डस्ट्रीज, काली स्थान।
वर्द्धवान—	श्री शम्भूनाथ जेतली, श्याम लाल रोड, मकान नं० २३।
कलकत्ता—	श्री लक्ष्मीनारायण झिंगन, हनुमान मन्दिर, महात्मा गांधी रोड।
"	श्री बैजनाथ मेहरोत्रा, १७८, महात्मा गांधी रोड।
कलकत्ता-७—	श्री कार्तिक प्रसाद खन्ना, ५१, वाराणसी घोष स्ट्रीट।
मालीगाँव [आसाम]—	डाक्टर श्री प्रेमनाथ झिंगरन, क्वार्टर नं० १५६, गौशाला रोड, मालीगाँव, गौहाटी ७८१०११, असम।
गाडरवाड़ा [मध्य प्रदेश]—	डाक्टर भास्करदत्त जैतली काशीवाले, सारस्वत सदन।
पिनांग [मलाया]—	पण्डित आर. के. शर्मा, बार-एट-लॉ, ५ नार्गन रोड।
रायपुर—	पण्डित फूलचन्द्र मिश्रा, अलका भवन, नं० ९२ विवेकानन्द कालोनी।
बम्बई—	पण्डित इन्द्रदत्त शर्मा, एडवोकेट, ६२ आनन्दनगर, ६ जुहूतारा।
"	पण्डित त्रिलोकी नाथ जैतली, ४६ निवाना, पाली हिल, बान्द्रा, बम्बई-५४।
"	श्रीमान् लक्ष्मनदास कपूर, एच. नारायनदास एण्ड कम्पनी, ४१/४३ चम्पा गली, बम्बई ४०000२
England	Mr. B. D. Mehra, 76 Trinity Road, South Hall, Middlessex.
U. S. A.	Mr. K. L. Kool, Road No. 288, Bidwill, Ohio.

तिथि-पर्व-निर्णय का वाराणसी में प्राप्तिस्थान—

१—आचार्य श्री पण्डित रामलाल जी शास्त्री—साहित्य-शिरोमणि, डी० ३/९२ लाहोरी टोला।

२—पण्डित राधेकृष्ण जी मिश्र, निष्काम औषधालय, सरस्वती फाटक।

३—पण्डित बालकृष्ण जी कपूरिया, कर्मकाण्डी, राजपुरोहित, ७/७० सिद्धेश्वरी।

४—डा० पण्डित शिवनारायण जी झिंगन, एच. एम. बी., बी. बी. एस., आनन्द होमियो सदन, सिद्धेश्वरी।

५—पण्डित अमरनाथ जी जैतली, याज्ञिक, कुण्डमण्डप केसरी, अमर भवन, २३/७६, मंगलागौरी।

६—पण्डित शिवनाथजी वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, जतनबर।

७—श्री विजय कुमार जेतली, २/२७, राम भवन, कामेश्वर महादेव (गायघाट)।

८—श्री लक्ष्मीनारायणजी भारद्वाज, एडवोकेट (गायघाट)।

पंचांग एवं सारिणी देखने की विधि

तिथ्यादि सारिणी सं० २०३९, सन् १९८२-८३ ई०

सारिणी देखने की सुविधा हेतु प्रथम पंक्ति में अंग्रेजी तारीख हिन्दी अंकों में दी गई है, बाद की पंक्ति में वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्र-राशि एवं सूर्य उदय-अस्त की पंक्तियों में समय क्रमशः घण्टा-मिनट में दिये गये हैं, करण भी घण्टा-मिनट में है। ता० से तारीख, वा० से वार, ति० से तिथि, न० से नक्षत्र, यो० से योग, क० से करण, चं० रा० से चन्द्र-राशि, सू० उ० से सूर्योदय, सू० अ० से सूर्यास्त, घं० से घण्टा, मि० से मिनट समझना चाहिए। तिथि, नक्षत्र एवं करण का अंकित समय समाप्ति का है तथा चन्द्र-राशि का समय प्रारम्भ का है।

इस सारिणी में घण्टा-मिनट रेलवे घड़ी की संख्यानुसार हैं जैसे—दिन के बारह बजे तक की संख्या ज्यों-की-त्यों है। १२ बजे दिन के बाद १ बजे के स्थान पर १३, २ बजे के स्थान पर १४, १२ बजे रात्रि की जगह पर (शून्य) है। इसके बाद रात्रि के १ बजे से घं० १, २, ३, इसी प्रकार क्रमशः हैं। साधारण जनता की सुविधा के लिए सूर्य-उदय एवं सूर्य-अस्त का समय सीधा ही दिया गया है। रेलवे घड़ी की संख्यानुसार नहीं दिया गया है। सूर्योदय से पूर्व १ मिनट का भी कम समय हो, तो उसे पहले दिन का समय ही समझना चाहिए। दूसरे दिन सूर्योदय में ही वार एवं तिथि बदली गई है। जो तिथि या नक्षत्र सूर्योदय में नहीं है $\frac{७ \quad ४}{४ \quad ६६}$ के रूप में है। बटे में नीचे जो अंक हैं, उसे आगे की तिथि और नक्षत्र का समझना चाहिये।

दिक्शूल

सोम शनी पूरब नहिं चालू, मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
बीफै को नहीं दक्खिन जाये, रवि शुक्र पश्चिम ना धाये॥
बुद्ध कहे मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन मत करो पयाना।
कौड़ी से नहीं भेंट कराऊँ, क्षेम कुशल से घर पहुँचाऊँ॥

॥ चन्द्रवास ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धन	मकर	कुम्भ	मीन

॥ चन्द्रवास फल ॥

यात्रा में सन्मुख चन्द्रमा हों, तो अर्थ [धन] की प्राप्ति कराते हैं। दक्षिण [दाहिने] चन्द्रमा हों, तो सुख एवं सम्पदा की प्राप्ति कराते हैं। पृष्ठ में [पीठ पीछे] चन्द्रमा हों, तो मरणतुल्य कष्ट होता है। वाम [बायें] चन्द्रमा हों, तो धन की हानि कराते हैं।

॥ विशेष ॥

मृगशिरा, पुष्य, हस्त, और अनुराधा—इन नक्षत्रों में दिक्शूल के दिन को छोड़कर अन्य दिन सब दिशाओं की यात्रा शुभ है।

श्री सारस्वत सभा काशी का ३५वाँ वार्षिकोत्सव

राष्ट्र कर्मी, वयोवृद्ध सभा के भूतपूर्व सभापति माननीय पं० मदनलालजी मिश्र कालिया अभिनन्दन किये जाने पर आभार प्रकट करते हुए। विशिष्ट आचार्यों के साथ।
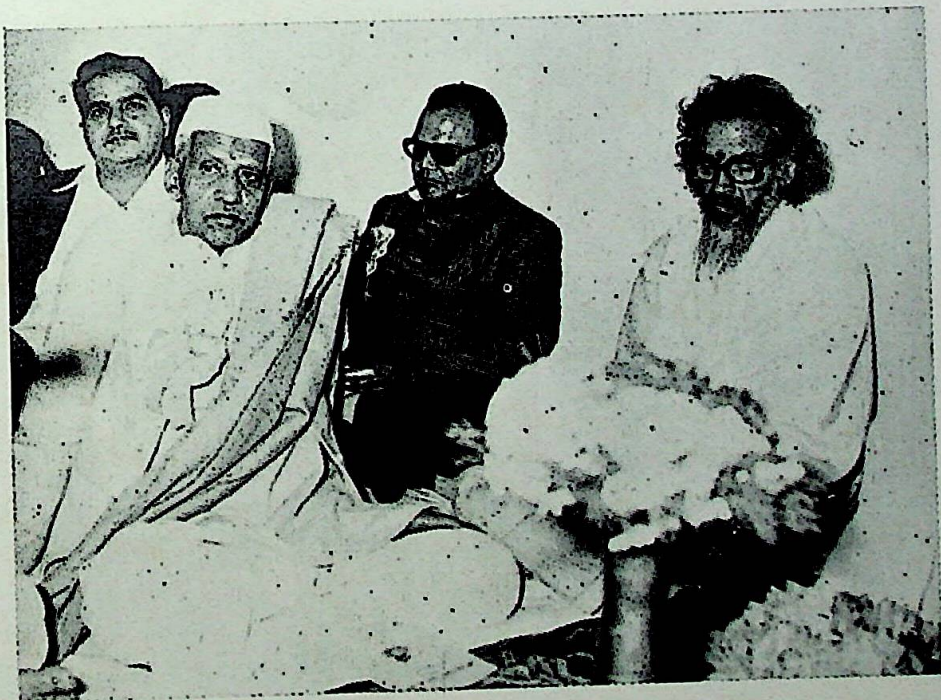
सभा के संरचक पं० शिवनाथ जी मोहले वैद्य, संत छोटे जी महाराज एवं डा० श्री दत्ता जी तथा श्री प्रेमशंकर मिश्र, एम० ए० के साथ भावपूर्ण मुद्रा में।
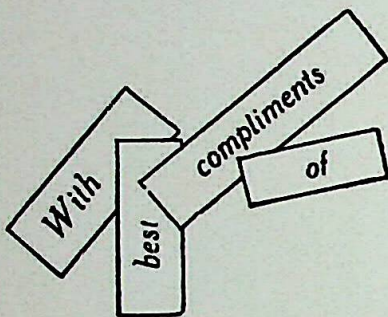
चैत्र शुक्ल पक्ष (२६ मार्च से ८ अप्रैल तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२६	शु.	१	१४	२८	रे.	११	८	वृ.	१०	५२	व.	१४	५१	बा.	२	७	मे.	११	८	५/५८	६/१०
२७	श.	२	१२	५६	अ.	०	१९	ऐं.	८/२	३२/६०	कौ.	१३	२३	तै.	०	२३				५/५७	६/१०
२८	र.	३	११	५	भ.	२३	२	वि.	३	६	ग.	११	२३	व.	२२	२१	वृ.	४	३६	५/५६	६/१०
२९	सो.	४	८	५५	कृ.	२१	३२	प्री.	०	७	वि.	९	१९	वै.	२०	१२				५/५५	६/११
३०	मं.	५	६/४	३८/६०	रो.	१९	५४	आ.	२१	२	वा.	७	४	कौ.	१७/२२	५७/६०				५/५४	६/११
३१	बु.	७	१	५०	मृ.	१८	१३	सौ.	१७	५४	ग.	१५	३०	व.	२	१८	मि.	७	३	५/५३	६/१२
१	गु.	८	२३	२८	आ.	१६	३४	शो.	१४	४८	वि.	१३	६	वै.	२३	५६				५/५२	६/१२
२	शु.	९	२१	१५	पु.	१५	३	ऽगं.	११	४८	बा.	१०	४८	कौ.	२१	४१	क.	९	२५	५/५१	६/१३
३	श.	१०	१९	१४	पु.	१३	४३	सु.	८	५६	तै.	८	३९	ग.	१९	३८				५/५०	६/१३
४	र.	११	१७	३२	श्ले.	१२	४०	धृ.	६/२	१७/६०	व.	६	४५	वि.	१७/८	५३/६०	सिं.	१२	४०	५/४९	६/१४
५	सो.	१२	१६	१०	म.	११	५७	गं.	१	५३	बा.	१६	२८	कौ.	३	५८				५/४८	६/१४
६	मं.	१३	१५	१४	पू.	११	३८	वृ.	०	११	तै.	१५	२८	ग.	३	१३	कं.	१७	४१	५/४७	६/१४
७	बु.	१४	१४	४७	उ.	११	४८	ध्रु.	२२	५२	व.	१४	५६	वि.	२	५७				५/४६	६/१५
८	गु.	१५	१४	५०	ह.	१२	२७	व्या.	२१	५८	व.	१४	५७	बा	३	१३	तु.	१	२	५/४५	६/१६

वैशाख कृष्ण पक्ष (९ अप्रैल से २३ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
९	शु.	१	१५	२५	चि.	१३	३६	ह.	२१	२८	कौ.	१५	२८	तै.	४	०				५/४४	६/१६
१०	श.	२	१६	२७	स्वा	१५	१३	व.	२१	१९	ग.	१६	३०	व.	५	१५				५/४३	६/१७
११	र.	३	१७	५८	वि.	१७	१७	सि.	२१	३२	वि.	१७	५९	व.	सम्पूर्ण		वृ.	१०	४६	५/४२	६/१७
१२	सो.	४	१९	४९	ऽनु.	१९	३९	व्य.	२१	५७	व.	९	५३	वा.	१९	४६				५/४१	६/१७
१३	मं.	५	२१	५२	ज्ये.	२२	१५	व.	२२	३२	कौ.	८	४१	तै.	२१	५१	ध.	२२	१५	५/४०	६/१८
१४	बु.	६	२३	५५	मू.	०	५१	प.	२३	१०	ग.	१०	५३	व.	२३	५६				५/३९	६/१८
१५	गु.	७	१	५२	पू.	३	२०	शि.	२३	४१	वि.	१२	५५	व.	१	५४				५/३८	६/१८
१६	शु.	८	३	३०	उ.	५	३२	सि.	२३	५९	वा.	१४	४४	कौ.	३	३५	म.	९	५२	५/३७	६/१९
१७	श.	९	४	४५	श्र.	सम्पूर्ण		सा.	०	०	तै.	१६	१४	ग.	४	५३				५/३६	६/१९
१८	र.	१०	५	३३	श्र.	७	१९	शु.	२३	४१	व.	१७	१८	वि.	सम्पूर्ण		कु.	२०	०	५/३५	६/२०
१९	सो.	११	सम्पूर्ण		ध.	८	४०	शु.	२२	५६	वि.	५	४३	व.	१७	५३				५/३४	६/२०
२०	मं.	११	५	४८	श.	९	३१	ब्रं.	२१	४८	बा.	६	३	कौ	१७	५८	मी.	३	४७	५/३३	६/२१
२१	बु.	१२	५/४	३३/६०	पू.	९	५२	ऐं.	२०	१६	तै.	५	५३	ग.	१७/५	३३/६०				५/३३	६/२१
२२	गु.	१४	३	३८	उ.	९	४४	वै.	१८	२२	वि.	१६	४०	श.	४	७				५/३२	६/२२
२३	शु.	३०	२	४	रे.	९	९	वि.	१६	८	च.	१५	२२	ना.	२	३७	मे.	९	९	५/३१	६/२२

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (८ मई से २३ तक)

वैशाख शुक्ल पक्ष (२४ अप्रैल से ७ मई तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२४	श.	१	०	१०	अ.	८	१५	प्री.	१३	३०	कि.	१३	४२	व.	०	४७				५/३०	६/२३
२५	र.	२	२२	०	भ.	७	०	आ.	१०	५२	वा.	११	४४	कौ.	२२	४१	वृ.	१२	३६	५/२९	६/२४
२६	सो.	३	१६	४०	कृ.	५/६	३३/५६	सौ.	७/४	५६/५६	तै.	९	३२	ग.	२०	२४				५/२८	६/२४
२७	मं.	४	१७	१६	मृ.	२	१७	अ.	१	४८	व.	७	१०	वि.	१७/४	५८/४५	मि.	१५	७	५/२७	६/२४
२८	बु.	५	१४	४७	आ.	०	३८	सु.	२२	४४	वा.	१५	३०	कौ.	२	१७				५/२६	६/२५
२९	गु.	६	१२	२४	पु.	२३	५	धृ.	१६	४४	तै.	१३	३	ग.	२३	५६	क.	१७	२८	५/२६	६/२५
३०	शु.	७	१०	६	पु.	२१	४१	शू.	१६	५२	व.	१०	५३	वि.	२१	५३				५/२५	६/२६
१	श.	८	८	६	श्ले.	२०	३४	गं.	१४	१२	व.	८	५१	वा.	१९	५८	सिं.	२०	३४	५/२४	६/२६
२	र.	९	७/५	२३/१	म.	१९	४८	वृ.	११	४८	कौ.	७	५	तै.	१८	२२				५/२४	६/२७
३	सो.	११	४	३	पू.	१९	२४	ध्रु.	९	४२	ग.	५	३९	व.	१७/४	६/४०	कं.	१	२५	५/२३	६/२७
४	मं.	१२	३	३४	उ.	१९	२७	व्या.	७	५६	व.	१६	२२	वा.	४	६				५/२२	६/२८
५	बु.	१३	३	३५	ह.	१९	५९	ह.	६	३३	कौ.	१६	४	तै.	४	२				५/२१	६/२८
६	गु.	१४	४	८	चि.	२१	२	व.	५/३	३५/२	ग.	१६	१६	व.	४	३०	तु.	८	३०	५/२०	६/२९
७	शु	१५	५	१०	स्वा.	२२	३५	व्य.	४	५०	वि.	१६	५८	व.	५	२७				५/२०	६/३०

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (८ मई से २३ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
८	श.	१	सम्पूर्ण		वि.	०	३३	व.	४	५८	वा.	१७	५७	कौ.	सम्पूर्ण		वृ.	१८	३	५/१९	६/३०
९	र.	१	६	३७	ऽनु.	२	५३	प.	सम्पूर्ण		कौ.	६	२६	तै.	१९	३१				५/१८	६/३१
१०	सो.	२	८	२५	ज्ये.	सम्पूर्ण		प.	५	२२	ग.	८	३४	व.	२१	३३				५/१७	६/३१
११	मं.	३	१०	२७	ज्ये.	५	२५	शि.	५	५९	वि.	१०	३२	व.	२३	३६	ध.	५	२५	५/१७	६/३२
१२	बु.	४	१२	३०	मू.	८	३	सि.	६	३८	वा.	१२	४०	कौ.	१	३८				५/१६	६/३२
१३	गु.	५	१४	२४	पू.	१०	३६	सा.	७	१४	तै.	१४	३६	ग.	३	२७	म.	१७	१०	५/१६	६/३२
१४	शु.	६	१६	२	उ.	१२	५१	शु.	७	३७	व.	१६	१७	वि.	४	५६				५/१५	६/३३
१५	श.	७	१७	१५	श्र.	१४	४५	शु.	७	४५	व.	१९	३४	वा.	सम्पूर्ण		कुं.	३	३०	५/१५	६/३३
१६	र.	८	१८	२	ध.	१६	१३	ब्रं.	७	३०	वा.	५	५८	कौ.	१८	२३				५/१४	६/३४
१७	सो.	९	१८	१८	श.	१७	१२	ऐं.	६	५४	तै.	६	३३	ग.	१८	४३				५/१४	६/३४
१८	मं.	१०	१८	०	पू.	१७	३७	वै.	५/४	५३/२	व.	६	३७	वि.	१८	३१	मी.	११	३१	५/१३	६/३५
१९	बु.	११	१७	१६	उ.	१७	३६	प्री.	२	४१	व.	६	११	वा.	१७/५	५/१७				५/१३	६/३६
२०	गु.	१२	१६	४	रे.	१७	७	आ.	०	३३	तै.	१६	४३	ग.	३	५८	मे.	१७	७	५/१३	६/३६
२१	शु.	१३	१४	२६	अ.	१६	१८	सौ.	२२	७	व.	१५	११	वि.	२	१६				५/१२	६/३७
२२	श.	१४	१२	३४	भ.	१५	८	शो.	१९	२७	श.	१	१९	च.	०	३२	वृ.	२०	४७	५/१२	६/३८
२३	र.	३०	१०	२४	कृ.	१३	४४	ऽगं.	१९	३५	ना.	११	५	कि.	२१	५६				५/१२	६/३८

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (२४ मई से ६ जून तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	या.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२४	सो.	१	८	३	रो.	१२	६	सु.	१३	३५	व.	८	४६	वा.	१९	३४	मि.	२३	१९	५/११	६/३६
२५	मं.	२	५/३	१७/६	मृ.	१०	३०	धृ.	१०	३२	कौ.	६	२१	तै.	१७/२	७/५				५/११	६/३७
२६	बु.	४	०	४५	आ.	८	५०	शू.	७/४	२९/६	व.	१४	४०	वि.	१	२८	क.	१	३९	५/१०	६/४०
२७	गु.	५	२२	२६	पु.	७	१६	वृ.	१	३७	व.	१२	१८	वा.	२३	१०				५/१०	६/४०
२८	शु.	६	२०	२४	पु.	५/४	५१/६	ध्रु.	२२	५६	कौ.	१०	६	तै.	२१	३	सि.	४	४१	५/१०	६/४१
२९	श.	७	१८	३६	म.	३	५२	व्या.	२०	३१	ग.	८	७	व.	१९	१२				५/१०	६/४१
३०	र.	८	१७	१३	पु.	३	२१	ह.	१८	२२	वि.	६	२७	व.	१७/५	४३/६				५/९	६/४२
३१	सो.	९	१६	१३	उ.	३	१९	व.	१६	३४	कौ.	१६	३७	तै.	४	१९	कं.	९	२१	५/९	६/४२
१	मं.	१०	१५	४१	ह.	३	४५	सि.	१५	८	ग.	१९	१	व.	३	५७				५/९	६/४२
२	बु.	११	१५	४०	चि.	४	४२	व्य.	१४	७	वि.	१५	५४	व.	४	७	तु.	१६	१३	५/९	६/४२
३	गु.	१२	१६	११	स्वा.	सम्पूर्ण		व.	१३	२९	वा.	१६	१९	कौ.	४	४७				५/९	६/४३
४	शु.	१३	१७	१०	स्वा.	६	९	प.	१३	१६	तै.	१७	१४	ग.	सम्पूर्ण		वृ.	१	३५	५/९	६/४३
५	श.	१४	१८	३९	वि.	८	४	शि.	१३	२४	ग.	५	५६	व.	१८	३७				५/९	६/४३
६	र.	१५	२०	२२	अनु.	१०	२२	सि.	१३	४६	वि.	७	२९	व.	२०	२१				५/९	६/४४

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (७ जून से २१ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
७	सो.	१	२२	२०	ज्ये.	१२	५०	सा.	१४	२३	वा.	९	१९	कौ.	२२	१८	ध.	१२	५०	५/८	६/४६
८	मं.	२	०	२२	मू.	१५	२७	शु.	१५	४	तै.	११	१८	ग.	०	१९				५/८	६/४६
९	बु.	३	२	१७	पू.	१८	१	शु.	१५	४१	व.	१३	१६	वि.	२	१३	म.	०	३६	५/८	६/४६
१०	गु.	४	३	५६	उ.	२०	२१	ब्रं.	१६	८	व.	१५	३	वा.	३	५२				५/८	६/४६
११	शु.	५	सम्पूर्ण		श्र.	२२	२१	ऐं.	१६	२०	कौ.	१६	३०	तै.	५	९				५/८	६/४७
१२	श.	५	५	९	ध.	२३	५४	वै.	१६	११	ग.	१७	३३	व.	सम्पूर्ण		कु.	११	७	५/८	६/४७
१३	र.	६	५	५७	श.	०	५८	वि.	१५	४१	व.	५	५८	वि.	१८	७				५/८	६/४७
१४	सो.	७	६	१३	पू.	१	३२	प्री.	१४	४६	व.	६	१७	वा.	१८	१२	मी.	१९	२४	५/८	६/४७
१५	मं.	८	५	५७	उ.	१	३६	आ.	१३	२६	कौ.	६	७	तै.	१७	४७				५/८	६/४८
१६	बु.	९	५/४	१३/२	रे.	१	१४	सौ.	११	४४	ग.	५	२७	व.	१९/४	५४/६	मे.	१	१४	५/९	६/४८
१७	गु.	११	२	२७	अ.	०	२९	शो.	९	४१	व.	१५	३५	वा.	२	४९				५/९	६/४८
१८	शु.	१२	०	३२	भ.	२३	२४	गं.	७/४	३०/६	कौ.	१३	५४	तै.	०	५९	वृ.	५	३	५/९	६/४८
१९	श.	१३	२२	२२	कृ.	२२	१	धृ.	१	५३	ग.	११	५५	व.	२२	५२				५/९	६/४९
२०	र.	१४	२०	१	रो.	२०	२८	शू.	२२	५५	वि.	९	४२	श.	२०	३३				५/९	६/४९
२१	सो.	३०	१७	३४	मृ.	१८	५२	गं.	१९	५५	च.	७	१९	ना.	१८/४	५७/६	मि.	७	४०	५/१०	६/४९

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (२२ जून से ६ जुलाई तक)

अं. ता.	व.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२२	मं.	१	१५	५६	आ.	१७	१०	वृ.	१६	५१	व.	१५	३४	वा.	२	१९				५/१०	६/४६
२३	बु.	२	१२	४०	पु.	१५	३४	ध्रु.	१३	५१	कौ.	१३	४	तै.	२३	५८	क.	६	५८	५/१०	६/५०
२४	गु.	३	१०	२३	पु.	१४	७	व्या.	१०	५६	ग.	१०	५२	व.	२१	४६				५/११	६/५०
२५	शु.	४	८	१९	श्ले.	१२	५३	ह.	८	१७	वि.	८	४६	व.	१९	५०	सिं.	१२	५३	५/११	६/५०
२६	श.	५	६/५	३१/४	म.	११	५६	व.	५/४	४५/३७	वा.	६	५४	कौ.	१८	६				५/११	६/५०
२७	र.	७	४	०	पू.	११	२३	व्य.	१	४६	तै.	५	२४	ग.	१८/४	५६/७	कं.	१७	२१	५/११	६/५१
२८	सो.	८	३	२७	उ.	११	१४	व.	०	१७	वि.	१५	५७	व.	३	३७				५/१२	६/५१
२९	मं.	९	३	२३	ह.	११	३४	प.	२३	११	वा.	१५	३३	कौ.	३	२८	तु.	२३	५९	५/१२	६/५१
३०	बु.	१०	३	५१	चि.	१२	२३	शि.	२२	२६	तै.	१५	३६	ग.	३	५१				५/१२	६/५१
१	गु.	११	४	४६	स्वा.	१३	४४	सि.	२२	१२	व.	१६	१६	वि.	४	४१				५/१२	६/५१
२	शु.	१२	सम्पूर्ण		वि.	१५	३२	सा.	२२	१६	व.	१७	१६	वा.	सम्पूर्ण		वृ.	६	५	५/१३	६/५१
३	श.	१२	६	११	ऽनु.	१७	४४	शु.	२२	३८	वा.	५	५८	कौ.	१८	४७				५/१३	६/५१
४	र.	१३	७	५६	ज्ये.	२०	१३	शु.	२३	१३	तै.	७	३७	ग.	२०	३४	ध.	२०	१३	५/१४	६/५१
५	सो.	१४	९	५३	मू.	२२	५०	ब्र.	२३	५३	व.	९	३१	वि.	२२	३१				५/१४	६/५१
६	मं.	१५	११	५५	पू.	१	२५	ऐं.	०	५२	व.	११	२६	वा.	०	३१				५/१५	६/५१

श्रावण कृष्ण पक्ष (७ जुलाई से २० तक)

अं. ता.	व.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
७	बु.	१	१३	४६	उ.	३	४६	वै.	१	१	कौ.	१३	३१	तै.	२	२२	म.	८	१	५/१६	६/५१
८	गु.	२	१५	२६	श्र.	सम्पूर्ण		वि.	१	१७	ग.	१५	१२	व.	३	५२				५/१६	६/५०
९	शु.	३	१६	४४	श्र.	५	५५	प्री.	१	१२	वि.	१६	३१	व.	४	५७	कुं.	१८	४४	५/१६	६/५०
१०	श.	४	१७	३४	ध.	७	३४	आ.	०	४६	बा.	१७	२३	कौ.	सम्पूर्ण					५/१६	६/५०
११	र.	५	१७	५२	श.	८	४६	सौ.	२३	५५	कौ.	५	३४	तै.	१७	४५	मी.	३	१६	५/१७	६/५०
१२	सो.	६	१७	३८	पू.	९	२६	शो.	२२	४०	ग.	५	४१	व.	१७	३६				५/१७	६/५०
१३	मं.	७	१६	५५	उ.	९	३७	ऽगं.	२१	०	वि.	५	२०	व.	१७/४	३/२८				५/१७	६/५०
१४	बु.	८	१५	४६	रे.	९	२१	सु.	१९	२	कौ.	१५	५४	तै.	३	९	मे.	९	२१	५/१८	६/४९
१५	गु.	९	१४	१२	अ.	८	४०	धृ.	१६	४४	ग.	१४	२४	व.	१	२६				५/१८	६/४९
१६	शु.	१०	१२	१९	भ.	७	३८	शू.	१४	१०	वि.	१२	३४	व.	२३	२७	वृ.	१३	१९	५/१८	६/४९
१७	श.	११	१०	१०	कृ.	६/४	३२/४७	गं.	११	२२	बा.	१०	२०	कौ.	२१	११				५/१८	६/४९
१८	र.	१२	७	५०	मृ.	३	१२	वृ.	८	२६	तै.	८	२	ग.	१८	४६	मि.	१६	१	५/२०	६/४८
१९	सो.	१३	५/२	२२/३३	आ.	१	३०	ध्रु.	५/२	३५/२१	व.	५	३७	वि.	१६/४	२२/३३				५/२०	६/४८
२०	मं.	३०	०	२९	पु.	२३	५४	ह.	२३	२१	च.	१३	५४	ना.	०	४१	कं.	१८	१८	५/२१	६/४७

श्रावण शुक्ल पक्ष (२१ जुलाई से ४ अगस्त तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
२१	बु.	१	२२	६	पु.	२२	२४	व.	२०	२७	कि	११	३१	ब.	२२	२०				५/३१	६/४७
२२	गु.	२	२०	३	श्ले.	२१	७	सि.	१७	४२	बा	६	१६	कौ.	२०	११	सिं.	२१	९	५/३२	६/४६
२३	शु.	३	१८	१४	म.	२०	६	व्य.	१५	१९	तै	७	१४	ग.	१८	१७				५/३२	६/४६
२४	श.	४	१६	४६	पू.	१९	२७	व.	१२	५७	ब.	५	३०	वि.	१९/४	४३/८	कं.	१	२३	५/३३	६/४५
२५	र.	५	१५	४१	उ.	१९	११	प.	११	८	बा	१५	३४	कौ.	३	१३				५/३३	६/४५
२६	सो.	६	१५	५	ह.	१९	२४	शि.	९	२५	तै.	१४	५२	ग.	२	४६				५/३३	६/४५
२७	मं.	७	१५	०	चि.	२०	८	सि.	८	१४	ब.	१४	४१	वि.	२	५०	तु.	७	४६	५/३४	६/४५
२८	बु.	८	१५	२५	स्वा.	२१	२१	सा.	७	२७	ब.	१५	१	बा.	३	२४				५/३४	६/४४
२९	गु.	९	१६	२०	वि.	२३	२	शु.	७	६	कौ.	१५	४८	तै.	४	२९	वृ.	१६	३७	५/३५	६/४४
३०	शु.	१०	१७	४२	अनु.	१	९	शु.	७	८	ग	१७	११	ब.	सम्पूर्ण					५/३५	६/४३
३१	श.	११	१९	२६	ज्ये.	३	३४	ब्रं.	७	२३	ब.	६	२	वि	१८	५२	ध.	३	३४	५/३६	६/४३
१	र.	१२	२१	२३	मू.	सम्पूर्ण		ऐं.	७	५३	ब.	९	५१	बा.	२०	४९				५/३६	६/४२
२	सो.	१३	२३	२६	मू.	६	१०	वै.	८	३२	कौ.	९	५०	तै.	२२	५१				५/३७	६/४२
३	मं.	१४	१	२१	पू.	८	४६	वि.	९	११	ग.	११	४९	व	०	४७	म.	१५	२२	५/३७	६/४१
४	बु.	१५	३	२	उ.	११	१३	प्री.	९	४२	वि	१३	३९	ब.	२	३०				५/३८	६/४०

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (५ अगस्त से १९ तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घ.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
५	गु.	१	४	२०	श्र.	१३	२२	आ.	१०	०	बा.	१५	११	कौ.	३	५१	कुं.	२	१५	५/३८	६/४०
६	शु.	२	५	१२	ध.	१५	९	सौ.	६	५६	तै.	१६	१८	ग.	४	४५				५/३९	६/३९
७	श.	३	सम्पूर्ण		श.	१६	२७	शो.	६	३६	ब.	१६	५८	वि.	५	१०				५/३९	६/३८
८	र.	३	५/६	३४/२४	पू.	१७	१४	ऽगं.	९	५०	ब.	१५	८	बा.	५	५	मी.	११	३	५/४०	६/३८
९	सो.	५	४	४३	उ.	१७	३२	सु.	९	३८	कौ.	१६	५१	तै.	४	३५				५/४०	६/३७
१०	मं.	६	३	३६	रे.	१७	२१	धृ.	९	९	ग.	१६	८	व.	३	२९	मे.	१७	२१	५/४१	६/३६
११	बु.	७	२	५	अ.	१६	४३	गं.	१	५१	वि.	१४	४६	व.	२	२				५/४१	६/३५
१२	गु.	८	०	१४	भ.	१५	४८	वृ.	२३	१९	बा	१३	९	कौ.	०	१६	वृ.	२१	२९	५/४२	६/३४
१३	शु.	९	२२	६	कृ.	१४	३२	ध्रु.	२०	३२	तै.	११	१४	ग.	२२	१२				५/४२	६/३३
१४	श.	१०	१९	४८	रो.	१३	५	व्य	१७	३८	व.	९	४	वि.	१९	५५	मि.	०	१६	५/४३	६/३२
१५	र.	११	१७	२१	मृ.	११	२७	ह.	१४	३७	व.	६	४४	बा.	१७/४	२२/१६				५/४३	६/३२
१६	सो.	१२	१४	५४	आ.	९	४७	व.	११	३२	तै.	१५	०	ग.	१	४५	क.	२	३३	५/४४	६/३१
१७	मं.	१३	१२	२८	पु.	८	८	सि.	८/५	३०/३९	व.	१२	३१	वि.	२३	२५				५/४४	६/३०
१८	बु.	१४	१०	१०	पु.	६/६	३९/१४	व.	२	४५	श.	१०	१९	च.	२१	१५	सिं.	५	१४	५/४५	६/२९
१९	गु.	३०	८	३	म.	४	९	व.	०	६	ना.	८	१२	किं.	१९	१६				५/४५	६/२८

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (२० अगस्त से ३ सितम्बर तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२०	शु.	१	६/४	१२/४३	पू.	३	२३	शि.	२१	४८	व.	६	२०	वा.	१७/४	३४/४८				५/३८	६/२७
२१	श.	३	३	३७	उ.	३	१	सि.	१९	४६	तै.	१६	१४	ग.	३	३९	कं.	९	१८	५/३८	६/२६
२२	र.	४	३	०	ह.	३	७	सा.	१८	५	व.	१५	१९	वि.	२	५७				५/३९	६/२५
२३	सो.	५	२	५३	चि.	३	४२	शु.	१९	४८	व.	१४	५२	वा.	२	४६	तु.	१५	२४	५/३९	६/२५
२४	मं.	६	३	१८	स्वा.	४	४९	शु.	१५	५४	कौ.	१४	५६	तै.	३	५				५/३९	६/२४
२५	बु.	७	४	१३	वि.	सम्पूर्ण		ब्रं.	१५	२६	ग.	१५	३०	व.	३	५४	वृ.	२३	५८	५/३९	६/२३
२६	गु.	८	५	३५	वि.	६	२२	ऐं.	१५	१८	वि.	१६	२३	व.	५	११				५/३९	६/२२
२७	शु.	९	सम्पूर्ण		ऽनु.	८	२३	वै.	१५	३१	वा.	१८	२	कौ.	सम्पूर्ण					५/३९	६/२१
२८	श.	९	७	१९	ज्ये.	१०	४५	वि.	१५	५९	कौ.	९	५२	तै.	१९	४९	ध.	१०	४५	५/३९	६/२०
२९	र.	१०	९	१७	मू.	१३	१७	प्री.	१६	३४	ग.	८	४८	व.	२१	४८				५/३९	६/१९
३०	सो.	११	११	२१	पू.	१५	५५	आ.	१७	१३	वि.	१०	५०	व.	२३	५२	म.	२२	३२	५/४०	६/१८
३१	मं.	१२	१३	१८	उ.	१८	२४	सौ.	१७	४४	वा.	१२	५५	कौ.	१	४८				५/४०	६/१७
१	बु.	१३	१५	२	श्र.	२०	३९	शो.	१८	५	तै.	१४	४२	ग.	३	२४				५/४१	६/१६
२	गु.	१४	१६	२३	ध.	२२	२९	ऽगं.	१८	६	व.	१६	७	वि.	४	३५	कुं.	९	३४	५/४१	६/१५
३	शु.	१५	१७	१९	श.	२३	५४	सु.	१७	४७	व.	१७	५	वा.	५	१९				५/४१	६/१४

(शुद्ध) आश्विन कृष्ण पक्ष (४ सितम्बर से १७ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
४	श.	१	१७	४१	पू.	०	४९	धृ.	१७	४	कौ.	१७	३४	तै.	५	३२	मी.	१८	३६	५/४२	६/१३
५	र.	२	१७	३३	उ.	१	१२	शू.	१५	५८	ग.	१७	३२	व.	५	१५				५/४२	६/१२
६	सो.	३	१६	५६	रे.	१	७	गं.	१४	२६	वि.	१७	०	व.	४	३०	मे.	१	७	५/४२	६/११
७	मं.	४	१५	५१	अ.	०	३६	वृ.	१२	३३	वा.	१६	१	कौ.	३	१८				५/४३	६/१०
८	बु.	५	१४	२२	भ.	२३	४५	ध्रु.	१०	२०	तै.	१४	३७	ग.	१	४४	वृ.	५	२६	५/४३	६/९
९	गु.	६	१२	३३	कृ.	२२	३२	व्या	७/५	५०/६	व.	१२	५१	वि.	२३	४६				५/४३	६/८
१०	शु.	७	१०	२८	रो.	२१	६	व.	२	१०	व.	१०	४१	वा.	२१	३४				५/४३	६/७
११	श.	८	८	२१	मृ.	१९	३०	सि.	२३	९	कौ	८	२७	तै.	१९	१६	मि.	८	१८	५/४४	६/६
१२	र.	९	५/३	४६/११	आ.	१७	४९	व्य.	२०	३	ग.	६	५	व.	१६/३	५२/४६				५/४४	६/५
१३	सो.	११	०	५४	पु.	१६	९	व.	१६	५९	व.	१४	२७	वा.	१	१४	क.	१०	३४	५/४४	६/४
१४	मं.	१२	२२	३७	पु.	१४	३४	प.	१३	५८	कौ.	१२	५	तै.	२२	५६				५/४५	६/३
१५	बु.	१३	२०	३२	श्ले.	१३	९	शि.	११	५	ग.	९	५२	व.	२०	४८	सिं.	१२	९	५/४५	६/२
१६	गु.	१४	१८	४२	म.	१२	०	सि.	८	२४	वि.	७	५२	श.	१८	५६				५/४६	६/१
१७	शु.	३०	१७	१४	पू.	११	१०	सा.	५/३	५८/४६	च.	६	१०	ना.	१७/४	३३/४८	कं.	१७	३	५/४६	६/०

(अधिक) आश्विन शुक्ल पक्ष (१८ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक)

अ. ता.	व.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१८	श.	१	१६	९	उ.	१०	४२	शु.	२	१	व.	१६	१४	वा.	३	५३				५/४७	५/५८
१९	र.	२	१५	३२	ह.	१०	४०	ब्रं.	०	३६	कौ.	१५	३३	तै.	३	२६	तु.	२२	५३	५/४७	५/५६
२०	सो.	३	१५	२४	चि.	११	६	ऐं.	२३	३५	ग.	१५	२३	व.	३	३३				५/४७	५/५५
२१	मं.	४	१५	५०	स्वा.	१२	५	वै.	२३	०	वि.	१५	४३	व.	४	१०				५/४८	५/५४
२२	बु.	५	१६	४४	वि.	१३	३२	वि.	२२	४८	वा.	१६	३७	कौ.	५	१७	वृ.	७	१०	५/४८	५/५३
२३	गु.	६	१८	४	अनु.	१५	२७	प्री.	२२	५१	तै.	१७	५७	ग.	सम्पूर्ण					५/४९	५/५२
२४	शु.	७	१९	५२	ज्ये.	१७	४३	आ.	२३	१३	ग.	६	४९	व.	१९	४१	ध.	१७	४३	५/४९	५/५१
२५	श.	८	२१	५३	मू.	२०	१५	सौ.	२३	४६	वि.	८	४१	व.	२१	४०				५/५०	५/५०
२६	र.	९	२३	५८	पू.	२२	५२	शो.	०	२३	वा.	१०	४३	कौ.	२३	४६	म.	५	३०	५/५०	५/४९
२७	सो.	१०	१	५९	उ.	१	२५	गं.	०	५५	तै.	१२	४७	ग.	१	४८				५/५१	५/४८
२८	मं.	११	३	४४	श्र.	३	४३	सु.	१	१७	व.	१४	४२	वि.	३	३६				५/५१	५/४७
२९	बु.	१२	५	८	ध.	५	४०	धृ.	१	२२	व.	१६	१९	वा.	५	२	कुं.	१६	४१	५/५१	५/४६
३०	गु.	१३	सम्पूर्ण		श.	सम्पूर्ण		शू.	१	५	कौ.	१७	३३	तै.	६	३				५/५१	५/४५
१	शु.	१३	६	५	श.	७	१२	गं.	०	२८	ग.	१८	१९	व.	सम्पूर्ण		मी.	१	५८	५/५२	५/४४
२	श.	१४	६	३२	पू.	८	१४	वृ.	२३	२६	व.	६	३५	वि.	१८	३४				५/५२	५/४३
३	र.	१५	६	२७	उ.	८	४६	ध्रु.	२२	०	व.	६	३५	वा.	१९/६	२०/५				५/५३	५/४२

(अधिक) आश्विन कृष्ण पक्ष (४ अक्टूबर से १६ तक)

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मे.	स. उ.	सू. अ.
४	सो.	१	५/४	५३/६६	रे.	८	४८	व्य.	२०	११	तै.	१७	३७	ग.	५	८	मे.	८	१८	५/५३	५/४१
५	मं.	३	२	२३	अ.	८	२३	ह.	१८	२	व.	१९	२७	वि.	३	४६				५/५४	५/४०
६	बु.	४	१	३६	भ.	७	३६	व.	१५	३६	व.	१४	५५	वा.	२	४	वृ.	१३	१९	५/५४	५/३९
७	गु.	५	२३	३३	कृ.	६/५	२१/५	सि.	१२	५४	कौ.	१३	४	तै.	०	४				५/५५	५/३८
८	शु.	६	२१	१७	मृ.	३	३२	व्य.	९	५९	ग.	१०	५८	व.	२१	५१	मि.	१६	१९	५/५५	५/३७
९	श.	७	१८	५६	आ	१५	३	व.	६/३	५/५८	वि.	८	४१	व.	१९	३०				५/५६	५/३६
१०	र.	८	१६	३०	पु.	०	१२	शि.	०	४३	वा.	६	१७	कौ.	१७/३	३/५०	क.	१८	३८	५/५६	५/३५
११	सो.	९	१४	७	पु.	२२	३५	सि.	२१	३८	ग.	१४	३८	व.	१	३३				५/५६	५/३४
१२	मं.	१०	११	५३	श्ले.	२१	९	सा.	१८	४१	वि.	१२	२८	व.	२३	२६	सिं.	२१	९	५/५७	५/३३
१३	बु.	११	९	४८	म.	१९	५४	शु.	१५	५४	वा.	१०	२४	कौ.	२१	२९				५/५७	५/३३
१४	गु.	१२	८	०	पू.	१९	०	शु.	१३	२२	तै.	८	३५	ग.	१९	५०	कं.	०	५१	५/५७	५/३२
१५	शु.	१३	६/५	३३/४०	उ.	१८	२६	ब्रं.	११	७	व.	७	६	वि.	१८/६	३३/०				५/५८	५/३०
१६	श.	३०	४	५५	ह.	१८	१७	ऐं.	९	११	च.	१७	४१	ना.	५	२२				५/५८	५/२९

कार्तिक शुक्ल पक्ष (१६ नवम्बर से ३० तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१६	मं.	१	२०	४६	ऽनु.	५	५२	शो.	११	२२	कि	८	३०	ब.	२०	५६				६/१८	५/८
१७	बु.	२	२२	१२	ज्ये.	सम्पूर्ण		ऽगं	११	१२	बा.	६	४२	कौ.	२२	२६				६/१९	५/८
१८	गु.	३	०	१	ज्ये	७	५६	सु.	११	२८	तै.	११	१८	ग.	०	१२	ध.	७	५६	६/१९	५/७
१९	शु.	४	२	५	मू.	१०	२३	धृ.	११	४७	ब.	१३	१४	वि.	२	१५				६/१९	५/७
२०	श.	५	४	१९	पू.	१२	५६	शू.	१२	१९	ब.	१५	२०	बा.	४	२४	मं.	१६	३८	६/२०	५/६
२१	र.	६	६	२१	उ.	१५	३५	गं.	१२	५३	कौ.	१७	२७	तै.	६	३०				६/२१	५/६
२२	सो.	७	सम्पूर्ण		श्र.	१८	३	वृ.	१३	२०	ग.	१९	२५	व.	सम्पूर्ण					६/२२	५/६
२३	मं.	७	८	११	ध.	२०	१२	ध्रु.	१३	३३	व.	८	२०	वि.	२१	४	कुं.	७	७	६/२३	५/५
२४	बु.	८	९	३९	श.	२१	५६	व्या.	१३	२८	ब.	९	४८	बा.	२२	२५				६/२४	५/६
२५	गु.	९	१०	३८	पू.	२३	१४	ह.	१३	२	कौ.	१०	५०	तै.	२३	१	मी.	१६	५५	६/२४	५/५
२६	शु.	१०	११	७	उ.	०	१	व.	१२	१३	ग.	११	२१	व.	२३	२१				६/२५	५/५
२७	श.	११	११	६	रे.	०	१८	सि.	११	०	वि.	११	२२	व.	२३	७	मे.	०	१८	६/२६	५/६
२८	र.	१२	१०	३३	अं.	०	५	व्य.	९	२१	बा.	१०	५२	कौ	२२	२४				६/२६	५/६
२९	सो.	१३	९	३३	भ.	२३	२८	व.	७	३/३	तै.	९	५६	ग.	२१	१५	वृ.	५	१४	६/२७	५/६
३०	मं.	१५	६	२३	कृ.	२२	३२	शि.	२	२८	ब.	८	३४	वि.	१९	४३				६/२८	५/५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (१ दिसम्बर से १४ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१	बु.	१	४	२१	रो.	२१	१५	सि.	२८	३७	ब.	६	५२	बा.	१७/४	५३/५६				६/२८	५/८
२	गु.	२	२	६	मृ.	१६	४७	सा.	२०	३८	तै.	१५	४८	ग.	२	४२	मि.	८	३१	६/२९	५/५
३	शु.	३	२३	४९	आ.	१८	१०	शु.	१७	३१	ब.	१३	३२	वि.	०	२२				६/३०	५/५
४	श.	४	२१	४७	पु.	१६	३०	शु.	१५	११	ब.	११	११	बा.	२१	५६	क.	१०	५५	६/३१	५/८
५	र.	५	१९	९	पु.	१४	५२	ब्र.	११	१४	कौ.	८	४६	तै.	१९/६	३९/९				६/३२	५/६
६	सो.	६	१६	५८	श्ले.	१३	१९	ऐं.	६	१/१	ब.	१७	२४	वि.	४	२१	सिं.	१३	१९	६/३२	५/६
७	मं.	७	१५	०	म.	११	५८	वि	२	३१	ब.	१५	१९	बा.	२	२५				६/३३	५/६
८	बु.	८	१३	१८	पू.	१०	५४	प्री.	०	३	कौ	१३	३२	तै.	०	५६	कं.	१६	४२	६/३४	५/६
९	गु.	९	११	५७	उ.	१०	८	आ.	२१	५३	ग.	१२	२०	व.	२३	५०				६/३४	५/६
१०	शु.	१०	११	०	ह.	९	४७	सौ	२०	३	वि	११	२०	ब.	२३	४	तु.	२१	५०	६/३५	५/६
११	श.	११	१०	३२	चि.	९	५३	शो	१८	३५	बा.	१०	४६	कौ.	२२	४७				६/३५	५/७
१२	र.	१२	१०	३४	स्वा.	१०	३०	ऽगं	१९	३३	तै.	१०	४६	ग.	२३	०	वृ.	५	१९	६/३६	५/७
१३	सो.	१३	११	९	वि.	११	३६	सु.	१६	५५	व.	११	१५	वि.	२३	४५				६/३६	५/७
१४	मं.	१४	१२	३	ऽनु.	१३	११	धृ.	१६	३८	श.	१२	१४	च.	०	५३				६/३७	५/७
१५	बु.	३०	१३	४४	ज्ये.	१५	१२	शू.	१६	४२	ना.	१३	३२	किं.	२	२८	ध.	१५	१२	६/३८	५/८

आधुनिक कलात्मक सौन्दर्य व सौभाग्य
की प्रतीक
बनारसी साड़ियां
सिल्क प्रिन्ट • सेफोन • अरगंजा • साउथ सिल्क
व ड्रेस मेटिरियल
के
निर्माता व विक्रेता
राज सिल्क इन्डस्ट्रीज
ब्राँच आफिसः
कुंजगली- वाराणसी
प्रधान कार्यालयः
डी. १/३४, लाहोरी टोला
(विश्वनाथ मंदिर के पास)
वाराणसी
फोन नं. ६२४३२

माघ शुक्ल पक्ष (१५ जनवरी से २८ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१५	श.	१	११	३६	श्र.	सम्पूर्ण		व.	२३	३१	व.	११	१५	वा.	०	२२				६/४७	५/२७
१६	र.	२	१३	४३	श्र.	८	३६	सि.	२३	५२	को.	१३	२७	तै.	२	११	कुं.	२१	४८	६/४७	५/२८
१७	सो.	३	१५	३१	ध.	१०	५८	व्य.	२३	५९	ग.	१५	१५	व.	३	५८				६/४७	५/२९
१८	मं.	४	१६	५४	श.	१२	५५	व.	२३	४६	वि.	१६	४१	व.	५	१०				६/४७	५/२९
१९	बु.	५	१७	५०	पू.	१४	२७	प.	२३	१४	वा.	१७	३८	को.	५	५२	मी.	८	४	६/४७	५/३०
२०	गु.	६	१८	१४	उ.	१५	२८	शि.	२२	१६	तै.	१८	५	ग.	६	३				६/४७	५/३१
२१	शु.	७	१८	७	रे.	१५	५८	सि.	२०	५५	व.	१८	१	वि.	५	४४	मे.	१५	५८	६/४७	५/३१
२२	श.	८	१७	३०	अ.	१६	१	सा.	१९	९	व.	१७	२९	वा.	४	५९				६/४७	५/३२
२३	र.	९	१६	२६	भ.	१५	३४	शु.	१७	४	को.	१६	२५	तै.	३	४३	वृ.	२१	२२	६/४७	५/३३
२४	सो.	१०	१४	५८	कृ.	१४	४६	शु.	१४	३९	ग.	१५	०	व.	२	७				६/४६	५/३४
२५	मं.	११	१३	१०	रो.	१३	३९	ब्रं.	११	५९	वि.	१३	१४	व.	०	९	मि.	०	५७	६/४६	५/३४
२६	बु.	१२	११	८	मृ.	१२	१९	ऐं.	६/६	६/४	वा.	११	४	को.	२१	५९				६/४६	५/३५
२७	गु.	१३	६/६	५३/२३	आ.	१०	४२	वि.	२	५७	तै.	८	५२	ग.	१६/६	४३/२२	कं.	३	२८	६/४६	५/३६
२८	शु.	१५	४	१०	पु.	९	२	प्री.	२३	४५	वि.	१७	२२	व.	४	११				६/४५	५/३७

(शुद्ध) फाल्गुन कृष्ण पक्ष (२९ जनवरी से १२फरवरी तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२९	श.	१	१	४३	पु.	७/८	३२/४६	आ.	२०	३९	वा.	१५	१	कौ.	१	५२	सिं.	५	४६	६/४०	५/३७
३०	र.	२	२३	४२	म.	४	१९	सौ.	१७	३७	तै.	१२	४६	ग.	२३	४१				६/४४	५/३८
३१	सो.	३	२१	४६	पू.	३	६	शो.	१४	४५	व.	१०	४१	वि.	२१	४१				६/४४	५/३९
१	मं.	४	२०	६	उ.	२	१३	ऽगं.	१२	५	व.	८	४६	वा.	१९	५८	कं.	८	५२	६/४३	५/३९
२	बु.	५	१८	४८	ह.	१	४०	सु.	९	४३	कौ	७	१७	तै.	१८/६	३७/८				६/४३	५/४०
३	गु.	६	१७	५५	चि.	१	३२	धृ.	७/५	३८/५६	व.	१७	४०	वि.	५	२७	तु.	१३	३६	६/४२	५/४१
४	शु.	७	१७	३२	स्वा.	१	५४	गं.	४	३७	व.	१७	१४	वा.	५	१५				६/४२	५/४२
५	श.	८	१७	३७	वि.	२	४६	वृ.	३	४१	कौ	१७	१६	तै.	५	३५	वृ.	२०	३३	६/४१	५/४३
६	र.	९	१८	१७	ऽनु.	४	९	ध्रु.	३	१२	ग.	१७	५२	व.	६	२५				६/४१	५/४३
७	सो.	१०	१९	२३	ज्ये.	५	५८	व्या	३	०	वि.	१८	५८	व.	सम्पूर्ण		ध.	५	५८	६/४०	५/४४
८	मं.	११	२०	५७	मू.	सम्पूर्ण		ह.	३	१०	व.	७	४४	वा.	२०	३१				६/३९	५/४५
९	बु.	१२	२२	५२	मू.	८	११	व.	३	३३	कौ.	९	२७	तै.	२२	२५				६/३९	५/४६
१०	गु.	१३	०	५८	पू.	१०	३९	सि.	४	४	ग.	११	२८	व.	०	३१	म.	१७	१९	६/३८	५/४६
११	शु.	१४	३	८	उ.	१३	१७	व्य.	४	३६	वि.	१३	३५	श.	२	४१				६/३७	५/४७
१२	श.	३०	५	९	श्र.	१५	५१	व.	५	३	च.	१५	४१	ना.	४	४२	कुं.	५	२	६/३६	५/४७

(अधिक) फाल्गुन शुक्ल पक्ष (१३ फरवरी से २७ तक)

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१३	र.	१	सम्पूर्ण		ध.	१८	१३	प.	५	१६	कि.	१७	३५	व.	सम्पूर्ण					६/३६	५/४८
१४	सो.	१	६	५२	श.	२०	१६	शि.	५	१२	व	६	२७	वा.	१९	८				६/३५	५/४९
१५	मं.	२	८	१२	पू.	२१	५३	सि	४	४७	कौ.	७	४६	तै.	२०	१६	मी.	१५	२६	६/३५	५/४९
१६	बु.	३	९	५	उ.	२३	०	सा.	३	५८	ग.	८	४	व.	२०	५५				६/३४	५/५०
१७	गु.	४	९	२५	रे.	२३	३८	शु.	२	४५	वि.	९	६	व.	२१	३	मे.	२३	३८	६/३४	५/५१
१८	शु.	५	९	१३	अ.	२३	४७	शु.	१	८	वा.	८	५८	कौ.	२०	४१				६/३३	५/५१
१९	श.	६	८	३२	भ.	२३	२६	ब्रं.	२३	९	तै.	८	२२	ग.	१९	५१	वृ.	५	१५	६/३२	५/५२
२०	र.	७	७/५	२४/५५	कृ.	२२	४३	ऐ.	२०	५१	व.	७	१८	वि.	१८/८	३५/५२				६/३१	५/५३
२१	सो.	९	४	४	रो.	२१	३९	वै.	१८	१७	वि.	१६	५८	कौ.	४	४				६/३१	५/५३
२२	मं.	१०	१	५८	मृ.	२०	१८	वि.	१५	२८	तै.	१५	३	ग.	२	२	मि.	८	५८	६/३०	५/५४
२३	बु.	११	२३	४१	आ.	१८	४६	प्री.	१२	२८	व.	१२	५४	वि.	२३	४७				६/२९	५/५५
२४	गु.	१२	२१	१९	पु.	१७	८	आ.	६/६	२२/२९	व.	१०	३६	व	२१	२६	कं.	११	३२	६/२८	५/५५
२५	शु.	१३	१८	५६	पु.	१५	२६	शो.	३	६	कौ.	६	१	तै.	१९/५	५१				६/२७	५/५५
२६	श.	१४	१६	३६	श्ले.	१३	४८	गं.	०	३	व.	१६	४०	वि.	३	३४	सिं.	१३	४८	६/२६	५/५६
२७	र.	१५	१४	२६	म.	१२	१९	सु	२१	८	व.	१४	२७	वा.	१	२७				६/२५	५/५७

(अधिक) फाल्गुन कृष्ण पक्ष (२८ फरवरी से १४ मार्च तक)

अ. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मे.	सू. उ.	सू. अ.
२८	सो.	१	१२	२९	पू.	११	३	धृ.	१८	२६	कौ	१२	२६	तै.	२३	४१	कुं.	१६	४९	६/२५	५/५७
१	मं.	२	१०	५१	उ.	१०	६	शू.	१५	५९	ग.	१०	५५	व.	२२	१६				६/२४	५/५८
२	बु.	३	९	३३	ह.	९	२७	गं.	१३	५०	वि.	९	३६	व.	२१	६	तु.	२१	११	६/२३	५/५८
३	गु.	४	८	४१	चि.	९	१४	वृ.	१२	०	वा.	८	४१	कौ	२०	२९				६/२२	५/५९
४	शु.	५	८	१७	स्वा.	९	२९	ध्रु.	१०	३५	तै.	८	१५	ग.	२०	१८	वृ.	४	४	६/२१	५/५९
५	श.	६	८	२४	वि.	१०	१४	व्या.	९	३३	व.	८	१९	वि.	२०	३७				६/२०	६/०
६	र.	७	९	३	अनु.	११	३१	ह.	८	५६	व.	८	५४	वा.	२१	२५				६/१९	६/०
७	सो.	८	१०	९	ज्ये.	१३	१४	व.	८	४०	कौ.	९	५८	तै.	२२	४४	धं.	१३	१४	६/१८	६/१
८	मं.	९	११	४३	मू.	१५	२२	सि.	८	४५	ग.	११	२९	व.	०	२५				६/१७	६/१
९	बु.	१०	१३	३६	पू.	१७	४८	व्या.	९	५	वि.	१३	१७	व.	२	२२	म.	०	२७	६/१६	६/२
१०	गु.	११	१५	४२	उ.	२०	२४	व.	९	३६	बा.	१५	२६	कौ.	४	३८				६/१५	६/२
११	शु.	१२	१७	४९	श्र.	२३	०	प.	१०	११	तै.	१७	५०	ग.	सम्पूर्ण					६/१४	६/३
१२	श.	१३	१९	४६	ध.	१	२५	शि.	१०	४२	ग.	९	४२	व.	१९	३५	कुं.	१२	१२	६/१३	६/३
१३	र.	१४	२१	२८	श.	३	३२	सि.	११	२	वि.	८	२९	श.	२१	१८				६/१२	६/४
१४	सो.	३०	२२	४३	पू.	५	१४	सा.	११	५	च	९	५७	ना.	२२	३७	मी.	२२	४९	६/११	६/४

(शुद्ध) फाल्गुन शुक्ल पक्ष (१५ मार्च से २८ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१५	मं.	१	२३	३३	उ.	सम्पूर्ण		शु.	१०	४७	कि.	११	२	व.	२३	२७				६/१०	६/५
१६	बु.	२	२३	४९	उ.	६	२८	शु.	१०	७	वा.	११	३७	कौ.	२३	४८				६/९	६/५
१७	गु.	३	२३	३४	रे.	७	१२	ब्रं.	९	२	तै.	११	४२	ग.	२३	३७	मे.	७	१२	६/८	६/६
१८	शु.	४	२२	५०	अ.	७	२६	ऐं.	७/५	३३/४३	व.	११	१७	वि.	२२	५८				६/७	६/६
१९	श.	५	२१	३९	भ.	७	१२	वि.	३	३१	व.	१०	२४	वा.	२१	५१	वृ.	१३	२	६/६	६/७
२०	र.	६	२०	५	कृ.	६/८	३२/३४	प्री.	१	३	कौ.	९	६	तै.	२०	२१				६/५	६/७
२१	सो.	७	१८	११	मृ.	४	१६	आ.	२२	१९	ग.	७	२६	व.	१८/५	३१/३८	मि.	१६	५५	६/४	६/७
२२	मं.	८	१६	१	आ.	२	४६	सौ.	१९	२२	व.	१६	२३	वा.	३	१६				६/२	६/८
२३	बु.	९	१३	४३	पु.	१	८	शो.	१६	१९	कौ.	१४	८	तै.	०	५६	क.	१९	३३	६/१	६/८
२४	गु.	१०	११	१९	पु.	२३	२७	गं.	१३	१२	ग.	११	४३	व.	२२	३२				६/०	६/९
२५	शु.	११	८	५४	श्ले.	२१	४९	सु.	१०	५	वि.	९	१९	व.	२०	१०	सि.	२१	४९	५/५९	६/९
२६	श.	१२	९/४	३३/२२	म.	२०	१७	धृ.	७/४	१/८	वा.	७	०	कौ.	१०/४	५४/४९				५/५८	६/१०
२७	र.	१४	२	२४	पू.	१८	५७	गं.	१	२२	ग.	१५	४८	व.	२	४८	कं.	०	४२	५/५७	६/१०
२८	सो.	१५	०	४४	उ.	१७	५४	वृ.	२२	५१	वि.	१३	५७	व.	१	९				५/५६	६/१०

चैत्र कृष्ण पक्ष (२९ मार्च से १३ अप्रैल तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२९	मं.	१	२३	२६	ह.	१७	११	ध्रु.	२०	३७	वा.	१२	२५	कौ.	२३	४५	तु.	५	२	५/५५	६/११
३०	बु.	२	२२	३३	चि.	१६	५२	व्या	१८	४४	तै.	११	१६	ग.	२२	४८				५/५४	६/११
३१	गु.	३	२२	९	स्वा.	१७	२	ह.	१७	१३	व.	१०	३५	वि.	२२	२१				५/५३	६/११
१	शु.	४	२२	१७	वि.	१७	४१	व.	१६	६	व.	१०	२२	वा.	२२	२४	वृ.	११	३१	५/५२	६/१२
२	श.	५	२२	५५	ऽनु.	१८	५१	सि.	१५	२४	कौ	१०	४१	तै.	२२	५८				५/५१	६/१२
३	र.	६	०	०	ज्ये.	२०	२८	व्य.	१५	४	ग.	११	३०	व.	०	२	ध.	२०	२८	५/५०	६/१२
४	सो.	७	१	३३	मू.	२२	३२	व.	१५	५	वि.	१२	४७	व.	१	३३				५/४९	६/१३
५	मं.	८	३	२५	पू.	०	५४	प.	१५	२५	वा.	१४	२८	कौ.	३	२३				५/४८	६/१४
६	बु.	९	५	२८	उ.	३	२९	शि.	१५	५६	तै.	१९	२४	ग.	५	२६	म.	७	३२	५/४७	६/१४
७	गु.	१०	सम्पूर्ण		श्र.	सम्पूर्ण		सि.	१६	३३	व.	१८	२८	वि.	सम्पूर्ण					५/४६	६/१५
८	शु.	१०	७	३२	श्र.	६	५	सा.	१७	६	वि.	७	३०	व.	२०	२८	कुं.	१९	१९	५/४५	६/१५
९	श.	११	९	२७	ध.	८	३३	शु.	१७	३०	वा.	९	२६	कौ.	२२	१६				५/४४	६/१६
१०	र.	१२	११	५	श.	१०	४५	शु.	१७	३९	तै.	११	६	ग.	२३	४४				५/४३	६/१६
११	सो.	१३	१२	१८	पू.	१२	३३	ब्रं.	१७	२७	व.	१२	२२	वि.	०	५४	मी.	६	६	५/४२	६/१७
१२	मं.	१४	१३	४	उ.	१३	५५	ऐं.	१६	५५	श.	१३	२५	च.	१	३४				५/४१	६/१७
१३	बु.	३०	१३	१८	रे.	१४	४५	वै.	१५	५६	ना.	१३	४३	कि.	१	३६	मे.	१४	४५	५/४०	६/१८

॥ श्रीः ॥

ग्रहण सम्बंधी विवेचन

वर्तमान संवत् २०३९ में २ ग्रहण काशी में हैं। १ खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण, १—खग्रास चन्द्र ग्रहण है। उपरोक्त दोनों ही ग्रहण भारत में दिखाई देगें। अहमदाबाद, इलाहाबाद, भोपाल, बम्बई, कलकत्ता, चण्डीगढ़, देहरादून, दिल्ली, हरिद्वार, लखनऊ, नागपुर, उज्जैन, आदि शहरों में स्पर्श और मोच दोनों दिखाई देगें।

अतः आस्तिक एवं धार्मिक जनता को पूर्ण रूप से इसका मान करना चाहिये; विवरण नीचे दिया जा रहा है।

सूर्य ग्रहण—मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस, बुधवार, दिनांक १५ दिसम्बर १९८२ को अपराह्न में स्टैंडर्ड समय ३-३३ पर मूल नक्षत्र एवं धन राशि पर लगेगा।

(ग्रस्तोदित) खग्रास चन्द्रग्रहण—मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा, गुरुवार दि० ३० दिसम्बर १९८२ को अपराह्न ३-२० पर आर्द्रा नक्षत्र, मिथुन राशि पर लगेगा। यह संपूर्ण भारत में दिखाई देगा।

दोनों ग्रहणों की प्रचलित समयानुसार तालिका

काशी में खण्ड ग्रास, सूर्य ग्रहण मार्ग शीर्ष कृष्ण अमावस्या, बुधवार, दि० १५ दिसम्बर १९८२	काशी में खग्रास, चन्द्र ग्रहण मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा, गुरुवार, दि० ३० दिसम्बर १९८२	मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस के सूर्य-ग्रहण का फल मूल नक्षत्र एवं धनराशि वालों को कष्टकारक है		मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार का ग्रहण का फल आर्दा नक्षत्र मिथुन राशिवालों को कष्टकारण है।
ग्रहण का समय प्रचलित मान्य (स्टैंडर्ड) समय से है।	ग्रहण का समय प्रचलित मान्य स्टैंडर्ड समय से है	फल	राशि	फल
स्पर्श — दिन ३-३३	स्पर्श — दि० ३-२०	मान नाश	मेष	लक्ष्मी प्राप्ति
मध्य — दिन ४-१९	मध्य — दि० ४-५९	मृत्यु समान कष्ट	वृष	हानि
मोच — सायं ५-१	मोच — सायं ६-३७	स्त्री कष्ट	मिथुन	घात
इस ग्रहण की छाया १५ दिसम्बर प्रातः ३ बजे से लगेगी।	इस ग्रहण की छाया प्रातः ६-२० से लगेगी।	सुख	कर्क	खर्च
जिन स्थानों पर ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण हो रहा है वह अगले सूर्योदय तक ग्रहण की छाया (वेध) रहेगी।		चिन्ता	सिंह	लाभ
		व्यथा	कन्या	सुख
		लक्ष्मी प्राप्ति	तुला	मान नाश
		हानि	वृश्चिक	मृत्यु समान कष्ट
		घात	धन	स्त्री कष्ट
		खर्च	मकर	सुख
		लाभ	कुम्भ	चिन्ता
		सुख	मीन	व्यथा

उपरोक्त दोनों ही ग्रहण काल की छाया में बालक, वृद्ध, रोगी को छोड़कर धार्मिक जनता को भोजनादि नहीं करना चाहिये।

सम्वत् २०३६ के नवीन आजीवन सदस्यों की नामावली

आजीवन सदस्यता शुल्क २५) रु० (पचीस रुपए) मात्र है।

१—श्रीमती मीना अग्रवाल
धर्म-पत्नी, श्री चन्द्रभान अग्रवाल
१८/१५७ पक्की सराय; अलीगढ़

२—श्रीमती रजनी कपूर
धर्म-पत्नी, श्री बद्री विशाल कपूर
१०/१४६ पक्की सराय, अलीगढ़

३—श्रीमती ओऽमवती
धर्म-पत्नी, श्री श्रीप्रकाश
घन्टे वाला भवन, पक्की सराय, अलीगढ़

४—श्री मोहनलाल खत्री
प्लाट नं० १६, दीन दयाल नगर,
नवाबगंज (खोंजवा), वाराणसी

५—श्री नरेन्द्र नाथ मेढ़
कैलाश भवन, लंका, वाराणसी

६—श्री अनुपम चोपड़ा माधव प्रसाद चोपड़ा
रज्जू शाह लेन, रमना
मुहाल०—मुजफ्फरपुर (बिहार)

७—श्री बाबू राम कपूर
१/१, शिव क्रिष्टो दां लेन
कलकत्ता-७००००७

८—श्री दीनानाथ शर्मा, वकील
६, चोर बगान लेन,
कलकत्ता-७००००७

९—श्री विश्वनाथ टण्डन
पी-८, कलाकार स्ट्रीट
कलकत्ता-७००००७

१०—श्री राम टण्डन C/o होनेस्टी इलेक्ट्रिक कं०
२२ नं०, रवीन्द्र सारणी
कलकत्ता-७००००७

११—श्री जगदीश मेहरा
रवीन्द्र सारणी
कलकत्ता-७००००७

१२—श्री राम विलास
१३/८६, पशुपतेश्वर, वाराणसी

१३—श्री जगदीश रांजी
बी० ३८/१ जी, बिरदोपुर,
महमूरगंज, वाराणसी

१४—श्री रमेश चन्द भल्ला, एडवोकेट
बी-१७३, निराला नगर, लखनऊ

१५—डा० श्री अनन्त चरन
बी० १७५, ज्ञान निवास,
निराला नगर, लखनऊ

१६—श्री के० सी० गोयल
३, आर्यन महल
ग्राउन्ड फ्लोर, सी० रोड
मैरीन ड्राईव, बम्बई-४०००२०

१७—श्रीमती विद्या टंडन
२ ए, भारा बारी तल्ला लेन,
कलकत्ता-७०० ००२

१८—श्री सोहन लाल मिश्र
मछरहट्टा, खतरैवा
दाऊजी के मन्दिर के पास, जौनपुर

२०—श्री विभूति भूषण वर्मन
लक्खी चौतरा, वाराणसी

२१—श्री बद्री प्रसाद मेहरा
२२ ए, विवेकानन्द नगर,
जगतगंज, वाराणसी

२२—श्री कार्तिक प्रसाद मेहरा
बी० टी० हाउस, एस०पी० वर्मा रोड,
पटना

२३—श्री सत्य नारायण खन्ना
८१, यूरोपियन कालोनी,
मुगलसराय

२४–श्री हरिहर लाल बर्मन
शारदा आईसक्रीम फैक्टरी
दिल्ली दरवाजा, फैजाबाद

२५–श्री शम्भूनाथ सेठ
ईस्ट ऐण्ड वेस्ट कोर्ट
१८ नम्बर फ्लैट-४-फोर फ्लोर
पुलावा, बम्बई

२६–पं० अनंत प्रसाद जी शर्मा
शर्मा मेडिकल स्टोर्स
जमालपुर (मुंगेर)

२७–श्रीमती कान्ता देवी जटिया
२५, राजा संतोष रोड
अलीपुर, कलकत्ता-२७

२८–श्री कैलाशनाथ मेहरोत्रा
के० १६/५, उचवां गली, राज मन्दिर
वाराणसी

२९–श्री प्रतापचन्द गर्ग
मारफत–लखमीचन्द गोटेवाले
किनारी बाजार, आगरा-३

३०–पं० श्री भगवत दयाल भट्ठरिये (भगत)
१८/२६७ भैरो पली,
माईथान, आगरा।

३१–श्री कृष्ण मोहन पाठक
२२ चाहमीर, बदायूँ

३२–श्री एस० के० जेतली एस० ए०
मीटीयर प्राइवेट लि०
१८ बी, नीलाम्बर
शेक्सपियर सरनी
कलकत्ता-७०००१७

३३–पं० हरनाथ जी मोहले वैद्य
बुन्देलखण्डी मोहाल
मिर्जापुर

३४–श्री धनीराम खन्ना
शिवानी प्रेस, विष्णुपुरी
कानपुर

३५–श्री रामप्रकाश खन्ना
अलका बिल्डिंग, "सी०" रोड, चर्च गेट
बम्बई-४०००२०

३६–श्री अजय कुमार शर्मा, एम० ए०
स्टेशन रोड, सदर अस्पताल के सामने
जौनपुर

३७–श्री विनोद नारायण चढ्ढा
के० एम० सूगर मिल
मोती नगर, मसौधा, फैजाबाद

वारुणी पर्व का निर्णय

❀ स्कान्द में वारुणी–महा वारुणी–महा महा वारुणी का योग ❀

"वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गङ्गायां यदि लभ्येत सूर्यं ग्रहशतैः समा।
शनिवार समायुक्ता सा महा वारुणी स्मृता। गङ्गायां यदि लभ्येत कोटि सूर्यं ग्रहैः समा॥"

शुभ योग समा युक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महा महेति विख्याता त्रिकोटि कुल मुद्धरेत॥

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र के योग से इसका वारुणी नाम है। इसमें गङ्गा स्नान करने से ग्रहणादि पर्व के समान फल होता है। इसमें शनिवार के योग होने से महा वारुणी, शुभ योग, शनिवार और शतभिषा के साथ हो तो महा महा वारुणी कहलाती है। इसमें वरुणा गङ्गा संगम पर स्नान-दान करने से तीन करोड़ कुल का उद्धार हो जाता है।

इस वर्ष चैत्र कृष्ण १३ को शनिवार तथा शतभिषा नक्षत्र एवं शुभयोग, में से किसी की प्राप्ति न होने से उपरोक्त वचनानुसार इस वर्ष में वारुणी पर्व नहीं होगा।

महाभारत में वारुणी योग को दिन में हो प्रशस्त बतलाया है इसलिये उसका स्नान रात्रि में न करें–
'दिवेव योगः शस्तोऽयं न तु रात्रौ कदाचन।'

श्री सारस्वत सभा काशी का ३५वाँ वार्षिकोत्सव

सभा के संरक्षक संत छोटे जी महाराज वार्षिकोत्सव पर सार गर्भित भाषण करते हुए।

"जातिरत्न" पं० जगत नारायण जी शर्मा मोहले मुख्य अतिथि पद से भाषण करते हुए अध्यक्ष "सारस्वत रत्न" पं० चन्द्रकुमार जी त्रिक्खा, वरिष्ठ संपादक 'आज' दैनिक एवं श्री कालिया जी तथा डा० श्री दत्ता जी के साथ

॥ श्री हरिः ॥

बिना सभा की अनुमति के तिथि-पर्व-निर्णय की प्रतिलिपि न करें।

तिथि पर्व-निर्णय संवत् २०३९ शाके १९०४

ईस्वीय सन् १९८२-८३

॥ वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात् ॥

[श्री सूर्य उत्तरायण] (चैत्र शुक्ल पक्ष, ता० २६ मार्च से ८ अप्रैल तक) (वसन्त ऋतु)

[राष्ट्रीय ता० ५ चैत्र से १८ तक]

प्रतिपदा	शुक्रवार	२६ मार्च	चन्द्र दर्शन, युवा नाम संवत्सर, नववर्षारम्भ, वसन्त नवरात्र प्रारंभ, कलश स्थापन प्रातः से तथा ११/३७ से १२-२५ तक अभिजित मुहूर्त्त में, पञ्चाग दान एवं वार्षिक फल सुनना, तथा पंचक समाप्ति रात १-१८ पर।
तृतीया	रविवार	२८ मार्च	गणगौर तीज, गौरी पूजन।
सप्तमी	बुधवार	३१ मार्च	नवरात्र की सप्तमी का व्रत एवं रेवती के सूर्य दिन १/१० पर तथा श्री अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा रात १-५० के बाद से।
अष्टमी	गुरुवार	१ अप्रैल	अष्टमी पूजन जोत जगाना अष्टमी वालों के लिये तथा श्री अन्नपूर्णा जी की परिक्रमा रात ११-२८ तक।
नवमी	शुक्रवार	२ अप्रैल	नवमी पूजन, जोत जगाना नवमी वालों के लिये, तथा देवी विसर्जन अष्टमी वालों के लिये, एवं श्री रामनवमी व्रत सबके लिये।
दशमी	शनिवार	३ अप्रैल	देवी विसर्जन नवमी वालों के लिये तथा नवरात्र समाप्ति।
एकादशी	रविवार	४ अप्रैल	श्री कामदा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	सोमवार	५ अप्रैल	सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रतारंभ।
चतुर्दशी	बुधवार	७ अप्रैल	श्री हाटकेश्वर जयन्ती, एवं पूर्णिमा व्रत की दिन में २-४७ के बाद।
पूर्णिमा	गुरुवार	८ अप्रैल	पूर्णिमा स्नान-दान की दिन में २-५० तक तथा वैशाख स्नान-दान-नियमादि प्रारम्भ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख कृष्ण पक्ष ता० ९ अप्रैल से २३ अप्रैल तक) [वसन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १९ चैत्र से ३ वैशाख तक]

तृतीया	रविवार	११ अप्रैल	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-२।
पंचमी	मंगलवार	१३ अप्रैल	अश्विनी के सूर्य, तथा मेष की संक्रान्ति रात्रि २-४० पर।
षष्ठी	बुधवार	१४ अप्रैल	सतुआ संक्रांति का पुण्य काल प्रातः से ६-४० तक हरिद्वार एवं काशी में अस्सी संगम पर स्नान-दान का विशेष फल तथा दादी समास का पूड़ा।

सप्तमी	गुरुवार	१५ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना।
अष्टमी	शुक्रवार	१६ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी पूजन-दर्शन (बासी खाना)।
दशमी	रविवार	१८ अप्रैल	पंचक प्रारम्भ रात्रि ८-० से।
एकादशी	मंगलवार	२० अप्रैल	वरुथिनी एकादशी व्रत सबके लिए।
द्वादशी	बुधवार	२१ अप्रैल	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	गुरुवार	२२ अप्रैल	मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	शुक्रवार	२३ अप्रैल	पंचक समाप्ति दिन में ६-६ पर।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख शुक्ल पक्ष ता० २४ अप्रैल से ७ मई तक) [वसन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ४ वैशाख से १७ वैशाख तक]

द्वितीया	रविवार	२५ अप्रैल	श्री चन्द्र दर्शन।
तृतीया	सोमवार	२६ अप्रैल	अक्षय तृतीया (सत्तू घटादि दान)।
चतुर्थी	मंगलवार	२७ अप्रैल	भरणी के सूर्य सायं ६-५७ पर।
षष्टी	गुरुवार	२६ अप्रैल	श्री गंगा सप्तमी।
एकादशी	सोमवार	३ मई	मोहिनी एकादशी व्रत स्मार्तों के लिये।
द्वादशी	मंगलवार	४ मई	मोहिनी एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
त्रयोदशी	बुधवार	५ मई	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	गुरुवार	६ मई	श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत, नृसिंह जयन्ती।
पूर्णिमा	शुक्रवार	७ मई	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से तथा वैशाख स्नान-दान-नियमादि समाप्ति।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (जेष्ठ कृष्ण पक्ष ता० ८ मई से २३ मई तक) [वसन्त ऋतु ता० १४ मई रात से ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १८ वैशाख से २ जेष्ठ तक]

तृतीया	मंगलवार	११ मई	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत/चन्द्रोदय रात्रि ६/३१ एवं कृत्तिका के सूर्य दिन में १-४८ पर।
षष्ठी	शुक्रवार	१४ मई	वृष की संक्रांति रात्रि १२-५६ पर।
सप्तमी	शनिवार	१५ मई	पंचक प्रारम्भ रात्रि ३-३० से तथा श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना।
अष्टमी	रविवार	१६ मई	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना)
एकादशी	बुधवार	१६ मई	अपरा एकादशी व्रत सबके लिये, तथा श्री भद्रकाली एकादशी, श्री भद्रकाली जी का महोत्सव।

द्वादशी	गुरुवार	२० मई	पक्ष प्रदोष व्रत, तथा पंचक समाप्ति सायं ५-७ पर।
त्रयोदशी	शुक्रवार	२१ मई	मास शिवरात्रि व्रत।
चतुर्दशी	शनिवार	२२ मई	वट सावित्री व्रत पूजन तथा (पकौड़ों की अमावस)।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ता० २४ मई से ६ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ३ जेष्ठ से १६ जेष्ठ तक]

प्रतिपदा	सोमवार	२४ मई	श्री चन्द्र दर्शन।
द्वितीया	मंगलवार	२५ मई	रोहिणी के सूर्य दिन में ११-१३ पर।
दशमी	मंगलवार	१ जून	श्री गंगा दशहरा।
एकादशी	बुधवार	२ जून	निर्जला एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	गुरुवार	३ जून	पक्ष प्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	रविवार	६ जून	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (आषाढ़ कृष्ण पक्ष ता० ७ जून से २१ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १७ जेष्ठ से ३१ जेष्ठ तक]

द्वितीया	मंगलवार	८ जून	मृगशिरा के सूर्य दिन में १०-४० पर।
चतुर्थी	गुरुवार	१० जून	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि ९-५२ पर।
पंचमी	शनिवार	१२ जून	पंचक प्रारंभ दिन में ११-७ से।
सप्तमी	सोमवार	१४ जून	श्री शीतला अष्टमी का (बासी बनाना)।
अष्टमी	मंगलवार	१५ जून	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना) एवं मिथुन की संक्रांति दिन में ११-० पर।
नवमी	बुधवार	१६ जून	पंचक समाप्ति रात्रि १-१४।
एकादशी	गुरुवार	१७ जून	योगिनी एकादशी व्रत स्मार्तों के लिये।
द्वादशी	शुक्रवार	१८ जून	योगिनी एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
त्रयोदशी	शनिवार	१९ जून	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र-सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रतारंभ एवं मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	सोमवार	२१ जून	सोमवती अमावस, कपिलधारा तीर्थ (काशी में) एवं चन्द्रकूप (सिद्धेश्वरी मोहाल) चन्द्रेश्वर के समीप पिण्डदान, स्नान-दानादि कार्य, गया श्राद्ध के समान फल की प्राप्ति होती है।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (आषाढ़ शुक्ल पक्ष ता० २२ जून से ६ जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय १ आषाढ़ से १५ आषाढ़ तक]

प्रतिपदा	मंगलवार	२२ जून	श्री चन्द्र दर्शन तथा आर्द्रा के सूर्य दिन में ११-३८ पर।
द्वितीया	बुधवार	२३ जून	रथयात्रा।
सप्तमी	रविवार	२७ जून	भानु सप्तमी पर्व, स्नान-दान का विशेष फल।
एकादशी	गुरुवार	१ जुलाई	विष्णु शयनी एकादशी व्रत स्मार्तों के लिये तथा चातुर्मास व्रत, स्नान-दान-नियम प्रारम्भ।
द्वादशी	शुक्रवार	२ जुलाई	विष्णु शयनी एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
द्वादशी	शनिवार	३ जुलाई	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र-सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रतारंभ।
चतुर्दशी	सोमवार	५ जुलाई	पुनर्वसु के सूर्य दिन में १-२० पर, पूर्णिमा व्रत की दिन में ६-५३ से।
पूर्णिमा	मंगलवार	६ जुलाई	पूर्णिमा स्नान-दान की दिन में ११-५५ तक तथा गुरु पूर्णिमा, गुरु एवं व्यास पूजन।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (श्रावण कृष्ण पक्ष ता० ७ जुलाई से २० जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु ता० १६ से वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १६ आषाढ़ से २६ आषाढ़ तक]

तृतीया	शुक्रवार	६ जुलाई	पञ्चक प्रारंभ सायं ६-४४ से तथा श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ६-१४।
षष्ठी	सोमवार	१२ जुलाई	श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
अष्टमी	बुधवार	१४ जुलाई	पंचक समाप्ति दिन में ६-२१ पर तथा बुधाष्टमी पर्व में स्नान-दान एवं मूंग का दान, मूंग के भोजन का विशेष फल।
दशमी	शुक्रवार	१६ जुलाई	कर्क की संक्रांति रात्रि २-३० पर तथा सूर्य दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारंभ तथा दैत्यों का दिन एवं देवताओं की रात्रि, बाबा लालू जसरायजी का महोछा।
एकादशी	शनिवार	१७ जुलाई	कामदा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	रविवार	१८ जुलाई	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदयी	सोमवार	१६ जुलाई	श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
अमावस	मंगलवार	२० जुलाई	पुष्य के सूर्य दिन में २-४८ पर तथा हरियाली अमावस।
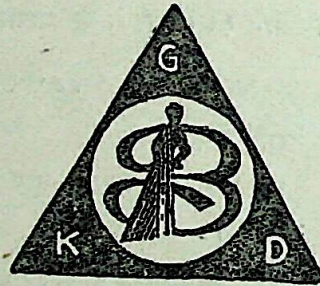
[श्री सूर्य दक्षिणायन] (श्रावण शुक्ल पक्ष ता० २१ जुलाई से ४ अगस्त) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ३० आषाढ़ से १३ श्रावण तक]

द्वितीया	गुरुवार	२२ जुलाई	श्री चन्द्र दर्शन ।
तृतीया	शुक्रवार	२३ जुलाई	ठकुरानी तीज ।
पंचमी	रविवार	२५ जुलाई	श्री नाग पञ्चमी (नाग पचैयाँ), ऋग्वेदियों की श्रावणी ।
षष्ठी	सोमवार	२६ जुलाई	श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक ।
सप्तमी	मंगलवार	२७ जुलाई	महात्मा गोस्वामी श्री तुलसीदास की जयन्ती ।
अष्टमी	बुधवार	२८ जुलाई	बुधाष्टमी पर्व में स्नान-दान एवं मूँग का दान, मूंग-भोजन का विशेष फल तथा विंध्याचल माता की अष्टमी की जोत जगाना एवं पूजन करना ।
एकादशी	शनिवार	३१ जुलाई	पुत्रदा एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	रविवार	१ अगस्त	विष्णुजी पर पवित्रा चढ़ाना ।
त्रयोदशी	सोमवार	२ अगस्त	श्रावण सोम प्रदोष एवं पक्ष प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना तथा श्री मूलो माता जी का महोछा ।
चतुर्दशी	मंगलवार	३ अगस्त	श्री चण्डिका जी का महोछा, तथा आश्लेषा के सूर्य दिन में ३-१२ पर, शिवजी को पवित्रा चढ़ाना ।
पूर्णिमा	बुधवार	४ अगस्त	पूर्णिमा स्नान-दान एवं व्रत की तथा यजुर्वेदियों की श्रावणी (उपाकर्म) प्रातः से एवं रक्षाबन्धन (रखड़ी) दिन में २-१२ भद्रा के बाद से ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रप्रद कृष्ण पक्ष ता० ५ अगस्त से १९ अगस्त तक) [वर्षा ऋतु]

(राष्ट्रीय ता० १४ श्रावण से २८ श्रावण तक)

प्रतिपदा	गुरुवार	५ अगस्त	पंचक प्रारम्भ रात्रि २-१५ से ।
द्वितीया	शनिवार	७ अगस्त	कज्जली तीज (कजरी तीज) ।
तृतीया	रविवार	८ अगस्त	अंगार की बहुला संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-६ पर ।
पंचमी	सोमवार	९ अगस्त	भाई भिक्षा ।
षष्ठी	मंगलवार	१० अगस्त	पंचक समाप्ति सायं ५-२१ पर, ललही छठ (हल षष्ठी) तथा ठंडरी का (बासी बनाना) ।
सप्तमी	बुधवार	११ अगस्त	ठंडरी पूजन (बासी खाना) ।
अष्टमी	गुरुवार	१२ अगस्त	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत सबके लिये तथा जंडी पूजन जेतली सारस्वत एवं मेहरे खत्रियों में प्रचलित ।

नवमी	शुक्रवार	१३ अगस्त	दधिकांदो, श्री कृष्ण जन्माष्टमी केवल रोहिणी नक्षत्र उपासक वैष्णवों के लिये।
एकादशी	रविवार	१५ अगस्त	जया एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	सोमवार	१६ अगस्त	गाँवच्छा (गाय बछड़े का पूजन) तथा सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र-सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रतारंभ।
त्रयोदशी	मंगलवार	१७ अगस्त	मघा के सूर्य एवं सिंह की संक्रांति दिन में १-५६ पर, तथा मघा सिंहा प्रारंभ दिन में १-५६ से, मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	गुरुवार	१९ अगस्त	कुशोत्पाटिनी अमावस (कुशालाना) ॐ हुं फट् इस मन्त्र से कुशा ग्रहण करना।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रपद शुक्ल पक्ष ता० २० अगस्त से ३ सितम्बर तक) [वर्षा ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० २९ श्रावण से ११ भाद्रपद तक]

प्रतिपदा	शुक्रवार	२० अगस्त	श्री चन्द्रदर्शन तथा तीज की सर्घी।
तृतीया	शनिवार	२१ अगस्त	हरतालिका तृतीया (बड़ी तीज) तथा शिवाजी का महोत्सव।
चतुर्थी	रविवार	२२ अगस्त	हस्त नक्षत्र में प्रातः से सामवेदियों की श्रावणी एवं ढेला चौथ, चन्द्र-दर्शन निषेध, चन्द्रास्त रात्रि ८-५९।
पंचमी	सोमवार	२३ अगस्त	ऋषि पंचमी व्रत (ऋषि पूजन)।
षष्ठी	मंगलवार	२४ अगस्त	लोलारक छठ, काशी में लोलारक कुण्ड में स्नान एवं सूर्य-पूजन-दर्शन।
सप्तमी	बुधवार	२५ अगस्त	श्री महालक्ष्मी व्रत का आरंभ, धागा बांधना सप्तमी वालों के लिये।
अष्टमी	गुरुवार	२६ अगस्त	श्री महालक्ष्मी व्रत का आरंभ, धागा बांधना अष्टमी वालों के लिये।
एकादशी	सोमवार	३० अगस्त	पद्मा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	मंगलवार	३१ अगस्त	बामन द्वादशी, भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण-दोष-निवारण के लिये व्रतारंभ एवं पूर्वा फाल्गुनी के सूर्य दिन में १०-२१ पर।
चतुर्दशी	गुरुवार	२ सितम्बर	श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत एवं पूर्णिमा व्रत की दिन में ४-२३ के बाद, तथा पंचक प्रारम्भ दिन में ९-३४ से।
पूर्णिमा	शुक्रवार	३ सितम्बर	पूर्णिमा स्नान-दान की तथा पूर्णिमा का श्राद्ध एवं अथर्ववेदियों की श्रावणी (उपाकर्म), तथा महालय आरंभ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (शुद्ध आश्विन कृष्ण पक्ष ता० ४ सितम्बर से १७ सितम्बर तक) [वर्षा ऋतु ता० १७ से शरद ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० १३ भाद्रपद से २६ भाद्रपद तक]

प्रतिपदा	शनिवार	४ सितम्बर	प्रतिपदा का श्राद्ध।

द्वितीया	रविवार	५ सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध ।
तृतीया	सोमवार	६ सितम्बर	तृतीया का श्राद्ध तथा पञ्चक समाप्ति रात्रि १-७ पर एवं श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-१७ पर ।
चतुर्थी	मंगलवार	७ सितम्बर	चतुर्थी का श्राद्ध ।
पंचमी	बुधवार	८ सितम्बर	पंचमी का श्राद्ध तथा भरणी का श्राद्ध ।
षष्ठी	गुरुवार	९ सितम्बर	षष्ठी का श्राद्ध एवं सप्तमी का श्राद्ध ।
सप्तमी	शुक्रवार	१० सितम्बर	अष्टमी का श्राद्ध तथा श्री महालक्ष्मी व्रत, पूजन एवं जीवत्पुत्रिका (जूतिया) का व्रत, जूतिया का मेला श्री काशी जी में लक्ष्मीकुण्ड पर, तथा महालक्ष्मी का धागा खोलना, सप्तमी एवं अष्टमी वालों के लिये ।
अष्टमी	शनिवार	११ सितम्बर	नवमी का श्राद्ध, मातृ नवमी, सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध तथा जूतिया व्रत की पारणा एवं श्री महालक्ष्मी का दर्शन-पूजन ।
नवमी	रविवार	१२ सितम्बर	दशमी का श्राद्ध ।
एकादशी	सोमवार	१३ सितम्बर	एकादशी का श्राद्ध तथा इन्दिरा एकादशी व्रत सबके लिये एवं उत्तरा फाल्गुनी के सूर्य रात्रि ४-११ पर ।
द्वादशी	मंगलवार	१४ सितम्बर	द्वादशी का श्राद्ध तथा सन्यासी, यति, ब्रह्मचारी एवं वैष्णवों के श्राद्ध का दिन ।
त्रयोदशी	बुधवार	१५ सितम्बर	त्रयोदशी का श्राद्ध तथा पक्ष प्रदोष व्रत एवं मास शिवरात्रि व्रत ।
चतुर्दशी	गुरुवार	१६ सितम्बर	चतुर्दशी का श्राद्ध एवं अस्त्र-शस्त्र आघात से मरे लोगों का श्राद्ध, मघा का श्राद्ध ।
अमावस	शुक्रवार	१७ सितम्बर	अमावस का श्राद्ध एवं जिनकी मृत तिथि न मालूम हो, उनके श्राद्ध का दिन तथा पितृविसर्जन, महालय समाप्ति एवं कन्या की संक्रान्ति दिन में २-१४ से तथा विश्वकर्मा पूजा ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (अधिक) आश्विन शुक्ल पक्ष ता० १८ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक) (संसर्पः) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २७ भाद्रपद से ११ आश्विन तक]

प्रतिपदा	शनिवार	१८ सितम्बर	श्री चन्द्रदर्शन तथा श्री पुरुषोत्तम मास प्रारंभ, पुरुषोत्तम मास निमित्तिक स्नान-दान-व्रतादि कार्य प्रारंभ ।
दशमी	सोमवार	२७ सितम्बर	हस्त के सूर्य रात्रि ७-२२ पर ।
एकादशी	मंगलवार	२८ सितम्बर	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	बुधवार	२९ सितम्बर	पञ्चक प्रारंभ दिन में ४-४१ से ।

त्रयोदशी	गुरुवार	३० सितम्बर	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	शनिवार	२ अक्टूबर	पूर्णिमा व्रत की प्रातः ६-३२ से।
पूर्णिमा	रविवार	३ अक्टूबर	पूर्णिमा स्नान-दान की प्रातः ६-२७ तक

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (अधिक) आश्विन कृष्ण पक्ष ता० ४ अक्टूबर से १६ अक्टूबर तक (संसर्प:) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १२ आश्विन से २४ आश्विन तक]

प्रतिपदा	सोमवार	४ अक्टूबर	पञ्चक समाप्ति दिन में ८-४८ पर।
चतुर्थी	बुधवार	६ अक्टूबर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-१७ पर।
अष्टमी	रविवार	१० अक्टूबर	शुक्रतारा पूर्व में अस्त होंगे रात्रि १२-२० पर।
नवमी	सोमवार	११ अक्टूबर	चित्रा के सूर्य दिन में ७-४२ पर।
एकादशी	बुधवार	१३ अक्टूबर	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	गुरुवार	१४ अक्टूबर	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	शुक्रवार	१५ अक्टूबर	मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	शनिवार	१६ अक्टूबर	पुरुषोत्तम मास समाप्ति, पुरुषोत्तम मास निमित्तिक स्नान-दान-व्रतादि समाप्त।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष ता० १७ अक्टूबर से १ नवम्बर तक) [शरद ऋतु]

(राष्ट्रीय ता० २५ आश्विन से १० कार्तिक तक)

प्रतिपदा	रविवार	१७ अक्टूबर	नाना-पड़वा, मातामह के श्राद्ध का दिन, शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन, वैधृतिके वाद प्रातः ७-३८ से तथा विशेष अभिजित मुहूर्त्त ११-२६ से १२-१७ तक तथा तुला की संक्रांति रात्रि १२-५१ पर।
द्वितीया	सोमवार	१८ अक्टूबर	श्री चन्द्रदर्शन
सप्तमी	रविवार	२४ अक्टूबर	नवरात्र की सप्तमी का व्रत तथा अन्नपूर्णाजी की परिक्रमा दिन में १-३५ से एवं भानु सप्तमी पर्व सूर्य ग्रहण के समान स्नान-दान का फल।
अष्टमी	सोमवार	२५ अक्टूबर	अष्टमी पूजन जोत जगाना अष्टमी वालों के लिये तथा अन्नपूर्णाजी की परिक्रमा दिन में ३-३९ तक।
नवमी	मंगलवार	२६ अक्टूबर	नवमी पूजन जोत जगाना नवमी वालों के लिये तथा देवी विसर्जन अष्टमी वालों के लिये, पञ्चक प्रारम्भ रात्रि ११-५३ से।
दशमी	बुधवार	२७ अक्टूबर	देवी विसर्जन नवमी वालों के लिये, नवरात्र समाप्ति तथा विजयादशमी, (दशहरा) शमी पूजन।
एकादशी	गुरुवार	२८ अक्टूबर	पापांकुशा एकादशी व्रत सबके लिये।

त्रयोदशी	शनिवार	३० अक्टूबर	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र-सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रत का प्रारम्भ।
चतुर्दशी	रविवार	३१ अक्टूबर	पञ्चक समाप्ति दिन में ४-३२ पर तथा (कोजागरी) शरद पूर्णिमा व्रत की सायं ७-४६ से।
पूर्णिमा	सोमवार	१ नवम्बर	पूर्णिमा स्नान-दान की प्रातः से सायं ७-५ तक एवं कार्तिक स्नान-व्रत-नियमादि प्रारम्भ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक कृष्ण पक्ष ता० २ नवम्बर से १५ नवम्बर तक) [शरद ऋतु]
(राष्ट्रीय ता० ११ कार्तिक से २४ कार्तिक तक)

प्रतिपदा	मंगलवार	२ नवम्बर	गुरुतारा रात्रि में १ बजकर २ मिनट पर पश्चिम में अस्त होंगे।
द्वितीया	बुधवार	३ नवम्बर	करवा चौथ की सर्घी।
तृतीया	गुरुवार	४ नवम्बर	करवा चौथ (करक चतुर्थी) श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ७-५० पर।
पंचमी	शनिवार	६ नवम्बर	विशाखा के सूर्य रात्रि १२-३३ पर।
अष्टमी	सोमवार	८ नवम्बर	श्री अहोई अष्टमी व्रत (श्री होई माता का पूजन)।
एकादशी	गुरुवार	११ नवम्बर	रम्भा एकादशी व्रत सबके लिये।
त्रयोदशी	शनिवार	१३ नवम्बर	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र-सुख की कामना करनेवालों के लिये व्रत का प्रारम्भ तथा धन त्रयोदशी (धनतेरस), धन्वन्तरी जयन्ती एवं पूजन, श्रीमास शिवरात्रि व्रत तथा रात्रि के अंत में श्री हनुमज्जन्म, (अरुणोदय काल में)।
चतुर्दशी	रविवार	१४ नवम्बर	नरक चतुर्दशी, श्री हनुमान जी का दर्शन-पूजन।
अमावस	सोमवार	१५ नवम्बर	सोमवती अमावस, कपिलधारा तीर्थ (काशी में) एवं चन्द्रकूप (सिद्धेश्वरी महाल) के समीप पिण्ड-दान-स्नान-दानादि से गया श्राद्ध के समान फल-प्राप्ति। दीपावली (दिवाली) सायंकाल में लक्ष्मी-कुबेरादि पूजन।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक शुक्ल पक्ष ता० १६ नवम्बर से ३० नवम्बर तक) [शरद ऋतु ता० १६ रात्रि १०-२८ से हेमन्त ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० २५ कार्तिक से ६ मार्गशीर्ष तक]

प्रतिपदा	मंगलवार	१६ नवम्बर	वृश्चिक की संक्रांति रात्रि १०-२८ पर तथा हेमन्त ऋतु प्रारम्भ रात्रि १०-२८ से अन्नकूट, गोबर्धन पूजा एवं कार्तिक पूजा रात्रि में १०-२८ से प्रथम पूजन संक्रान्ति के पुण्यकाल में ४-४ दिन में।

द्वितीया	बुधवार	१७ नवम्बर	भाईदूज (भैया दूज) यम द्वितीया, यमुना-स्नान चित्रगुप्त का दर्शन, पूजन, तथा श्री चन्द्रदर्शन।
चतुर्थी	शुक्रवार	१९ नवम्बर	अनुराधा के सूर्य रात्रि के अंत में ५-२९ पर।
पंचमी	शनिवार	२० नवम्बर	वृश्चिक राशि के गुरु दिन में ११-५४ पर होंगे।
षष्ठी	रविवार	२१ नवम्बर	डालाछठ, डाले की पहिली पूजा सायंकाल में।
सप्तमी	सोमवार	२२ नवम्बर	डाले की दूसरी पूजा (सूर्य को अर्घदान) प्रातःकाल में तथा डाला छठ व्रत की पारणा।
सप्तमी	मंगलवार	२३ नवम्बर	पञ्चक प्रारम्भ प्रातः ७-७ से।
अष्टमी	बुधवार	२४ नवम्बर	गोपाष्टमी (गोपूजन एवं परिक्रमा), तथा बुधाष्टमी पर्व स्नान एवं मूंग का दान-भोजन, का विशेष फल गुरु तारा दिन में ३-५३ पर, पूर्व में उदय होंगे।
नवमी	गुरुवार	२५ नवम्बर	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड (पेठादि) दान तथा आंवले के वृक्ष की पूजन-परिक्रमा एवं आंवले के वृक्ष के नीचे भोजन।
एकादशी	शनिवार	२७ नवम्बर	प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबके लिये (देवोत्थान एकादशी) तथा तुलसी विवाह दिन में ११-६ के बाद, तथा चातुर्मास व्रत स्नान-दान-नियमादि समाप्त। भीष्म पंचक प्रारम्भ। तथा पञ्चक समाप्ति रात्रि १२-१८ पर।
द्वादशी	रविवार	२८ नवम्बर	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	सोमवार	२९ नवम्बर	वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, श्री गंगाजी को तुलसी चढ़ाना।
चतुर्दशी	मंगलवार	३० नवम्बर	वैकुण्ठ चतुर्दशी का स्थान एवं दान, अरुणोदय काल में तथा पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः ८-१ से तथा कार्तिकी पूर्णिमा, कार्तिक स्नान-दान-नियमादि समाप्ति, एवं भीष्म पंचक व्रत समाप्ति, तथा विश्वनाथजी की तिपर बत्ती से आरती एवं पूजन करना एवं काशी में गोविन्द माधव का वार्षिकोत्सव।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष ता० १ दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक) [हेमन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १० मार्गशीर्ष से २४ मार्गशीर्ष तक]

प्रतिपदा	बुधवार	१ दिसम्बर	कार्तिक व्रत की पारणा।
द्वितीया	गुरुवार	२ दिसम्बर	शुक्रतारा रात्रि १-४४ पर पश्चिम में उदय होगें।

तृतीया	शुक्रवार	३ दिसम्बर	जेष्ठा के सूर्य दिन में ८/१६ पर।
चतुर्थी	शनिवार	४ दिसम्बर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ८-४५।
सप्तमी	मंगलवार	७ दिसम्बर	श्री महाभैरवाष्टमी व्रत, श्री भैरवनाथ जी का दर्शन-पूजन।
अष्टमी	बुधवार	८ दिसम्बर	बुधाष्टमी पर्व, स्नान एवं मूंग का दान, भोजन का विशेष फल।
एकादशी	शनिवार	११ दिसम्बर	उत्पन्ना एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	रविवार	१२ दिसम्बर	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	सोमवार	१३ दिसम्बर	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	बुधवार	१५ दिसम्बर	खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण-स्पर्श दिन में ३-३३, मोक्ष सायं ५-२, विशेष विवरण पत्रिका में देखें।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ता० १६ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक) [हेमन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २५ मार्गशीर्ष से ९ पौष तक]

प्रतिपदा	गुरुवार	१६ दिसम्बर	श्री चन्द्र दर्शन तथा मूल के सूर्य एवं धन की संक्रांति दिन में १०/१३ पर तथा खरमास प्रारम्भ दिन में १०-१३ से।
पंचमी	सोमवार	२० दिसम्बर	पञ्चक प्रारम्भ दिन में २-२४ से।
दशमी	शनिवार	२५ दिसम्बर	पञ्चक समाप्ति दिन में ८-७ पर।
एकादशी	रविवार	२६ दिसम्बर	मोक्षदा एकादशी व्रत सबके लिये।
त्रयोदशी	मंगलवार	२८ दिसम्बर	भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण दोष निवारण के लिये व्रत का आरम्भ।
चतुर्दशी	बुधवार	२९ दिसम्बर	पूर्वाषाढ़ा के सूर्य दिन में ११-३ पर, पिशाचमोचन यात्रा, लोटा-भंटा का मेला काशी में पिशाचमोचन तीर्थ पर तथा पूर्णिमा व्रत की सायं ७-४६ के बाद से।
पूर्णिमा	गुरुवार	३० दिसम्बर	पूर्णिमा स्नान दान की सायं ५-३३ तक एवं दत्तात्रेय जयन्ती, तथा खग्रास चन्द्रग्रहण, स्पर्श दिन में ३-२०, मोक्ष सायं ६-३७ पर, विशेष विवरण पत्रिका में देखें।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (पौष कृष्ण पक्ष ता० ३१ दिसम्बर से १४ जनवरी तक) [हेमन्त ऋतु ता० १४ से शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १० पौष से २४ पौष तक]

द्वितीया	शनिवार	१ जनवरी	ईस्वी सन् १९८३ प्रारम्भ, अंग्रेजी नव-वर्ष प्रारम्भ।
तृतीया	रविवार	२ जनवरी	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-४० पर।
एकादशी	रविवार	९ जनवरी	सफला एकादशी व्रत सबके लिये।

त्रयोदशी	मंगलवार	११ जनवरी	उत्तराषाढ़ा के सूर्य दिन में ११-३८ पर तथा भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण दोष निवारण के लिये व्रत का आरम्भ।
चतुर्दशी	बुधवार	१२ जनवरी	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
चतुर्दशी	गुरुवार	१३ जनवरी	लोहड़ी पूजन।
अमावस	शुक्रवार	१४ जनवरी	मकर की संक्रांति (खिचड़ी) सायं ५-५० पर २० घट्या वा ४० घट्या "यदास्त मय वेलायां मकरं याति भास्करः। प्रदोषे वार्ऽर्ध रात्रेवा स्नानं दानं परे हनिः।" इत्युक्ते परदिने पुण्यकालः। पुण्यकाल दूसरे दिन।

श्री सूर्य उत्तरायण देवताओं का दिन तथा दैत्यों की रात्रि, प्रयाग संगम तथा काशी में दशाश्वमेध घाट पर स्नान-दान का विशेष फल।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (माघ शुक्ल पक्ष ता० १५ जनवरी से २८ जनवरी तक) [शिशिर ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० २५ पौष से ८ माघ तक] (अंहस्पति)

प्रतिपदा	शनिवार	१५ जनवरी	श्री चन्द्र दर्शन, तथा संक्रांति का पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक, एवं श्री बावे की पहली चोटी।
द्वितीया	रविवार	१६ जनवरी	पञ्चक प्रारम्भ रात्रि ९-४८ से तथा श्री बाबा मुकुन्द का बासी बनाना।
तृतीया	सोमवार	१७ जनवरी	श्री बाबा मुकुन्द का पूजन (बासी खाना)
पंचमी	बुधवार	१९ जनवरी	बसन्त पंचमी, (श्री पंचमी)।
सप्तमी	शुक्रवार	२१ जनवरी	पञ्चक समाप्ति दिन में ३-५८ पर तथा अचला सप्तमी (रथ सप्तमी)।
अष्टमी	शनिवार	२२ जनवरी	श्री बावे की दूसरी चोटी
नवमी	रविवार	२३ जनवरी	श्री बावे की बसन्त की कढ़ाई करना एवं पूजन करना।
दशमी	सोमवार	२४ जनवरी	श्रवण के सूर्य दिन में १२-४४ पर।
एकादशी	मंगलवार	२५ जनवरी	जया एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	बुधवार	२६ जनवरी	पक्ष प्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	शुक्रवार	२८ जनवरी	पूर्णिमा, स्नान-दान-व्रत की प्रातः से रात्रि तक।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (शुद्ध फाल्गुन कृष्ण पक्ष ता० २८ जनवरी से १२ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० ९ माघ से २३ माघ तक] [अंहस्पति]

प्रतिपदा	शनिवार	२९ जनवरी	श्री बावे की तीसरी चोटी।
तृतीया	सोमवार	३१ जनवरी	अंगारकी श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-२८ पर।
अष्टमी	शनिवार	५ फरवरी	श्री बावे की चौथी चोटी।

नवमी	रविवार	६ फरवरी	धनिष्ठा के सूर्य दिन में २-५५ पर ।
एकादशी	मंगलवार	८ फरवरी	विजया एकादशी व्रत सबके लिये ।
त्रयोदशी	गुरुवार	१० फरवरी	पक्ष प्रदोष व्रत ।
चतुर्दशी	शुक्रवार	११ फरवरी	श्री महा शिवरात्रि व्रत (वैद्यनाथ जयंती) ।
अमावस	शनिवार	१२ फरवरी	पञ्चक प्रारम्भ, प्रातः ५-३ से तथा कुम्भ की संक्रान्ति रात्रि ४-३३ पर श्री महा शिवरात्रि व्रत की पारणा एवं योगी जिमाना ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (अधिक फाल्गुन शुक्ल पक्ष ता० १३ फरवरी से २७ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २४ माघ से ८ फाल्गुन तक]

प्रतिपदा	सोमवार	१४ फरवरी	श्री चन्द्र दर्शन ।
चतुर्थी	गुरुवार	१७ फरवरी	पञ्चक समाप्ति रात्रि ११-३८ पर ।
षष्ठी	शनिवार	१९ फरवरी	शतभिषा के सूर्य सायं ६-४० पर ।
सप्तमी	रविवार	२० फरवरी	भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान-दान का विशेष फल ।
एकादशी	बुधवार	२३ फरवरी	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिये ।
त्रयोदशी	शुक्रवार	२५ फरवरी	पक्ष प्रदोष व्रत ।
चतुर्दशी	शनिवार	२६ फरवरी	पूर्णिमा व्रत की सायं ४-३६ से ।
पूर्णिमा	रविवार	२७ फरवरी	पूर्णिमा स्नान दान की प्रातः से दिन में २-२६ तक ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (अधिक फाल्गुन कृष्ण पक्ष ता० २८ फरवरी से १४ मार्च तक) { शिशिर ऋतु ता० १४ से वसन्त ऋतु }

[राष्ट्रीय ता० ९ फाल्गुन से २३ फाल्गुन तक]

तृतीया	बुधवार	२ मार्च	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-१३ ।
पंचमी	शुक्रवार	४ मार्च	पूर्वा भाद्रपदा के सूर्य रात्रि १२-३१ पर ।
सप्तमी	रविवार	६ मार्च	श्री भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान, दान का विशेष फल ।
एकादशी	गुरुवार	१० मार्च	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिए ।
त्रयोदशी	शनिवार	१२ मार्च	पञ्चक प्रारम्भ दिन में १२-१२ से तथा शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र सुख की कामना करने वालों के लिये व्रत का आरम्भ एवं श्री मास शिवरात्रि व्रत ।
अमावस	सोमवार	१४ मार्च	मीन की संक्रांति रात्रि १२-२३ पर तथा सोमवती अमावस, कपिलधारा तीर्थ (काशी में) एवं चन्द्र कूप (सिद्धेश्वरी मोहाल) के समीप पिण्डदान, स्नान-दानादि कार्य, गया श्राद्ध के समान फल प्राप्ति ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (शुद्ध फाल्गुन शुक्ल पक्ष ता० १५ मार्च से २८ मार्च तक) [वसन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २४ फाल्गुन से ७ चैत्र तक]

द्वितीया	बुधवार	१६ मार्च	श्री चन्द्र दर्शन ।
तृतीया	गुरुवार	१७ मार्च	पञ्चक समाप्ति दिन में ७-१२ पर ।
चतुर्थी	शुक्रवार	१८ मार्च	उत्तरा भाद्रपदा के सूर्य दिन में ८-३६ पर ।
एकादशी	शुक्रवार	२५ मार्च	आमलकी एकादशी व्रत (रंगभरी) सबके लिये ।
द्वादशी	शनिवार	२६ मार्च	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र सुख की कामना करने वालों के लिए व्रत का आरम्भ तथा सामातिल्ले का पूजन एवं बासी खाना ।
पूर्णिमा	सोमवार	२८ मार्च	पूर्णिमा, स्नान-दान एवं व्रत की, प्रातः से तथा होलिकादाह, होलिका-पूजन रात्रि ८ बजे से १२-४३ तक ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (चैत्र कृष्ण पक्ष ता० २९ मार्च से १३ अप्रैल तक) [वसन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ८ चैत्र से २३ चैत्र तक]

प्रतिपदा	मंगलवार	२९ मार्च	होलिका विभूति धारण, काशी में धुरड्डी, चतुष्षष्ठी यात्रा, श्री चौसट्टी देवी का दर्शन-पूजन ।
तृतीया	गुरुवार	३१ मार्च	रेवती के सूर्य रात्रि ७-२३ पर ।
चतुर्थी	शुक्रवार	१ अप्रैल	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-५१ पर ।
सप्तमी	सोमवार	४ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना, तथा सिलाहो सप्तमी पंजाब में प्रसिद्ध ।
अष्टमी	मंगलवार	५ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना) ।
दशमी	शुक्रवार	८ अप्रैल	पञ्चक प्रारम्भ रात्रि ७-१९ से ।
एकादशी	शनिवार	९ अप्रैल	पाप मोचनी एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	रविवार	१० अप्रैल	पक्ष प्रदोष व्रत ।
त्रयोदशी	सोमवार	११ अप्रैल	श्री मास शिवरात्रि व्रत, इस दिन वारुणी पर्व नहीं है, निर्णय पत्रिका में देखें ।
अमावस	बुधवार	१३ अप्रैल	पञ्चक समाप्ति दिन में २-४५ पर तथा अमावस स्नान-दान की एवं संवत्सर समाप्ति ।

ॐ शांतिः । शांतिः ।। शांति ।।।

।। शुभंभूयात् सर्वं जगताम् ।।

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

॥ वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात् ॥

॥ सम्वत् २०३९ में मेषादि द्वादश राशियों का संक्षिप्त फल ॥

राशिफल देखने का क्रम = १ राशि में ९ अक्षर होते हैं। उनमें अपने नाम का जो अक्षर हो वही अपना नाम राशि जानना चाहिये। उस राशि का जो फल है वही अपना राशिफल समझना चाहिये। यदि अपनी जन्म-पत्री की राशि मालूम हो तो उसी से राशिफल देखना चाहिये क्योंकि ग्रह गोचर का फल जन्म राशि से ही देखना चाहिये। यह शास्त्र का शुद्ध मत है—यदि जन्म राशि ज्ञात न हो तो नाम राशि से ही विचार एवं फल समझना चाहिये।

मेष—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ,) वर्ष उत्तम है। वर्ष का आधा पहिला भाग अच्छा, शेष सामान्य रहेगा। शत्रुओं से विजय, पराक्रम की वृद्धि, ग्रीवा, उदर, बाहु पीड़ा, भाइयों को कष्ट की सम्भावना। स्त्री-पुत्रादि को सामान्य कष्ट, मित्र सुख, वाहन से सावधानी हितकर होगी। वर्ष के दूसरे आधे भाग में चोरों, गुप्तरोग भय, स्वजनों से विरोध की सम्भावना है। व्यवसाय में लाभ से मांगलिक कार्यों की सम्भावना है। श० वृ० की शांति नवम्बर से वर्ष अन्त तक शुभकर होगी। वर्ष के ७, १०, ११ माह शुभ तथा ४, ८, १२ कष्टदायक रहेंगे। शेष सामान्य हैं।

वृष—(ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो) वर्ष सामान्यतः शुभ है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। उदर पीड़ा, दुष्टों से क्षय, आवेश से पारिवारिक कलह एवं विरोधियों का सृजन सम्भावित है। शिक्षा में सफलता, पुत्रादि को शारीरिक पीड़ा, भ्रमण के सुयोग, सुअवसर प्राप्ति एवं अधिकारी वर्ग को कृपा, व्यापार में लाभ, नौकरी में उन्नति, भक्ति मार्ग में रुचि एवं यश वृद्धि के योग हैं। वर्ष के २, ३, ५, ८, ११ माह नेष्ट हैं। शेष मास शुभ फल कारक हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध से उत्तरार्ध अच्छा रहेगा।

मिथुन—(का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)—ग्रह कुछ विपरीत हैं। मति-भ्रम दोष, शारीरिक पीड़ा, पारिवारिक अशान्ति, मित्र पक्ष से प्रयास से लाभ, संतान से कष्ट, चौर्य भय, अपव्यय, महत्व के कार्यों में विघ्न, प्रयास से अभिष्ट सिद्धि, दुष्टों के दबाव में अनइच्छित कार्य करने की सम्भावना। वर्ष के उत्तरार्ध से पूर्वार्द्ध ही ठीक है। आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव पूरे वर्ष हो रहेगा। वर्ष के २, ६, ८, १० माह कष्ट कारक हैं। शेष सामान्यतः ठीक हैं।

कर्क—(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)—वर्ष संघर्षमय होते हुए भी संतोषप्रद है। पित्त, कफ, बात रोग से असामयिक पीड़ा एवं पैरों में चोटादि की सम्भावना है। मिथुन का राहू अपव्यय एवं भ्रमण से कष्ट प्रदाता रहेगा। वर्ष के पूर्वार्ध से उत्तरार्ध का समय आर्थिक दृष्टि से अनुकूल होगा। वर्ष के उत्तरार्ध में सुमित्रता की वृद्धि एवं मित्रों से लाभ होगा। पदोन्नति, पराक्रम में वृद्धि एवं रुके हुए काम पूरे होने को सम्भावना है। गृह-निर्माण में बाधा एवं अधिकारी वर्ग सहायक होगा। नौकरों से सावधानी रखना हितकर होगा। माता के लिए कष्ट कारक एवं मतिभ्रम दोष से असामयिक पीड़ा होगी। वर्ष के १, ३, ९, १२ कष्ट कारक हैं। शेष ठीक हैं।

सिंह–(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)—वर्ष सामान्य है। शारीरिक एवं मानसिक व्यग्रता रहेगी। नेत्र एवं हृदय पीड़ा, अकारण कलह, संतान एवं स्त्री सुख सामान्य, शिक्षा में सफलता एवं संघर्ष से राज्य कार्यों में सफलता, अच्छे मित्रों की प्राप्ति तथा सुकार्यों में खर्च होगा। वर्ष के पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में पराक्रम में वृद्धि एवं सम्मान तथा धन प्राप्ति के योग हैं। व्यवसायी एवं नौकरी पेशे के लोगों के लिये वर्ष का उत्तरार्ध शुभकारक रहेगा। आवेश से वर्ष के पूर्वार्ध में गुप्त शत्रुओं की उत्पत्ति होगी। वर्ष के १, २, ५, ८, ११ मास नेष्ट हैं। शेष शुभ हैं।

कन्या–(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)—शनि की साढ़े साती के कारण आर्थिक, पारिवारिक कष्ट एवं अपमान और व्यंग, मन में अशान्ति के द्योतक हैं। अतः वर्ण कष्टप्रद ही रहेगा। पीपल की परिक्रमा, हनुमान चालीसा के पाठ एवं तेल; तिल आदि के दान से हित होगा। वर्ण के उत्तरार्ध में स्वजनों के सहयोग से धन प्राप्ति एवं संघर्ण से कुछ सफलता मिलेगी। शारीरिक एवं मानसिक असन्तुलन एवं उदरादि रोग तथा आलस्य, प्रगति में अवरोधक रहेंगे। राजद्वार में पराजय के योग हैं। वर्ण के १, ३, ४, ७, १० नेष्ट हैं। शेष सामान्य हैं।

तुला—(रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)—वर्ण सामान्य है। शनि की साढ़े साती वर्ण के अन्त तक शारीरिक एवं मानसिक व्यथा प्रदाता रहेगी। यात्रा तथा अपव्यय, माता एवं स्त्री को वात रोग एवं रक्त विकार से कष्ट, अग्नि एवं चौर भय, अधिकारी वर्ग से मनमुटाव एवं स्थानांतरण का योग, पद अवनति एवं सहकर्मियों से विरोध की सम्भावना है। आलस्य से कार्य अवरोधित होगा। शिक्षा में बाधा, धार्मिक कार्यों में मन की चंचलता एवं व्यग्रता, प्रगति में अवरोध सम्भावित है। वर्ष के पूर्वार्ध से उत्तरार्ध में धन प्राप्ति एवं व्यवसाय की स्थिति अच्छी होना तथा अचानक द्रव्य प्राप्ति के योग हैं। रा० श० मंगल पूज्य हैं। इन ग्रहों की शान्ति अनिष्ट निवारक रहेगी। वर्ष के ३, ६, ९ माह कष्ट कारक एवं शेष सामान्य हैं।

वृश्चिक—(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)—वर्ष आरम्भ से रा० एवं वृ० की स्थिति अनुकूल न होने से मान प्रतिष्ठा को यथावत बनाये रखने के लिये संघर्ष आवश्यक है। शारीरिक व्याधि, स्त्री को रक्त एवं वात विकार, उदर कष्ट, सिर, आंख व गुप्ताङ्गों में पीड़ा एवं अपघात के योग हैं। पठन-पाठन में बाधायें एवं तीर्थयात्रा सम्भावित है। पराक्रम व साहस से प्रगति सम्भावित है। वर्ष के पूर्वार्ध में महत्व के कार्यों से सफलता, धन प्राप्ति के सुयोग, व्यवसाय में लाभ आदि का शुभ फल होगा। वर्ष के उत्तरार्ध में श० रा० की शान्ति ही अनुकूलता में सहायक होगी। वर्ण के ४, ५, ८, ११ माह व्यग्रता एवं अशान्ति कारक हैं। शेष सामान्य हैं।

धन—(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे) वर्ष मिश्रित फल कारक है। वर्ण के पूर्वार्ध में वातादि रोग एवं गुप्त-रोग भय सम्भावित है। स्त्री का स्वास्थ्य भी चिंताकारक हो सकता है। वर्ण के उत्तरार्ध में स्वास्थ्य एवं धन की स्थिति अनुकूल रहेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में खर्च होगा। व्यापार में नई योजनाओं से लाभ, भ्रमण, संतान-सुख, नौकरी में उन्नति, भूमि एवं भवन निर्माण में सफलता के योग हैं। पठन-पाठन में गुरु पूज्य हैं। वृ० की शान्ति, शिक्षा में सफलता कारक होगा। साहस व पराक्रम दायक यह वर्ण, वर्षअन्त की अवधि में अनुकूल-सा प्रतीत होगा। वर्ष के ४, ७, ८, १२ मास नेष्ट हैं। शेष अनुकूल हैं।

मकर—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी) वर्ष उत्तम है। शारीरिक सुख एवं शान्ति के योग हैं, यदा-कदा वायु विकार से उदर कष्ट संभावित है। गुप्त शत्रुओं से कुछ मानसिक कष्ट हो सकता है। मुकदमे आदि में विजय

संभावित है। स्थानान्तरण एवं भ्रमण के भी योग हैं। राजद्वार में सफलता की प्राप्ति, परिवार एवं समाज में प्रतिष्ठा, अधिकारी वर्ग अनुकूल रहेगा। व्यापार एवं जीविका के साधन उत्तरोत्तर संतोषकारक ही रहेंगे। आवेश, धन एवं प्रतिष्ठा में अवरोधक है। वर्ष के १, ४, ७, १० मास नेष्ट हैं। शेष शुभ फलदायक होंगे।

कुम्भ—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) वर्ष शुभ है। राहू एवं श० की वजह से उदर विकार संभावित हैं। भ्रमण में अपव्यय एवं कष्ट, मित्रों से अकारण विरोध, गुप्त रोग भय, राजद्वार में सफलता, विद्यार्थी वर्ग को शिक्षा में स्वास्थ्य बाधा संभावित है। बृ० पूरे वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। अतः व्यापार में नई योजना से लाभ, धन प्राप्ति के सुयोग, नौकरी वर्ग के लोगों को अधिकारी वर्ग के लोग पीड़ित करेंगे। प्रयास से सफलता। वर्ष के पूर्वार्ध में दुर्घटना एवं मानहानि तथा वर्ष के उत्तरार्ध में धनलाभ एवं सफलता के योग हैं। वर्ष के १, २, ६, १० मास नेष्ट हैं। रा० श० मं० की शान्ति हितकारी होगी।

मीन—(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) वर्ष मिश्रित फलदायक है। श० मं० रा० बृ० की शान्ति से वर्ष अनुकूल फलदायक होगा। स्वास्थ्य सुख, सामान्यतः ठीक है। माता-पिता को कष्ट एवं अशान्ति, कुटुम्ब में कलह, चोरी का भय, हृदय पीड़ा, प्रवास, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, नौकरी पेशे के लोगों को अधिकारी वर्ग से भय, व्यापार में लाभ, मांगलिक कार्यों में खर्च संभावित है। वर्ष के पूर्वार्ध से वर्ष का उत्तरार्ध अनुकूल रहेगा। पदोन्नति एवं स्थानान्तरण तथा दुर्घटना के भी योग हैं। वर्ष के १, ४, ५, ९ मास नेष्ट है। शेष सामान्यतः ठीक हैं।

साधारण ग्रह गति का विचार

गुरु वर्ष के आरम्भ में तुला राशि में रहेंगे, अतः वृश्चिक, मीन, कर्क राशिवालों को कष्टकारी हैं। अतः उपरोक्त राशि वाले गुरु का दान, शान्ति, जपादि करें जिससे शान्ति की प्राप्ति होगी। ततः २० नवम्बर को गुरु वृश्चिक राशि पर जायेंगे, अतः धन, मेष, सिंह राशि वालों को कष्टकर होंगे। अतः उपरोक्त राशि वाले भी गुरु की शान्ति, जप, दानादि करनेसे लाभान्वित होंगे। बृ० की शान्ति के लिए केले के वृक्ष की पूजा, चने की दाल, हल्दी, बेसन के लड्डू से पूजित गुरु शान्ति देंगे। पुखराज की अंगूठी चांदी की धारण करें।

शनि वर्ष के आरम्भ में कन्या राशि में रहेंगे अतः सिंह, कन्या, तुला राशि वालों को साढ़ेसाती एवं धनु तथा मेष राशि वालों को अढ़ैया रहेगी, अतः उपरोक्त राशि वाले शनि की शान्ति के लिए हनुमान जी से युक्त पीपल वृक्ष की परिक्रमा, तिल तेल का दीपक, काली तिल्ली आदि से पूजन तथा ७ परिक्रमा, लोहे का छल्ला धारण करें। सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा आदि का पाठ करने से शान्ति प्राप्त होगी। ततः ५ अक्टूबर को शनि तुला राशि पर पधारेंगे, अतः कन्या, तुला, वृश्चिक, राशि वालों को साढ़ेसाती एवं मकर, वृष राशि वालों को अढ़ैया रहेगी। अतः उपरोक्त उपचार, शनि के दानादि से शान्ति संभावित है।

राहू—वर्ष के आरम्भ से वर्ष पूर्ण होने तक (पूरे वर्ष) मिथुन में रहेंगे। मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि वालों के लिए कष्टकारी होंगे। अतएव राहू की शान्ति जपादि हितकारी होगा।

केतू—वर्ष आरम्भ से वर्ष अन्त तक केतू धनु राशि पर विराजमान रहेंगे। धनु राशि के लिए ही पूज्य होंगे, अतः धनु राशि वालों को केतू की शान्ति के लिए जप दानादि हितकर होगा।

विशेष—गौ, गणेश, गीता, गायत्री जप, गंगा स्नान, इनके सेवन से सभी प्रकार के ग्रहों की बाधा शांत होगी तथा सुख-समृद्धि होगी।

॥ शुभम् भूयात ॥

श्री हृषीकेश पञ्चाङ्ग से साभार उद्धृत

संवत् २०३९ में काशी विद्वत् परिषद् का क्षयाधि मास निर्णय

संवत् २०३८ भाद्रपद शुक्ल दशमी (दिनांक ९-९-८१) बुधवार को जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ जी महाराज (गोवर्धन पीठाधीश्वर, पुरी) के तत्वावधान में तथा पण्डित राज निरीक्षणपति मिश्र जी की अध्यक्षता में काशी विद्वत्परिषद की सभा संवत् २०३९ में होने वाले क्षयाधिमास निर्णय के सम्बन्ध में हृषीकेश ज्योतिर्भवन, भदैनी में सम्पन्न हुयी । तत्पश्चात् इसी सन्दर्भ में दिनांक १०-९-८१ गुरुवार को पण्डित राज पट्टाभिराम शास्त्री जी के निवास स्थान पर पुनः सभा हुयी । पुनः इसी विषय पर दिनांक ११-९-८१ शुक्रवार को विद्वत्परिषद की बैठक 'हृषीकेश ज्योतिर्भवन, भदैनी, काशी में हुयी जिसमें सर्वसम्मत से निम्नलिखित निर्णय हुआ—

निर्णय

संवत् २०३९ में क्षयमास आ रहा है । जिस वर्ष में क्षयमास आता है उस वर्ष २ अधिक मास होते हैं । एक क्षय के पहले, एक क्षय के पश्चात् । ये तीनों मास शुभ कार्य में त्याज्य हैं । यद्यपि क्षय मास के पूर्व आने वाले अधिक मास की संसर्प संज्ञा है, और उसे प्राकृत मास भी कहते हैं; तथापि उसमें विवाह, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य त्याज्य ही हैं । केवल अनन्य गतिक नित्य नैमित्तिक कार्य, एकादशी, प्रदोष, पूर्णिमा व्रतादि कार्य निषिद्ध नहीं है । प्रकृत वर्ष में भारत के सम्पूर्ण ज्योतिर्विदों धर्मशास्त्रियों के मत में आश्विन अधिक मास (संसर्प) है । क्षय मास जो पौष मास है उसका पौष शुक्ल का माघ शुक्ल में, माघ कृष्ण का फाल्गुन कृष्ण में अन्तर्भाव है । इन दोनों पक्षों में पैदा होने वाले सन्तान यदि तिथि के पूर्वार्ध में होंगे तो उनकी वर्षगांठ क्रमशः पौष शुक्ल तथा माघ कृष्ण में मनायी जायगी । उत्तरार्ध में पैदा होने वालों को वर्षगाँठ क्रमशः माघ शुक्ल में एवं फाल्गुन कृष्ण में मनायी जायगी । यही व्यवस्था श्राद्ध में भी होगी । (परन्तु दोनों मास के श्राद्ध अपरान्ह में ही होंगे) प्रयाग में माघ स्नान का आरम्भ एवं कल्पवास का प्रारम्भ मार्गशीर्ष पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर माघ पूर्णिमा तक होगा । अमावस्या का मौन स्नान (मौनी अमावस्या) १२ फरवरी सन् १९८३ ई० को फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को होगा । नवरात्र एवं विजयादशमी शुद्ध आश्विन शुक्ल में होगी । नवरात्रारम्भ १७-१०-८२ से, विजयादशमी २७-१०-८२ को, शरद पूर्णिमा ३१-१०-८२ को होगी एवं दीपावली १५-११-८२ को होगी । वसन्त पंचमी १९-१-८३ को, महा शिवरात्रि ११-२-८३ को होगी । होलिका दहन २८-३-८३ को होगा । माघ की गणेश चतुर्थी ३१-१-८३ को होगी । माघ शुक्ल एवं फाल्गुन कृष्ण पक्ष संवत २०३९ में विवाहादि शुभ कार्य नहीं होंगे । यह सर्वसम्मत निर्णय है ।

निरीक्षणपति मिश्र
अध्यक्ष
काशी विद्वत् परिषद्

रमापति त्रिपाठी
मंत्री
काशी विद्वत् परिषद्

॥ श्री राम ॥

आज की कठिन समस्या का हल

गर्भाधान संस्कार

लेखक : सत्संग परिवार के संस्थापक, संत श्री छोटे जो महाराज

जगत् में मनुष्य को नाते का भरोसा होता है अर्थात् प्रत्येक नाते से हमारी किसी कमी की पूर्ति की जाती है। यदि कोई कमी का प्रश्न न रहे, तो नाता ही नहीं खड़ा होगा। माता-पिता से पुत्र का नाता इसलिए है कि माता-पिता के अभाव में पुत्र की उत्पत्ति असम्भव है। प्राणाभाव (उत्पत्ति से पहले जो अभाव हो) में ग्रस्त रहना ही पुत्र की कमी है; उस कमी को दूर करने के लिए पुत्र की आत्मा माता-पिता का आश्रय ढूँढ़ कर पहुँच जाती है और पुत्र के बिना माता-पिता की अभिलषित कुलस्थिति पूर्ण नहीं हो सकती है। अतः माता-पिता भी पुत्र से नाता रखते हैं। यदि माता-पिता को वंश स्थिति का अभिलाष न हो और पुत्रोत्पत्ति से इस कमी की पूर्ति का अनुभव न करते हों, तो वे पुत्रोत्पादन ही नहीं कर सकते हैं। यदि कदाचित् पुत्रोत्पत्ति हो भी जाय तो उसे उपेक्षित कर देंगे। नाता का निर्वाह नहीं करेंगे। अतः पुत्र का जीव अपनी कमी के लिए माता-पिता का बन्धन और माता-पिता भी अपनी कमी की पूर्ति के लिए पुत्र का बन्धन स्वीकार करते हैं। इस प्रकार नाते को एकसूत्र समझा जाय जिसका एक सिरा पुत्र के हृदय में और दूसरा सिरा माता-पिता के हृदयों में बँधा हुआ है।

इसे साकार करनेवाला गर्भाधान संस्कार है। मानस में पाँच प्रकार के गर्भों का वर्णन प्राप्त होता है जैसे— (१) दिव्य (२) सुर (३) असुर (४) मानव (५) बानर। दिव्य गर्भ के आवाहन का संकल्पकर्ता कुल-गुरु हैं जो निम्न पंक्ति से स्पष्ट होता है :

जो वशिष्ठ कछु हृदय बिचारा। सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा।

इस प्रयोग के सहायक सिद्धिदाता शृङ्गि ऋषि, अन्य ऋषिगण एवं अग्निनारायण आदि हैं।

शृंगी रिषिहि वशिष्ठ बोलावा। पुत्र काम शुभ जज्ञ करावा।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें।

इस हवि के वितरक महाराज श्री दशरथ तथा इसके साक्षी पुरजन-परिजन तथा जातिजन हैं। अग्नि-नारायण का आदेश है—

यह हवि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई।

तब अदृश्य भए पावक सकल सभहिं समुझाइ।

परमानन्द मगन मन हरष न हृदय समाइ।

(१) इस दिव्य मानव गर्भस्थापन का मूल कारण अग्निनारायण द्वारा प्रदत्त दिव्य चरु है—

तबहि रायँ प्रिय नारि बोलाईं। कौसिल्यादि तहाँ चलि आईं।
अर्ध भाग कौसिल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा।

कैकेयी कह नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ।

कौसिल्या, कैकेइ हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि।

एहि विधि गर्भ सहित सब नारी। भई हृदय हरषित सुखभारी।

जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख सम्पति छाए।

मंदिर महँ सब राजहिं रानी। शोभा सील तेज की खानी।

सत् पुरुषों के संकल्प से ही भगवान् श्रीकृष्ण, बुद्धदेव, शंकराचार्य, कबीर, तुलसी, तिलक, गान्धी, जवाहर, मालवीय, टैगोर, सुभाष, लाल बहादुर आदि सहस्रों लाल, माता के गर्भ में आए थे; जिन्होंने देश के लिए क्या-क्या किया यह अभूतपूर्व तथा अश्रुतपूर्व है। इसी संस्कार से मलिन नारि शोभा की खानि, उग्र नारि शील की खानि तथा तेजोहीन तेज की खानि भासती हैं। इस संस्कार से उन्हें भारी सुख होता है। इस संकल्प को पूर्ण करने की चार पद्धतियाँ हैं—(१) संकल्प (२) दर्शन (३) स्पर्श (४) सहवास। इन्हीं पद्धतियों की सिद्धि में जो भी ताड़नाएँ प्राप्त होती हैं, स्त्री जाति उसका अपने को अधिकारी मानती है जैसा कि ताड़न पद्धति को 'वात्सायन' ने काम-शास्त्र में बताया है। इसे ही गोस्वामी जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से मानस की एक सर्वश्रेष्ठ चौपाई में कहा है—

ढोल गँवार सूद्र पशु नारी।

सकल ताड़ना के अधिकारी।

इस एक चौपाई में ही राष्ट्र-निर्माण की अव्यर्थ पद्धति बताई गई है जो स्थानाभाव से स्पष्ट नहीं की जा सकती।

आज भी स्त्रियाँ "माँग कोख से जुड़ी रहो' इस आशीर्वाद को अपना भूषण मानती हैं। प्रसव की अति दुस्सह, दारुण दुःख वेदना को सहन करने का अपने को अधिकारी मानती हैं। तभी तो हम उनके गुण, शील, बल से सम्पन्न लालों को पाकर गृह, परिवार, समाज तथा विश्व, सभी धन्य-धन्य होते हैं।

(२) सुर गर्भ स्थापन की क्या प्रणाली है यह स्पष्ट नहीं प्रतीत होता, क्योंकि यह भोग योनि है, उस योनि में भोग ही में अधिकार की प्रधानता है, अतः गर्भाधान के नियमों में शिथिलता होना स्वाभाविक है। जिसका फल जयन्त जैसा विश्वद्रोही पुत्र उत्पन्न हुआ। जैसे—

यद्यपि द्रोह किए सुरपति सुत कहि न जाइ उगति भारी वि० प०। दूसरा स्थल प्राप्त होता है जब शिव, पार्वती में गर्भाधान करने ही वाले थे, तब देवताओं ने इस गर्भ से अनिष्ट की सूचना देकर विनती कर पार्वती को गर्भधारण से वंचित कर दिया। तब कई विशिष्ट तत्वों के सहयोग से कार्तिकेय का जन्म हुआ। ऐसे पुत्र को देख माँ पार्वती ने अपने को गर्भसुख से वंचित रखनेवाले देवताओं को श्राप दे दिया कि तुम्हारी देवियाँ गर्भधारण करने की शक्ति से रहित हो जायें तथा जितनी गर्भवती हों, तो उनका गर्भस्राव हो जाय। यह शाप रावण के हड़कम्प से सत्य हुआ—

चलत दसानन डोलत धरनी।
गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी।

(३) असुर गर्भ—असुर वर्ग में प्रचण्ड बल तथा अविचार की प्रधानता है अतः वे किसी भी क्षेत्र में बलात्

अपना बीज वमन कर उसे हथिया लेते थे जैसे—

देव जच्छ गन्धर्व नर किन्नर नाग कुमारि।
जीति वरी निज बाहुबल बहु सुन्दर वर नारि॥

इस विलासिनी मण्डली से "सुनासीर सत सरिन सो संतज करइ विलास।"

इस कारण उनकी सन्ततियाँ भी आततायी हुईं। इनके अनाचरों से दुःखित होकर खीझती हुई मन्दोदरी कहती है—

छोटे ओ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब—
साँपिनि सों खेलैं मेलैं गरे छुरा धार सी।
खीझति मदोवै सविषाद देखि मेघनाद—
वयो लुनियत सब याही दाढ़ी जार सों॥ कवितावली

इस वर्ग के प्रचण्ड उद्दण्ड, लोगों को गर्भाधान पद्धति की अवहेलना कर मनमाने अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार, पापाचार का फल, कुलनाश रूप में चखने को मिला—

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी।
स्रवहिं गर्भ सुनि निसिचर नारी।

विषाद-ग्रस्त मंदोदरी रावण को यह दुख उत्पन्न करानेवाली सूचना देती है—

समुझत जासु दूत कै करनी।
स्रवहिं गर्भ रचनीचर परनी।

(४) मानव गर्भ—मानव वर्ग में वैदिक परम्परा का पालन प्राप्त होता है, जैसे—

भानु वंश भए भूप घनेरे। अधिक एक ते एक बड़ेरे।
जनम हेतु सब कह पितु माता।.......................।

इस संस्कार में गुरुजनों का सम्मिलित होकर आशीर्वाद देना तथा पिता का संस्कर्ता होना, उक्त दो अर्धालियों से स्पष्ट होता है—

(१) दलि दुख सजइ सकल कल्याना।
यस असीस राउरि जग जाना।
(२) जनम हेतु कहँ पितु माता।

यह पद्धति शास्त्रसम्मत है—गर्भाधानादि संस्कर्ता पिता श्रेष्ठ तमास्मृता। मनु०।

इस परम्परा में प्रमाद के प्रवेश करने पर भगवान् परशुराम को सुयोग्य शल्य चिकित्सक की तरह इक्कीस बार इन मानव आततायियों से पृथ्वी रहित करना पड़ा। इक्कीस बार निक्षत्र इसलिए किया कि मानव में पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पाँच-पाँच इनके विषय तथा एक मन हैं। जब तक यह इक्कीस पवित्र न हो जायें, तब तक पुनः प्रमाद होने की सम्भावना बनी रहेगी। अतः इक्कीसों का शेष किया। इतने पर भी भगवान् परशुराम में कितनी सतर्कता थी कि यदि इस पद्धति की अवहेलना कर गर्भाधान किया भी जाय, तो उन्हें भी टिकने नहीं देते थे।

गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर

क्योंकि ऐसे गर्भ-पिण्डों से अपने-पराये, देश-विदेश, सभी का सर्वनाश अनिवार्य था। ऐसे अनिष्ट मोचक को गोस्वामी जी ने वन्दना की है—

क्षत्रियाधीस करि निकर नव केसरी—
परसुधर विप्र सस जलदरूपं॥ वि० प०

(५) बानर गर्भ—रामायण कालीन बानर वर्ग में संस्कारों की शास्त्रीय परम्परा का स्रोत मिलता है जैसे—

लछिमन तुरत बोलाए पुरजन विप्र समाज।
राजदीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुवराज।

इस लक्षण से उनका गर्भाधान संस्कार शास्त्रीय रीति से होना अनुमान किया जा सकता है। इसकी पुष्टि अंजनी तथा तारा के गर्भ को देखकर होती है। अतः "फलेन परिचीयते" रावण का प्रचण्ड गर्जन जो देव-रमणियों के गर्भ नष्ट करने में समर्थ था वह अंजनी तथा तारा का गर्भ नष्ट करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। तभी तो उनकी माताएँ तथा विश्व आनन्दित हुआ—

जयत्यंजनी गर्भ अम्भोधि सम्भूत।
विधु विबुध कुल कैरवा नन्दकारी। वि० प०

अपनी इस असफलता पर झेंपता हुआ रावण भरी सभा में अंगद का प्रभाव देखकर खीझता हुआ बोला—

गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम्ह जायउ।
निज मुख तापस दूत कहायउ।

यह गर्भ सम्बन्धी पाँच वर्गों का वर्णन हुआ। पूर्व कथित पुत्रों को प्राप्त करने के लिए तदनुकूल नियम बताये गये हैं। पति-पत्नी को उन नियमों का निश्चित काल तक पालन करना पड़ता था। तब ऋतु स्नान से शुद्ध हुई पत्नी के समीप जाकर व्रत-समाप्ति कर पक्वान्न से अग्नि में सविधि आहुति देकर तदुपरान्त सहवास के हेतु पति-पत्नी को प्रस्तुत किया जाता था। पुनः वैदिक मंत्रों द्वारा पूजा (पोषण करनेवाले देवता) की स्तुति करते हुए पति गर्भाधान करता था। ऐसा न करने से सिनेमा के नट-नटियों के भ्रान्त स्वरूप तथा उनकी शोषक वृत्तियों का स्मरण करते हुए तथा गन्दे गीतों को गुनगुनाते हुए जब गर्भाधान होगा तब पाठक विचार करें 'जब बोये पेड़ बबूर के तब आम कहाँ ते होय।' याद रखें—शोषण देवों के स्मरणपूर्वक गर्भाधान होते ही माता-पिता शोषित हो अल्पायु हो जाते हैं। ऐसे लोगों की प्रशंसा करते हुए गोस्वामी जी कहते हैं—

लघु जीवन संवत पंच दसा—
कल्पान्त न तास गुमान असा।

गर्भाधान पद्धति से उत्पन्न पुत्रों से माता-पिता, गुरु, सम्बन्धी, देशवासी, सभी यशस्वी, समृद्धिशाली तथा कृत-कृत्य होते हैं। अन्य नगरों में चर्चा है—

(१) कौशिल्या सुत सो सुख खानी। राम नाम धनु सायक पानी।
सुनु सखि तासु सुमित्रा माता।

(२) सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम सम धन्य न कोउ।
राम लखन जिन्हके तनय विस्व विभूषन दोउ।

ऐसे पुत्र बड़े-बड़े धुरन्धर मनीषियों को कृत-कृत्य करने में समर्थ होते हैं। महाराज जनक, गुरुवर विश्वामित्र जी से कहते हैं—

मोहि कृत-कृत्य कीन्ह दोउ भाई।
अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं।

इस पद्धति से विपरीत उत्पन्न पुत्र, महान् वैज्ञानिक, महान् दार्शनिक, महा दिग्विजयी होने पर भी अपने कुल के तपः-

पूत मयंक सरीखे पुरुषों के मुख पर कलंक की कालिमा पोत ही देता है जो कभी भी नहीं मिटती, उससे बारम्बार क्या कहा जाय—

रिषि पुलस्ति जसु विमल मयंका।
तेहि ससि महु जनि होहिं कलंका॥

उसे यह विपरीत बात प्रतीत होती है। शास्त्रीय पद्धति से जब गर्भाधान होता है, तब कुलगुरु-बड़ों के द्वारा शुभकामना की जाती थी "दम्पत्ति शत शरद देखें" अर्थात् शतायु हों।

गर्भाधान कब हो :—इस पक्ष के दो पहलू हैं। क्रमशः दोनों पहलुओं पर विचार प्रस्तुत किया जाता है।

प्रथम पक्ष काल है :—गर्भाधान संस्कार पर्व-पर्वणियों (जैसे पूर्णिमा, संक्रान्ति, एकादशी, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, रामनवमी, नवरात्र तथा दीपावली आदि में न हो। क्योंकि पर्व-पर्वणियों में चन्द्रमा के आकर्षण के कारण पृथ्वी पर जल-तत्व का विशेष प्रभाव और शीतलता की वृद्धि हो जाती है। इससे पृथ्वी की स्थिति विकृत हो जाती है। जीव का जल-तत्व (वीर्य) ठंडा रहता है अर्थात् रोगी अवस्था में रहता है। अतः उन कालों में गर्भाधान करने से रोगी एवं अल्पायु सन्तति होती है। इसलिए गर्भाधान जैसे मूल कार्य को उन कालों में निषेध किया गया है।

द्वितीय पहलू है :—अत्यन्त बाला में गर्भाधान न करना। इस पक्ष पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों का निश्चय है—

ऊन षोडश वर्षायामप्राप्तः पंच विंशतिम्।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः सविपद्यते॥
जातो वा न चिरंजीवेद् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः।
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधानं न कारयेत्॥ सुश्रुत शरीरस्थान ॥१०।५६।६०

यदि पचीस वर्ष की आयु का मनुष्य सोलह वर्ष से कम आयु की स्त्री में गर्भाधान करे, तो वह गर्भ कोख में ही मर जाता है। यदि किसी प्रकार सन्तान उत्पन्न भी हो जाय, तो वह देर तक जीवित नहीं रहती। यदि जीवित रह भी जाय, तो वह सदा दुर्बल रहेगी। इसलिए इससे कम अवस्था की स्त्री में कभी गर्भाधान नहीं करना चाहिए।

गर्भाधान संस्कार से लाभ :—गर्भाधान संस्कार से चार बातें पैदा की जाती हैं—(१) भविष्य में होनेवाले बालक में पुरुषार्थ साधन (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की चाह हो। (२) उसमें उसका सामर्थ्य हो। (३) वह उन विषयों का जानकार हो। (४) उसमें इन तीनों गुणों के बाधक दोष न हों। बालक का तो अभी जन्म नहीं हुआ है, किन्तु माता-पिता के विधिवत् गर्भाधान संस्कार करने से भविष्य के बालक में चार बातें पैदा की जाती हैं। जिस प्रकार नवजात शिशु की चिकित्सा के लिए माता को दवा देते हैं और उस दवा का प्रभाव दूध के द्वारा बालक पर संक्रान्त होता है।

गर्भाधान विलुप्त होने के तीन कारण :—(१) संकोच (२) निर्लज्जता (३) सह-शिक्षा।

गर्भाधान संस्कार का प्रयोजन :—गर्भाधान अपने क्षेत्र का संस्कार है। एक बार इस संस्कार से संस्कृत कान्ता सर्वदा के लिए पवित्र हों, श्रेष्ठ रूप-शील-बल से संयुक्त संतति प्रसव करने में सक्षम होती है।

अन्त में, यह स्मरण रखना चाहिए। संस्कारहीन, देशद्रोही, पथभ्रष्ट, भ्रष्टाचारप्रिय, तस्कर, नपुंसक सन्ततियों की बाढ़ की अपेक्षास्वदेशभक्त, त्यागी, उदार, वीर, कवि, धुरन्धर विद्वान्, एक ही पुत्र से व्यक्ति पुत्रवान् और पितृऋण से मुक्त हो अपनी अभिलषित वस्तु को पा जाता है—

ज्येष्ठेण जात मात्रेण पुत्री भवति मानवः।
पितृणां अनृणश्चैव स तस्मात् सर्वमर्हति॥। मनुस्मृति।

ऐसे पुत्र से पुत्र का नाता मानने में पिता को गौरव की अनुभूति होगी। अतः इस संस्कार के महत्व को जानने तथा प्रयोग में लाने से ही आज की कठिन समस्या हल हो सकेगी।

॥ बोलो सियावर रामचन्द्र महाराज की जय॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्री गङ्गायै नमः ॥

रचयिता :—

कवि सम्राट् स्व० पं० श्री बलदेव मिश्र कपूरिया
(उपनाम—"मुन्शी गुरू")

दूर ते तरङ्गिनी की तरल तरंगे देखि, तन से महान सबै पातक जरिजात हैं।
नाम के लिये ते जाके कटत कुरोग घोर, जम की जमातन के गर्व गरि जात हैं॥
मुन्शीभने गंगासो दयाल ना त्रिलोक माँहि, पुन्य भुक्तियों के तनकुण्ड भरि जात हैं।
होय जात शिवको स्वरूप एक गोता लेत, सीढ़ी के छुयेते सात पीढ़ी तरि जात हैं॥

॥ शिवकेदाराष्टक ॥

व्याघ्र चर्म वसन हैं विभूति श्वेत लेपे अङ्ग, शीश पै विशाल जटा गङ्ग के धरन हैं।
पहिने नाग भूषण कपाल कर बीच राजे, गले मुण्डमाल दिव्य कुण्डल करन हैं॥
मुन्शीभनै शोभित है ललाट में मृगाङ्क अर्ध, भोरी हैं विचित्र काँख रक्त सो वरन हैं।
बूढ़े बैल ऊपर विराजमान लटकि रहे, मुक्ति के दिवैया शिवकेदार के चरन हैं॥

नीचे घाट बहे त्रिपथगा की तरंगे चारु, तापर है कुण्ड बीच वाली फर्स खासी में।
ऊपर है मंदिर विशाल चहुँ ओर गोल, प्राणी घण्ट सुनत न जावैं यम फाँसी में॥
मुन्शीभनैकेते जहाँ मरण समै धरना देत, ज्यादाकर पूजत बंगाली पुरवासी में।
धर्मराज आदि रहैं जिनकी खवासी बीच, मुक्ति के दिवैया खासे शिवकेदार काशी में॥

मंदिर में फाटक विशाल पूर्व पश्चिम दो, घहरं नगारे ध्वजा फहरै अकाशी में।
फेरी बीच घूमत नैऋत्य कोंण माँहि चारु, बद्रीनारायण और देव सब पासी में॥
मुन्शीभनै सन्मुख विराजमान नन्दीगण, द्वारपाल वीरभद्र ठाढ़े सुखरासी में।
छुटे चौरासी प्राणी होय पुण्यराशी मुक्ति, दाता वेदभाषी सोई शिवकेदार काशी में॥

हेरे मन मेरे तू न सोच करबार बार धीरज धरि सदा संतोष बीच रहिये।
यह है संसार सिन्धु इसको न पारावार, जाहि वक्त जैसा होय तैसा सब सहिये॥
मुन्शीभनै ज्ञान तरनी पै चढ़ि पार चहैं, भजन करि धरम खेवैया वेग लहिये।
अन्त पछितायगो सो एतो बात मेरी मान, होय के समाधी में शिवकेदार कहिये॥

गङ्गाधर सर्वेश्वर त्र्यम्बक त्रिशूल धारी, उमाकान्त दर्शन ते सवय सुख लहिये।
वामदेव शंकर कपर्दी उग्र नीलकण्ठ, श्री मशानवासी के हमेश चरण गहिये॥

मुन्शीभने मृत्युञ्जय व्योमकेश कृत्यवास, मुक्तेश्वर नाम ते अघोर पाप दहिये।
जटिलकपाली मुण्डमाली व्याघ्रछालीनाथ, विश्वनाथ भूतनाथ शिवकेदार कहिये।

चारों धाम तीरथ अनेक कई बार करे, तापै पञ्चंअग्नि को लगाय बहु नेरे पर।
बहुत काल कन्द फल खाके बिताये दिन, सनय निशंक करैं काटेदार घेरै पर॥
मुन्शीभनै साधें त्रिकाल जप पाठ ध्यान, केते लोग चाहैं मिल जाँय भजन टेरे पर।
लाखों उपाय करै कोऊ ना दिवैया क्योंकि, कोश मुक्ति को हैं शिवकेदार द्वार तेरे घर॥

बहुत दिनों से दरख्वास्त तो लगी है प्रभू; देखता हूँ होती है निगाह कब मेरे पर।
पूजा विधान जपतप ना जानू कछु; आपही दिखाई दिये डूब पैठ हेरे पर॥
मुन्शीभनै तबतो भरोसा दिल बीच भया; चाहूँ नहिं आना पड़े आवागमन फेरे पर।
लाखों तरेंगे, लाखों तरे जात पापी क्योंकि; कोष मुक्ति को है शिवकेदार द्वार तेरे पर॥

ध्यावत सुरेन्द्र ब्रह्म विष्णु सनकादि सिद्ध पावत न पार कोऊ चारों वेद हेरे पर।
काशीखण्ड शिवपुराण आदिक पुराणों में; व्यास ने कथ्यो वेस निज समूह चेरे पर॥
मुन्शीभने जोर कर नित्य प्रति पूछा करें; जो कि मतिमान बलवान बैल डेरे पर।
शास्त्र अब्धि मथि के सुनिश्चै कियो एही मै, कोषमुक्ति को है शिवकेदार द्वार तेरे पर॥

॥ दोहा ॥

शिव केदार अष्टक यहे, करै पाठ नित जोय।
संकट सब ताके कटे; अन्त स्वर्ग पद होय॥

कवि मुन्शी "गुरु" कृत शिवकेदाराष्टक सम्पूर्ण

श्रीविश्वेश्वराय नमः

मंदिर सब धोयं हौद माजके रजतको चारु, बाजै मृदंग और शहनाई गान नाथ की।
शीश पै प्रभूके चढ़त निर्मल सुगंगाजल, दुग्ध पञ्चामृत अनेक भाँति-भाँति की॥
मुन्शीभने अतर लगाय भस्म चंदन वेस, विल्वपत्र माला बहु तापे पारिजात की।
कंचन शेष छाय धूप आरती उतारै देखो, ता समै अनोखी बाँकी झाँकी विश्वनाथ की॥

*

सारस्वत समाज में...व्याप्त ?

दीपक कुमार भारद्वाज, बी० कॉम०

आज दहेज की आग में पूरा समाज जल रहा है। दहेज की प्रथा तो भारतवर्ष के प्रत्येक प्रदेश में किसी न किसी रूप में प्रचलित है लेकिन प्रसन्नता की बात है कि सारस्वत समाज में दहेज की माँग का प्रचलन नहीं था। अब समय यह आ गया है। दूसरे समाज द्वारा दहेज की माँग को देखकर हमारे समाज में दहेज-रूपी दानव ने अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिया है। यहाँ पर यह कहना गलत नहीं होगा कि दहेज माँगने के बहुत से नये प्रकार के तरीके अपनाये जा रहे हैं जिसका शिकार, समाज के कमजोर लोगों के लिये अभिशाप बन रहा है। शादी के सिलसिले में जाने पर लड़के के पिता बातचीत के दौरान कहते हैं कि मैंने अपनी लड़की की शादी में अमुक-अमुक चीजें दी थीं। एक सज्जन आये थे और अमुक-अमुक सामान देने की बातचीत कर रहे थे। कोई भाई कहता है कि मैंने अपनी बहिन की शादी में अमुक-अमुक चीजें दी थीं। यदि शादी की बातचीत चल रही है और इसी बीच में उसकी बहिन की शादी होती है, तो लड़की के पिता को बुलाता है और उसे दिखाता है कि हम अपनी बहिन की शादी में इतना सारा सामान दे रहे हैं अब सभी चीजों को दिखाने का साफ मतलब यह है कि हमें भी वही सभी चीजें चाहिये जिन्हें मैं अपनी बहिन की शादी में दे रहा हूँ और साथ ही साथ यह भी कहता है कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। सारस्वत समाज में, कुछ शहरों को छोड़कर जहाँ ठीक की प्रथा प्रचलित है, वहाँ पर यह कहा जाता है कि हम तीन ठीक चाहते हैं और एक ठीक की कितनी रकम होगी, यह साफतौर पर बता दी जाती है। जिसके लड़की होती है, उसकी बड़ी लाचारी होती है। न चाहते हुए भी उसे अपने को ठीक के लिये राजी होना पड़ता है क्योंकि लड़का योग्य है और अच्छी नौकरी में लगा हुआ है। समाज में जब भी कोई बुराई पैदा होती है, तो उसका कारण समाज के धनी लोग होते हैं क्योंकि पैसे की वजह से नये कार्य करते हैं जिसकी सजा दूसरों को भोगनी पड़ती है। हमारे समाज में सही माने में समाजवाद था। आज से करीब चालीस साल पहले तक, शादी तय होने पर टीके पर सवा रुपया नगद और एक नारियल भेजा जाता था। यहाँ पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इस नियम का पालन समाज के धनी लोगों ने कायम रखा था। लेकिन आज बात बिल्कुल बदल चुकी है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वार्थ देखता है। वह यह नहीं सोचता कि समाज के प्रति हमारी भी कोई जिम्मेदारी होती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जिसने समाज के लिये कुछ नहीं किया, उसका जन्म बेकार है। यदि हमें समाज में रहना है, तो हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि कोई ऐसा कार्य न करें जिससे समाज का अहित हो। सारस्वत समाज में कभी भी किसी ने यह नहीं पूछा कि शादी में क्या देंगे या कितनी की शादी करेंगे, लेकिन मौजूदा स्थिति इसके बिलकुल विपरीत है। मुझे याद है, शहर की बारात जब कन्या-पक्ष के यहाँ पहुँचती थी, तो उसका आदर-सत्कार पान से हुआ करता था और ज्यादातर लोग इस बात का ख्याल रखते थे कि कन्या पक्ष को कम से कम परेशानी के कारण बन सकें। लेकिन अब स्थिति बिलकुल बदल चुकी है। अब तो बाराती लोगों को नाश्ता कराना जरूरी हो गया है चाहे उसकी स्थिति हो या न हो। सारस्वत समाज के सन्मुख इस समय दो बातें विशेष रूप में अपना अधिकार जमा चुकी हैं—प्रथम दहेज द्वितीय बारात में नाचना। जहाँ तक दहेज के माँगने का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में मेरा अनुरोध है कि किसी भी प्रकार की माँग करना उचित नहीं है लड़की के पिता से। जहाँ तक उसकी हैसियत है, उससे अधिक वह अपनी लड़की को देता है, कोई भी पिता यह कभी नहीं सोचता कि हम शादी में अपनी लड़की को कुछ न देंगे, उसकी हमेशा यही अभिलाषा होती है कि

जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक दें इसका कारण यह है कि लड़की को शादी के समय एक ही बार देना होता है, जब कि लड़का तो हर समय लिया करता है। अब स्थिति तो यह है कि यदि लड़का एम.ए. पास है तो लड़की भी एम.ए. पास है और कानून की परिभाषा में भी दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं। शादी के सिलसिले में लड़के के पिता द्वारा जो दहेज की माँग की जाती है, तो उसके हिस्से में उस माँग में से कितना हिस्सा उसे प्राप्त हो सकता है। जो भी सामान मिलता है, उसका उपयोग लड़का और लड़की करेंगी फिर लड़के के पिता को इस प्रकार माँगने से क्या मिलता है ? मैंने अभी तक समझने की कोशिश की लेकिन समझ नहीं पाया। जब मेरे हिस्से में कुछ नहीं आना है; तो अपनी जबान से माँगने का औचित्य क्या है ? श्वसुर के नाते जो मिलता है, उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिये और माँगना उससे चाहिये जो संसार को देने के लिये अधिकृत है, न कि मनुष्य से। अब रही बारात के समय नाच की बात। यह प्रथा करीब बीस साल से दूसरे लोगों में प्रचलित थी। उसकी नकल हमारे समाज में आ गई है। किसी भी चीज की नकल करने के पहले यह जानना जरूरी है कि उससे क्या लाभ या हानि हो सकती है ? हमारे यहाँ घर की स्त्री को लक्ष्मी कहा गया है और उस लक्ष्मी को यदि बारात के समय सड़क पर नचाते हैं, तो क्या इसमें हमारी इज्जत बनती है या गिरती है ?. यह ठीक है कि शादी का मौका खुशी का होता है, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि हम अपनी इज्जत को सड़क पर बेचें। हर काम के लिये समय और स्थान होता है। नाचना जिसका पेशा है, यदि हम उससे कहें कि सड़क पर नाचना है, तो वह भी उसके लिये किसी प्रकार तैयार नहीं होगी। हमें, सबको मिलकर, समाज में व्याप्त उपरोक्त बुराइयों का निराकरण करना है।

"Pran-priya ...
love of my heart.
Bring me another VIJAYLENE Saree.
Like the beautiful one
you brought last time.
The one I'm wearing
while I'm writing this prem-patra ..."
vijaylene
SAREES
...a woman's
second love,
naturally
VIJAY
SYNTHETICS
SUITINGS • SHIRTINGS
SAREES
VIJAY SYNTHETIC PRINTS PVT. LTD.
BOMBAY 400 072

श्री सारस्वत सभा, काशी के प्रधान मंत्री श्रीलक्ष्मी नारायण भारद्वाज, एडवोकेट द्वारा प्रकाशित एवं
श्री विश्वनाथ दत्त द्वारा दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०, गोदौलिया, वाराणसी से मुद्रित ।